



बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

स्व-अधिगम सामग्री

**SECD-03**

**First Year**

न्यूरो विकास विकलांगता का परिचय

(Introduction to Neuro Development Disabilities)

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

बी.एड. स्पेशल (मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा)

स्व-अधिगम सामग्री



**SECD-03**

**First Year**

**न्यूरो विकास विकलांगता का परिचय**

**(Introduction to Neuro Development**

**Disabilities)**

**मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,**

**भोपाल (म.प्र.)**

संरक्षक  
डॉ० रवीन्द्र कान्हेरे  
कुलपति

मार्गदर्शन  
श्री अरुण सिंह चौहान  
कुलसचिव

## संपादक मण्डल

संयोजक  
डॉ० वर्षा सागोरकर  
निदेशक, बहुमाध्यमीय शिक्षा विभाग

समन्वयक व सलाहकार  
डॉ० हेमलता दिनकर  
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

समन्वयक  
डॉ० कंचन जिज्ञासी  
रीडर (शिक्षा)

समन्वयक  
डॉ० सालेहा सिद्दीकी  
लेक्चरर (शिक्षा)

# अनुक्रमणिका

|        |  |         |
|--------|--|---------|
| इकाई-1 | सीखने की अक्षमता: प्रकृति, आवश्यकता एवं हस्तक्षेप              | 5-74    |
| इकाई-2 | बौद्धिक अक्षमता : प्रकृति, आवश्यकता एवं हस्तक्षेप              | 75-156  |
| इकाई-3 | स्वलीनता आत्मकेन्द्रित बाधिता: प्रकृति, आवश्यकता तथा हस्तक्षेप | 157-176 |



# सीखने की अक्षमता: प्रकृति, आवश्यकता एवं हस्तक्षेप

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उददेश्य।
- प्राक्कथन।
- अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं परिभाषा
- अधिगम अक्षमता की प्रकृति एवं विशेषताएं।
- अधिगम अक्षम बालकों की पहचान
- अधिगम अक्षम बालक द्वारा प्रदर्शित लक्षण
- पहचान की विधि
- पहचान में दोष या त्रुटि
- अधिगम अक्षम बालकों का प्रतिस्थापन
- अधिगम अक्षम बालकों की देखभाल एवं उनका प्रशिक्षण
- आकलन के उपकरण तथा क्षेत्र।
- अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण।
- अधिगम अक्षमता तथा अन्य विकलांगता।
- पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनुकूलन।
- व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना [I E P]
- प्रबंधकीय तथा जीवनपर्यन्त शिक्षा।
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा
- 'लेबिलिंग' के लाभ और हानियां
- समावेषी शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास (अधिगम अक्षमता का संदर्भ)
- विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा, एवं समावेषी शिक्षा में अंतर
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेषी शिक्षा में विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की सामाजिक भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेषी शिक्षा में सामान्य शिक्षक की भूमिका
- सामान्य शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका
- सामान्य शिक्षक की सामाजिक भूमिका
- सामान्य शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ
- परीक्षापयोगी प्रश्न।

## NOTES

### उद्देश्य-

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे-

- अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं परिभाषा
- अधिगम अक्षमता की प्रकृति एवं विशेषताएं।
- अधिगम अक्षम बालकों की पहचान
- अधिगम अक्षम बालक द्वारा प्रदर्शित लक्षण
- पहचान की विधि
- पहचान में दोष या त्रुटि
- अधिगम अक्षम बालकों का प्रतिस्थापन
- अधिगम अक्षम बालकों की देखभाल एवं उनका प्रशिक्षण
- आकलन के उपकरण तथा क्षेत्र।
- अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण।
- अधिगम अक्षमता तथा अन्य विकलांगता।
- पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनुकूलन।
- व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना खू म च,
- प्रबंधकीय तथा जीवनपर्यन्त शिक्षा।
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा
- 'लेबिलिंग' के लाभ और हानियां
- समावेशी शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास (अधिगम अक्षमता का संदर्भ)
- विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा, एवं समावेशी शिक्षा में अंतर
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा में विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की सामाजिक भूमिका
- विशेषज्ञ शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ
- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा में सामान्य शिक्षक की भूमिका
- सामान्य शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका
- सामान्य शिक्षक की सामाजिक भूमिका
- सामान्य शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ

## प्राक्कथन

वर्तमान इकाई में आप अधिगम अक्षमता वाले बालकों की समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करेंगे। इकाई के आरंभ में आप विकलांगता/अक्षमता के प्रति विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करेंगे। इसमें हम मुख्य रूप से अक्षमता के अध्ययन का चिकित्सकीय दृष्टिकोण तथा सामाजिक दृष्टिकोण एवं उनकी मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे तत्पश्चात् “विकलांगता” का “लेवल” लगने के किसी व्यक्ति के जीवन पर अधिगम अक्षमतायुक्त बालकों की शिक्षा के ऐतिहासिक विकास पर एक दृष्टिपात करेंगे।

## NOTES

### Definition, Types and Characteristics-

#### अधिगम अक्षमता: एक परिचय

#### अधिगम अक्षमता का अर्थ और परिभाषा

“अधिगम अक्षमता” पद दो भिन्न-भिन्न पदों “अधिगम” और “अक्षमता” से मिलकर बना है। अधिगम शब्द का अर्थ “सीखने” से है तथा “अक्षमता” का तात्पर्य “क्षमता के अभाव” या “क्षमता की अनुपस्थिति” से है। अर्थात् सामान्य भाषा में “अधिगम अक्षमता” का अर्थ “सीखने की क्षमता अथवा योग्यता” की कमी या अनुपस्थिति से है। सीखने में कठिनाइयों को समझने के लिए हमें एक बालक की सीखने की क्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करना चाहिए। प्रभावी अधिगम के लिए मजबूत अभिप्रेरण, सकारात्मक आत्म छवि तथा उचित अध्ययन प्रथाएँ तथा रणनीतियाँ आवश्यक शर्तें हैं (एरो, जेरे-फोलोटिया, हेन्गारी, कारिडकी तथा म्कानडावायर, 2011)। औपचारिक शब्दों में, “अधिगम अक्षमता” को “विद्यालयी पाठ्यक्रम” सीखने की क्षमता की कमी अथवा अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

“अधिगम अक्षमता” पद का सर्वप्रथम प्रयोग 1963ई. में सैमुअल किर्क द्वारा किया गया था और इसे निम्न शब्दों में परिभाषित किया था-

अधिगम अक्षमता को वाक्, भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से किसी एक अथवा अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति या अवरूढ़ विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो संभवतः मस्तिष्क



## NOTES

कार्यविरूपता और/या संवेगात्मक अथवा व्यावहारिक विक्षोभ का फल है न कि मानसिक मंदता, संवेदी अक्षमता अथवा सांस्कृतिक या अनुदेशन कारक का। (किर्क, 1963)

इसके पश्चात से अधिगम अक्षमता को परिभाषित करने के लिए विद्वानों द्वारा लगातार प्रयास किए गए, परन्तु कोई सर्वमान्य परिभाषा विकसित नहीं हो पाई।

अमेरिका में विकसित फेडरल परिभाषा के अनुसार, “विशिष्ट अधिगम अक्षमता को, लिखित एवं मौखिक भाषा के प्रयोग एवं समझने में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति, जो व्यक्ति के सोच, वाक्, पठन, लेखन, तथा अंकगणितीय गणना को पूर्ण या आंशिक रूप से प्रभावित करता है, के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत इन्द्रियजनित विकलांगता, मस्तिष्क क्षति, अल्पतम असामान्य दिमागी प्रक्रिया, डिस्लेक्सिया, एवं विकासात्मक वाच्चाघात आदि सम्मिलित है। इसके अंतर्गत जैसे बालक नहीं शामिल हैं, जो दृष्टि, श्रवण या गामक विकलांगता, संवेगात्मक विक्षोभ, मानसिक मंदता, सांस्कृतिक आर्थिक दोष के परिणामतः अधिगम संबंधी समस्या से पीडित है।” (फेडरल रजिस्टर, 1977)

वर्ष 1994 में अमेरिकी की अधिगमक अक्षमता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति (द नेशनल ज्वायंट कमीटी ऑन लर्निंग डिसएबिलिटीज्ज) ने अधिगम अक्षमता को परिभाषित करते हुए कहा कि “अधिगम अक्षमता एक सामान्य पद है, जो मनुष्य में अनुमानतः केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारू रूप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न आंतरिक विकृतियों के विषम समूह, जिसमें की बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने तर्क करने अथवा गणितीय क्षमता के प्रयोग में कठिनाई सम्मिलित है, को दर्शाता है। जीवन के किसी भी पड़ाव पर यह उत्पन्न हो सकता है। हालांकि अधिगम अक्षमता अन्य प्रकार की अक्षमताओं (जैसे कि संवेदी अक्षमता, मानसिक मंदता, गंभीर संवेगात्मक विक्षोभ) अथवा सांस्कृतिक भिन्नता, अनुपयुक्ता या अपर्याप्त अनुदेशन के प्रभाव के कारण होता है। किंतु ये दशाएँ अधिगम अक्षमता को प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करती है” (द नेशनल ज्वायंट कमीटी ऑन लर्निंग डिसएबिलिटीज्ज-1994)

उपयुक्त परिभाषाओं की समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम अक्षमता एक व्यापक संप्रत्यय हैं, जिसके अंतर्गत वाक्, भाषा,

पठन, लेखन, तथा अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से एक या अधिक के प्रयोग में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति को सम्मिलित किया जाता है, जो अनुमानतः केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारू रूप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न होता है। यह स्वभाव से अंदरूनी होता है।

## NOTES

### ऐतिहासिक परिदृश्य

अधिगम अक्षमता के इतिहास पर दृष्टि डालने पर आप पाएँगे कि इस पद ने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण करने के लिए एक लंबा सफर तय किया है। इस पद का सर्वप्रथम प्रयोग 1963 ई. में सैमुअल किर्क ने किया था। यही पद आज सार्वभौम एवं सर्वमान्य है। इसके पूर्व विद्वानों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र के आधार पर अनेक नामकरण किए थे। जैसे- न्यूनतम मस्तिष्क क्षतिग्रस्तता (औषधि विज्ञानियों अथवा चिकित्सा विज्ञानियों द्वारा), मनोस्नायुजनित विकलांगता (मनोवैज्ञानिकों+स्नायुवैज्ञानिकों द्वारा अतिक्रियाशीलता (मनोवैज्ञानिकों द्वारा), न्यूनतम उपलब्धता (शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा) आदि।

रेड्डी, रमार तथा कुशामा (2003) ने अधिगम अक्षमता के क्षेत्र के विकास को तीन निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है-

- प्रारम्भिक (Foundation) काल
- रूपान्तरण (Transition) काल
- स्थापन (Recognition) काल

**प्रारम्भिक काल-** यह काल अधिगम अक्षमता के उदभव से सम्बन्धित है। वर्ष 1802 से 1946 के मध्य का यह काल अधिगम अक्षमता के लिए कार्यकारी साबित हुआ। अधिगम अक्षमता प्रत्यय की पहचान एवं विकास इसी समय से प्रारम्भ हुई तथा उनकी पहचान तथा उपयुक्त निराकरण हेतु कोशिश की जाने लगी।

**रूपान्तरण काल-** यह काल अधिगम अक्षमता के क्षेत्र में एक नये रूपान्तरण का काल के रूप में जाना जाता है। जब अधिगम अक्षमता एक विशेष अक्षमता के रूप में स्थापित हुई और जब अधिगम अक्षमता प्रत्यय का उद्भव हुआ, इन दोनों के मध्य का संक्रमण का समय ही रूपान्तरण काल से सम्बन्धित है।

## NOTES

**स्थापन काल-** 60 के दशक के मध्य में अधिगम अक्षमता से सम्बन्धित कठिनाईयों को सामूहिक रूप से पहचान की प्राप्ति हुई। इस काल में ही सैमुअल किर्क ने 1963 में अधिगम अक्षमता (स्मंटदपदह क्पेइपसपजल) शब्द को प्रतिपादित किया। 60 के दशक के बाद इस क्षेत्र में कई विकासात्मक कार्य किए गये और विशेष शिक्षा में अधिगम अक्षमता एक बड़े अपक्षेत्र के रूप में प्रतिस्थापित हुई।

क्रुकशैक ने 1972में 40 शब्दों का एक शब्दकोष विकसित किया। इसी क्रम में यदि आप कुर्त गोल स्टिन द्वारा 1927 ई0 1936 ई0 एवं 1939 ई0 में किए गए कार्यों का मूल्यांकन करें तो आप पाएँगे कि उनके द्वारा वैसे मस्तिष्कीय क्षतिग्रस्त सैनिकों जो प्रथम विश्वयुद्ध में कार्यरत थे की अधिगम समस्याओं का जो उल्लेख किया गया है, वहीं अधिगम अक्षमता का आधार स्तम्भ हैं, उनके अनुसार "ऐसे लोगों से अनुक्रिया प्राप्त करने में अधिक प्रत्यन करना पड़ता है। इनमें आकृति पृष्ठभूमि बहम बना रहता है, ये अतिक्रियाशील होते हैं तथा इनकी क्रियाएँ उत्तेजनात्मक होती हैं।" सट्रॉस (1939) ने अपने अध्ययन में कुछ लक्षण बताए थे जो मूलतः अधिगम अक्षम बाल्यवस्था एवं किशोरी में मिलते हैं। क्रुकशैक, वाइस और वैलेन (1957) ने अपने अधिगम अक्षमता संबंधी अध्ययन में केवल वैसे बालकों पर जोर दिया जो बुद्धिलब्धि परीक्षण पर सामान्य से कम बुद्धिलब्धि रखते थे। उन्होंने कहा कि यदि किसी बालक की बुद्धिलब्धि न्यून है और साथ ही न्यूनतम शैक्षिक योग्यता हासिल करता है तो उसकी शैक्षिक योग्यता की न्यूनता का कारण बुद्धिलब्धि की न्यूनता ही है। इन अध्ययनों को सैमुअल किर्क ने अपने अध्ययन का आधार बनाया और कहा कि अधिगम अक्षमता केवल शैक्षिक न्यूनता नहीं है। यह न्यूनतम मस्तिष्कीय क्षतिग्रस्तता, पढ़ने की दक्षता में समस्या अतिक्रियाशीलता आदि जैसे गुणों का समूह है। उन्होंने यह भी कहा जो बालक इन समस्त गुणों से संयुक्त रूप से पीड़ित हैं, वो अधिगम अक्षम बालक है। शैक्षिक न्यून बालकों के संबंध में अपने मत को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि अधिगम अक्षम बालक शैक्षिक न्यूनता से पीड़ित होगा और यह न्यूनता उसके आंतरिक एवं बाह्य दशाओं के परिणाम के कारण ही नहीं लेकिन उसमें उपलब्ध न्यूनतम शैक्षिक दशाओं के कारण भी संभव हैं। सैमुअल किर्क ने इस काम को और प्रसारित करने के लिए अधिगम अक्षमता अध्ययनकर्ताओं का एक संघ बनाया जिसे "एसोसिएशन फॉर चिल्ड्रेन विद लर्निंग सएबिलिटी" कहा गया और अधिगम अक्षमता शोध पत्रिका का प्रारंभ किया। आज विश्व स्तर पर अधिगम अक्षमता संबंधी अध्ययन किए जा रहे हैं तथा अधिगम अक्षमता पर आधारित दो विश्वस्तरीय

शोध पत्रिकाएँ शामिल हैं जो किए जा रहे अध्ययनों का प्रचार-प्रसार करने में अपनी भूमिका निभा रही है।

भारत में इस संबंध में कार्य शुरू हुए अभी बहुत कम समय हुआ है और आज यह पश्चिमी देशों में अधिगम अक्षमता संबंधी हो रहे कर्मों के तुलनीय हैं। भारत वर्ष में अधिगम अक्षम बालकों की पहचान विदेशियों द्वारा की गई बल्कि धीरे-धीरे भारतीयों में भी जागरूकता बढ़ रही हैं। वर्तमान में भारत में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ इस क्षेत्र में कार्यरत हैं। लेकिन, आज भी अधिगम अक्षमता को भारत में कानूनी विकलांगता के रूप में पहचान नहीं मिली है। निःशक्त जन (समान अवसर, अधिकार संरक्षण, और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 में उल्लेखित है सात प्रकार की विकलांगता में यह सम्मिलित नहीं है। ज्ञात हो कि यही अधिनियम भारतवर्ष में विकलांगता के क्षेत्र में सबसे वृहद कानून है। अर्थात् भारत में अधिगम अक्षम बालक को कानूनी रूप से विशेष सेवा पाने का आधार नहीं है।

### अधिगम अक्षमता की प्रकृति तथा विशेषताएँ

अधिगम संबंधी कठिनाई, श्रवण, दृष्टि, स्वास्थ्य, वाक् एवं संवेग आदि से संबंधित अस्थायी समस्याओं से जुड़ी होती हैं। समस्या का समाधान होते ही अधिगम संबंधी वह कठिनाई समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत अधिगम अक्षमता उस स्थिति को कहते हैं जहाँ मनुष्य की योग्यता एवं उपलब्धि में एक स्पष्ट अंतर हो। यह अंतर संभवतः स्नायुजनित होता है तथा यह व्यक्ति विशेष में आजीवन उपस्थित रहता है।

क्योंकि अधिगम अक्षमता को कानूनी मन्यता प्राप्त नहीं है और जनगणना में अधिगम अक्षमता को आधार नहीं बनाया जाता है। इसलिए देश में मौजूद अधिगम अक्षम बालकों के संबंध में ठीक-ठीक आँकड़ा प्रदान करना तो अधिक मुश्किल है लेकिन एक अनुमान के अनुसार यह कहा जा सकता है कि देश में इस प्रकार के बालकों की संख्या अन्य प्रकार के विकलांग बालकों की संख्या से कहीं अधिक है। यह संख्या, देश में उपलब्ध कुल स्कूली जनसंख्या के 1.41 प्रतिशत तक ही सकता है। सन् 2012 में चेन्नई में समावेशी शिक्षा एवं व्यावसायिक विकल्प विषय पर सम्पन्न हुए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "लर्न 2012" में विशेषज्ञों ने कहा कि भारत में लगभग 10८ बालक अधिगम अक्षम हैं। (टाइम्स आफ इंडिया, जनवरी 27, 2012).

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

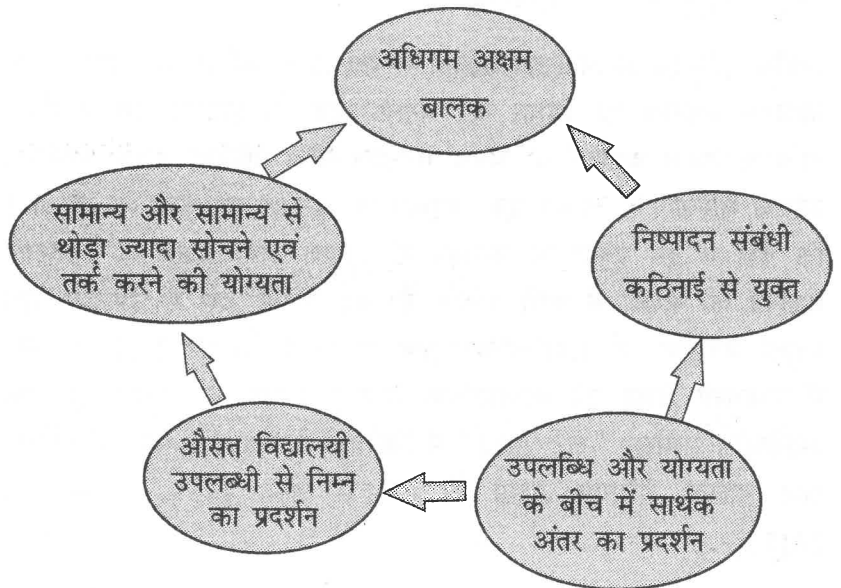
### NOTES

## NOTES

अधिगम अक्षमता की विभिन्न मान्यताओं पर दृष्टिपात करने से अधिगम अक्षमता की प्रकृति के संबंध में आपको निम्नलिखित बातें दृष्टिगोचर होंगी:

1. अधिगम अक्षमता भीतरी होती है;
2. यह स्थायी स्वरूप का होता है अर्थात् यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहत है;
3. यह कोई एक विकृति नहीं लेकिन विकृतियों का एक विषम समूह है;
4. इस समस्या से ग्रसित व्यक्तियों में कई प्रकार के व्यवहार तथा विशेषताएँ पाई जाती है;
5. चूँकि यह समस्या केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यविरूपता से संबंधित हैं, अतः यह एक जैविक समस्या है;
6. यह अन्य प्रकार की विकृतियों के साथ हो सकता हैं, जैसे-अधिगम अक्षमता और संवेगात्मक विक्षोभ; तथा
7. यह श्रवण, सोच, वाक्, पठन, लेखन तथा अंकगणितीय गणना में सम्मिलित मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति के तथा परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है, अतः यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

अधिगम अक्षमता के प्रकृति को चित्र संख्या एक के माध्यम से समझा जा सकता है:



अधिगम अक्षमता के लक्षण को आप अधिगम अक्षम बालकों की विशेषताओं के संदर्भ में समझ सकते हैं। उपयुक्त मुख्य लक्षणों के अलावा कुछ अन्य लक्षण भी प्रदर्शित कर सकते हैं, जो निम्न हैं:

- बिना सोचे-विचारे कार्य करना;
- उपयुक्त आचरण नहीं करना;
- निर्णयात्मक क्षमता का अभाव;
- खुद के प्रति लापरवाही;
- लक्ष्य से आसानी से विचलित होना;
- सामान्य ध्वनियों एवं दृश्यों के प्रति आकर्षण;
- ध्यान कम केन्द्रित करना अथवा ध्यान का भटकाव;
- भावत्मक अस्थिरता;
- एक ही स्थिति में शांत एवं स्थिर रहने की असमर्थता;
- स्वप्रगति के प्रति लापरवाही बरतना;
- सामान्य से ज्यादा सक्रियता;
- गामक क्रियाओं में बाधा;
- कार्य करने की मंद गति;
- सामान्य कार्य को संपादित करने के लिए भी एक से अधिक बार कोशिश करना;
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सम्मिलित नहीं होना;
- कमजोर स्मरण शक्ति का होना;
- बिना वाह्य हस्तक्षेप के अन्य गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ होना; और
- प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी दोष।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं

## NOTES

## NOTES

### अधिगम अक्षम बालकों की पहचान

प्रारंभिक चरण में अधिगम अक्षमता की पहचान करना अत्यन्त कठिन है क्योंकि इसके लिए वास्तविक व्यवहार एवं अपेक्षित व्यवहार में महत्वपूर्ण अन्तर होना अत्यन्त आवश्यक है। अधिगम अक्षमता की पहचान जितनी देर से होगी उसका निदान उतना ही कठिन होता जाता है तथा किशोरावस्था में गलत प्रवृत्तियों का शिकार होने की उनकी सम्भावना बढ़ जाती है। इसकी पहचान प्रारम्भिक स्तर पर बालकों के व्यवहार द्वारा की जाती है। लगभग पूरा दिन छात्रों के साथ व्यतीत कर के उसका निरीक्षण करने के कारण शिक्षक अधिगम अक्षमता की पहचान के लिए ज्यादा उपयुक्त होता है। पूर्व चिह्नित अक्षमताओं के आधार पर शिक्षक छात्र की सम्भाव्य अधिगम अक्षमता की जानकारी प्राप्त कर पाता है।

### अधिगम अक्षम बालक द्वारा प्रदर्शित लक्षण

अधिगम अक्षमता एक इस प्रकार की विकलांगता है, जिसमें अधिकांश श्रेणी, तीव्रता तथा क्षेत्र वाली समस्या सम्मिलित होती हैं। ये समस्याएँ स्वतंत्र रूप से या समूह में किसी अधिगम अक्षम बालक में प्रकट हो सकती हैं। अधिगम अक्षम बालक में निम्नलिखित व्यवहारगत लक्षण पाए जाते हैं, जिन्हें समझ कर इस प्रकार के बालकों की शीघ्र पहचान की जा सकती है:

- **बुद्धि-** सामान्यतः अधिगम अक्षम छात्र सामान्य या उससे अधिक बौद्धिक स्तर के हो सकते हैं तथा कुछ छात्र विशेष प्रतिभा के भी होते हैं।
- **प्रत्यक्षीकरण एवं गामक क्षमता-** स्पष्ट हैं कि प्रत्यक्षीकरण का सम्बन्ध अर्थपूर्ण संवेदना से है। प्रायः अधिगम अक्षम बालकों को प्रत्यक्षीकरण में समस्या उत्पन्न होती है। इसलिए वे विभिन्न ध्वनियों एवं दृश्यों में विभेदीकरण और उद्दीपकों को यथा स्थान पर रख कर प्रत्यक्षीकरण में कठिनाई महसूस करते हैं। ऐसे बालक विभिन्न उद्दीपकों पर भी समान प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इन्हें ध्यान केन्द्रीकरण एवं संवेग सम्बन्धी समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है। ऐसे बालकों में दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक स्मृति सम्बन्धी समस्याएँ होती हैं, जो सोच एवं प्रत्यास्मरण आधारित होती हैं। उन्हें स्वयं अपने द्वारा किए कार्यों के नियन्त्रण में भी कठिनाई होती है। अन्य बालकों की अपेक्षा

समायोजन, वर्गीकरण एवं व्यवस्थित करने का कौशल भी उनमें कम पाया जाता है।

अधिगम अक्षमता से इनकी गामक क्षमताएँ प्रभावित होती है। ऐसे बालकों की लिखावट भी सामान्यतः अच्छी नहीं होती है, साथ ही उन्हें विभिन्न चित्रों की पहचान एवं वर्गीकरण में भी कठिनाई होती है।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

- **पराबौद्धिक (Metacognition) कौशल-** पराबौद्धिक कौशल कार्य के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करता है। पराबौद्धिक कौशल में किसी भी कार्य को प्रभावकारी ढंग से करने के लिए प्रयुक्त होने वाले कौशल, कार्ययोजना तथा उपयोगी संसाधन का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसमें स्व-नियन्त्रित तंत्रों की आवश्यकता होती है। इनमें व्यावसायिक गतिविधियां, कार्यरत योजना के प्रभाव का मूल्यांकन, प्रयत्नों के परिणाम का परीक्षण तथा समस्याओं का समाधान सम्मिलित हैं।
- **व्यवहारगत एवं भावनात्मक गुण-** अधिगम अक्षम बालक या तो अतिक्रियाशील होते हैं या कम क्रियाशील होते हैं। ऐसे बालकों के व्यवहार में प्रायः शीघ्र विचलन, अल्प ध्यान केन्द्रीकरण स्मृतिदोष, अतिसंवेग, अतितीव्र एवं असमान्य भावपूर्ण प्रतिक्रिया सम्मिलित होती है। ऐसे बालकों को सामाजिक समायोजन में अधिक समस्या होती है, क्योंकि प्रायः संवेगों के प्रभाव में वे सामाजिक मूल्यों एवं सीमाओं का उल्लंघन करते हैं। ऐसे बालक स्वयं के व्यवहार हेतु प्रभाव का आकलन नहीं कर पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप उन्हें दूसरों से सदैव नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त होती है और समाज में वे अवांछित हो जाते हैं। दूसरों से प्रभावपूर्ण अन्तःक्रिया में अक्षमता से उनमें आत्मसम्मान का अभाव हो सकता है। ऐसे बालकों के दुर्व्यवहार का कारण उनका अवसाद एवं हताशा है, जो अधिगम अक्षमजन्य होती है। अधिकांश शोध के आँकड़े ये दर्शाते हैं कि ऐसे बालकों की सामाजिक स्वीकारात्मकता कम होती है। फिर भी समाज में कुछ ऐसे अधिगम अक्षम बालकों के भी उदाहरण मिलते हैं, जो अपने वर्ग, विद्यालय और समूह में प्रसिद्ध हुए हैं।
- **पाठ्य अधिगम क्षमता-** अधिगम अक्षम बालक प्रायः अपने वर्ग के अन्य छात्रों की अपेक्षा पठन-पाठन, अर्थबोध, भाषाप्रवाह एवं उच्चारण



## NOTES

आदि क्षेत्रों में पीछे छूट जाते हैं। सामान्यतः ऐसे छात्र ध्वनियों वर्णों एवं संख्याओं के विपरीत अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। यह समस्याएँ अन्त में श्रवण एवं वाचन सम्बन्धी समस्याओं को और गंभीर बना देती है।

- **संप्रेषणीय क्षमता-** अधिगम अक्षम बालकों को ध्वनियों को उच्चारित करने में समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसे बालक ध्वनियों की पुनर्वावृत्ति एवं हकलाहट से ग्रसित होते हैं। इन्हें भाषा के वास्तविक स्वरूप को सामाजिक प्रयोग हेतु रूपान्तरित करने में समस्या होती है। यह समस्या अर्थपूर्ण संप्रेषण हेतु उचित शब्दों के चयन के रूप में प्रदर्शित होती है।
- **स्मृति एवं विचारगत क्षमता-** प्रायः ऐसे छात्रों को शब्दों एवं ध्वनियों को (जो शब्दों का निर्माण करती हैं) याद करने में कठिनाई हो सकती है। इन्हें अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक स्तर पर शब्दों का अर्थ प्रत्यास्मरण में समस्या उत्पन्न होती है। इनकी यह अक्षमता या तो उनके स्मृति दोष के कारण होती है अथवा इनकी दीर्घकालिक स्मृति सम्बन्धित सूचनाओं के प्रत्यास्मरण सम्बन्धी समस्याओं के कारण हो सकती हैं।
- **विशिष्ट शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धित विशेषताएँ-** ऐसे बालक अलग-अलग, विशिष्ट शैक्षिक क्षेत्रों में उपलब्धि सम्बन्धी कमी प्रदर्शित करते हैं। इन विद्यालयी सम्बन्धी विशिष्ट उपलब्धियों में समस्याएँ निम्न रूपों में दिखाई देती हैं:

### लेखन-पाठन सम्बन्धी-

- पठन सम्बन्धी अक्षमताओं से पठन कार्य में आत्मविश्वास की कमी प्रदर्शित होती हैं।
- पठन सम्बन्धी कार्यों के समय शारीरिक असहजता प्रदर्शित करते हैं।
- कुछ शब्दों को स्वयं ही छोड़ते और जोड़ते चले जाते हैं
- वैकल्पिक शब्दों का प्रयोग करते हैं
- विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग करते हैं
- बोध एवं प्रवाह सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं

## गणितीय अधिगम सम्बन्धी -

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

- गामक अक्षमता, संख्याओं द्वारा लेखन सम्बन्धी कमी प्रदर्शित होती है।
- बहुचरणीय गणितीय प्रश्नों को हल करने में समस्या होती है
- भाषा में प्रयुक्त बहुअर्थीय शब्दों के प्रासंगिक अर्थबोध में समस्या पैदा होती है
- शब्दों एवं चिन्हों द्वारा सम्बन्धित अमूर्त तार्किक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

## NOTES

### पहचान की विधि

वर्ट्स, कलाटा एवं टाम्पकिन्स (2007) वे अधिगम अक्षम बालकों के पहचान हेतु दो विधियों का वर्णन किया हैं, जो निम्नलिखित हैं:

**विभेद विधि-** अधिगम अक्षम बालकों की पहचान हेतु उनकी अभिवृत्तियों में अपेक्षित अन्तर को सुनिश्चित करने की विधि प्रयोग में लायी जाती है। सामान्यतः यह विधि अमेरिका में अपनाई जाती है, जिसके अन्तर्गत संघीय एवं प्रान्तीय विधायिका संभावित अधिगम अक्षम बालकों की पहचान एवं मूल्यांकन के लिए बल देती हैं। इसके अन्तर्गत विधालय में वर्ग शिक्षक, मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सक आदि लोगों का एक मूल्यांकन समूह होना चाहिए। यह दल बालकों की बौद्धिक योग्यता एवं उम्र के अनुरूप उनकी शैक्षिक योग्यता मूल्यांकन करता है। यदि बालकों में लेखन, श्रवण, मौखिक अभिव्यक्ति, भाषायी प्रक्रिया, प्रारम्भिक पठन कौशल, पठन बोध, गणितीय तर्क व गणना आदि क्षेत्रों के अन्तर्गत बौद्धिक योग्यता और उपलब्धि सम्बन्धी अन्तर पाया जाता है। लेकिन यदि बालक में पर्यावरण, संस्कृति, आर्थिक परिस्थिति अथवा किसी अन्य विकलांगता के कारण अन्तर पाया जाता है, तो ऐसे बालकों को अधिगम अक्षम नहीं माना जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में पता लगाने के लिए विविध जाँच पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। जब बालक शैक्षिक और व्यवहारिक अपेक्षाओं के अनुरूप परिणाम नहीं देते तब ऐसे बालक, शिक्षक की नजर में आ जाता है जिन्हें उनके अविभावकों की स्वीकृति के उपरान्त एक जाच प्रक्रिया में डाल दिया जाता है। शिक्षकों द्वारा निर्मित जाँच प्रक्रिया एवं पाठ्यक्रम आधारित विधि के आधार पर उनके

## NOTES

शैक्षिक उपलब्धि की सीमा का निर्धारण किया जाता है। मानक बौद्धिक जाँच (व्यक्तिगत) द्वारा किसी बालक की बौद्धिक योग्यता का पता लगाया जाता है जबकि विशेष क्षेत्र के अन्तर्गत उनके प्रदर्शन के परीक्षण हेतु प्रायः हेतु प्राप्त निष्कर्ष का संदर्भित परीक्षण में प्रयोग किया जाता है।

**व्यवधान प्रतिक्रिया विधि-** विभेद द्वारा अधिगम अक्षम बालकों की पहचान में कभी-कभी व्यवधान हो सकता है। इसलिए उनकी पहचान के लिए व्यवधान प्रतिक्रिया विधि को प्रयोग किया जाता है। प्रारम्भिक चरण में अच्छे निदेशन के अभाव में बालक को हो रही समस्याओं का पता लगाना होता है। इसमें शिक्षक वैज्ञानिक रूप से निदानात्मक विधियों का प्रयोग करके बालकों पढ़ाते हैं। यदि प्रारम्भिक प्रयासों के उपरान्त बालक अपेक्षित व्यवहार का प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं तो उन्हें सम्पूर्ण मूल्यांकन के लिए भेज दिया जाता है।

इसमें पहले एकत्रित सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। इस जाँच प्रक्रिया के चार प्रमुख धटक हैं-

- शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में बालकों की व्याख्या
- शैक्षिक समस्याओं एवं क्षमताओं का यथासम्भव उचित एवं विशिष्ट वर्णन
- त्रुटिपूर्ण शैक्षिक योग्यताओं में अनुदेशन एवं वातावरण के प्रभाव को जानने के लिए मानक विधियों का प्रयोग
- अभिलेखन

### पहचान में दोष या त्रुटि

यद्यपि उपरोक्त तथा अन्य विधियों के द्वारा अधिगम अक्षम बालकों की पहचान सरलता से की जा सकती है तथापि इस प्रक्रिया में भी कुछ त्रुटियों की सम्भावना रहती है। त्रुटियों के कारण हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं:

- अअधिगम अक्षमता की परिभाषा में भ्रम एवं एकरूपता की कमी।
- योग्यता एवं उपलब्धि में अन्तर को सुनिश्चित करने वाले आँकड़ों

में एकरूपता का अभाव।

- शिक्षण के प्रारम्भिक चरण में अनुपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग।
- अधिगम अक्षम बालकों एवं मन्द गति से सीखने वाले बालकों के बीच भ्रम की स्थिति
- जाँच विधियों के गलत अनुप्रयोग द्वारा प्राप्त अवैध परिणाम।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

### अधिगम अक्षम बालकों का प्रतिस्थापन

अधिगम अक्षम बालकों के प्रतिस्थापन, उनको उपयुक्त सेवाओं में समायोजित करने से सम्बन्धित हैं। किसी भी अधिगम अक्षम बालक का उचित प्रतिस्थापन तब तक असम्भव है, जब तक उनकी शीघ्र पहचान न कर ली जाय, साथ ही साथ उनके कठिनाईयों की तीव्रता का आकलन करना भी अत्यन्त आवश्यक है। अतः प्रभावकारी सेवा प्रदान करने हेतु अधिगम अक्षम बालकों की शीघ्र पहचान एवं अक्षमता का सटीक आकलन अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक अधिगम अक्षम बालक अक्षमताओं तथा अक्षमताओं से युक्त व्यक्तित्व होता है। इनमें इन्हीं अक्षमताओं तथा क्षमताओं का पता लगाकर उनके लिए नैदानिक कार्यक्रम एवं सेवाएं तैयार की जा सकती हैं, जो उनको क्षमताओं से सीखने तथा अक्षमताओं की क्षति पूर्ति में सहायक हो (हार्डलिंग 1986)। अधिगम अक्षम बालकों के प्रतिस्थापन निम्नलिखित चरणों का अनुसार किया जाता है:

#### पहचान

|  |  |
|--|--|
| घर या विद्यालय में अधिगम या विद्यालयी कुशलता संबंधी समस्याएँ | माता-पिता/ अधिभावक शिक्षक एवं चिकित्सक |
|--|--|

#### मूल्यांकन

|   |  |
|---|--|
| मूल्यांकन किए जाने वाले क्षेत्र का निर्णय एवं मूल्यांकन उपकरण का निश्चय | मनोवैज्ञानिक मनोचिकित्सक चिकित्सक एवं विशेष बालक |
|---|--|

#### प्रतिस्थापन

|   |   |
|---|---|
| विचार करना कि बालक को क्या सहायता चाहिए और कैसे इसका अनुप्रयोग किया जाए | मनोवैज्ञानिक समाजसेवी मनोचिकित्सक चिकित्सक एवं विशेष शिक्षक |
|---|---|

## NOTES

### अधिगम अक्षम बालकों की देखभाल तथा उनका प्रशिक्षण

परम्परागत रूप से विशेष शिक्षकों द्वारा दी गयी वरीयता तथा विधालयी नीतियों के आधार पर ही अधिगम अक्षम बालकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाता है। अभिभावक तथा शिक्षक दोनों को प्रशिक्षण कार्यक्रम से बालकों में हो रहे अपेक्षित परिवर्तन के प्रति भी सावधान रहना चाहिए। अधिगम अक्षम बालकों की समस्याओं से सम्बन्धित सूचनाएँ देने के लिए शिक्षकों के पास उसकी सम्पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। इस प्रकार अभिभावकों एवं शिक्षकों के द्वारा बालकों की योग्यताओं के सूक्ष्म निरीक्षण के माध्यम से ही उनके अन्दर नवीन कौशलों का विकास सम्भव है। जब किसी बालक का अपेक्षित विकास नहीं होता है तब इन सूचनाओं तथा आँकड़ों के आधार पर ही नई युक्तियों का प्रयोग कर प्रभावशाली तरीके से उन्हें प्रशिक्षित करने का प्रयास किया जाता है। बालकों के मूल्यांकन की सूचनाएँ शिक्षकों को भविष्य में प्रभावी तथा उत्तम योजनाओं के निर्माण में मार्गदर्शन का कार्य करती है। विशेष शिक्षक पाठ्यक्रम के प्रमुख लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को चिन्हित कर, बालकों की रूचि, योग्यता तथा आवश्यकतानुसार विषयवस्तु को सुगम बनाने का प्रयास करते हैं।

मर्शर और पुलेन (2009)(स्मिथ पॉवेल, पैटॉन तथा डॉवडी, 2011 में उल्लेखित) ने विधालयी पूर्व शिक्षा के पाठ्यक्रम हेतु कुछ प्रतिमान गये, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं:

- (i) **विकासात्मक प्रतिमान**— विकासात्मक प्रतिमान के अन्तर्गत बालक को अधिगम के लिए उत्तम वातावरण उपलब्ध कराने के साथ विविध अनुभवों से गुजरने का अवसर देना है। उसमें भाषा, कहानियाँ, रचनात्मक, अवसरों, व यात्राओं के द्वारा बालक के विकास को उद्वृपित करने का प्रयास किया जाता है।
- (ii) **बौद्धिक प्रतिमान**— बौद्धिक प्रतिमान पियार्जे के सिद्धान्त पर आधारित है, जिसका प्रमुख उद्देश्य बालक के बौद्धिक तथा वैचारिक योग्यता को उद्वृपित करना है। इसमें स्मृति, भाषा, विभेद क्षमता, अवधारणा निर्माण, आत्म मूल्यांकन, बोध एवं समस्या समाधान को उत्तम बनाने हेतु प्रयास किया जाता है।

(iii) **व्यवहारात्मक प्रतिमान**— प्रत्यक्ष अनुदेशन के माध्यम से प्राप्त अवधारणा तथा पुनर्बलन सिद्धान्त व्यवहारात्मक प्रतिमान का आधार है प्रत्येक छात्र के लिए लक्ष्य का निर्धारण कर उसके व्यवहार का निर्धारण करना अत्यन्त आवश्यक है।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

वर्ट्स, कलाटा एवं टाम्पकिन्स (2007) ने अधिगम अक्षम बालकों के प्रशिक्षण हेतु निम्न विधियों का उल्लेख किया है:

## NOTES

i. **प्रत्यक्ष अनुदेशन**— यह एक आँकड़ों पर आधारित अनुदेशन है जिसमें विविध अधिगम लक्ष्यों की पहचान की जाती है, व्यवहार अधिगम का अध्ययन किया जाता है, तथा लक्ष्य प्राप्ति के सन्दर्भ में दिखने वाले सुधारों को नोट किया जाता है। अधिगम अक्षम बालकों की सुविधा के लिए विषयवस्तु को संरचनात्मक चरणों में विभाजित करके यह अनुदेशन एक गहन शैक्षिक योजना प्रदान करता है। पिछले पाठ का पुनरावलोकन, पाठ का स्पष्ट उद्देश्य, कौशल अनुप्रयोग का प्रत्यक्ष तथा संरचनात्मक प्रदर्शन, प्रतिपुष्टि, सकारात्मक पुनर्बलन, सुधार, उदाहरण सार्वजनिक प्रशंसा, छात्र सहभागिता इत्यादि कारणों से यह अनुदेशन काफी हद तक सफल प्रतीत हो रहा है। प्रत्यक्ष अनुदेशन द्वारा प्राप्त अवधारणा एवं पुनर्बलन सिद्धान्त व्यवहारात्मक प्रतिमान के आधार है।

ii. **बौद्धिक अनुदेशन**— इस अनुदेशन में चिन्हित की गयी समस्याओं के आधार पर पाठ का निर्माण किया जाता है। इसमें शैक्षिक तथा अनुदेशनात्मक गतिविधियों, ध्यान, रू प्रतियुत्तर, अभ्यास प्रत्यास्मरण, एवं अधिगम के हस्तान्तरण पर बल दिया जाता है। अधिगम अक्षम छात्र सीमित शैक्षिक कार्य योजना का प्रयोग कर अपनी प्रतिक्रिया की निगरानी करते हैं तथा स्वयं सुधार के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर होते हैं। शिक्षक विविध शिक्षण सामग्रियों पुनर्बलन तथा छात्रों के सबल एवं कमजोर पक्षों का सम्पूर्ण आँकड़ा प्रस्तुत कर उनके सफलता तथा उपलब्धियों पर विशेष बल देते हुए उन्हें प्रोत्साहन देते हैं। इस प्रकार शिक्षक और छात्र लक्ष्यों का निर्धारण कर स्वयं निगरानी का कार्य करते हैं।

iii. **अध्ययन कौशल प्रशिक्षण**— अधिगम कौशल प्रशिक्षण तथा पराबौद्धिक अध्ययन कौशल प्रशिक्षण छात्रों के अधिगम के निम्न क्षेत्रों में सहायता तथा निदेश प्रदान करता है :

## NOTES

- नोट्स लेने व जाँच प्रक्रिया में शामिल होने में
- रचना करने में
- योजना बनाने में
- विवरण प्रस्तुत करने में
- पठन-पाठन तथा अधिन्यास हेतु आवश्यक शिक्षण सामग्रियों के रखने में

यह प्रक्रिया अधिगम कार्य (पठन एवं लेखन कौशल) के सुनियोजन मूल्यांकन पर विशेष बल देती है। जैसे, किसी पाठ्यपुस्तक की मुख्य सूचनाओं का निचोड़ निकाल अपनी स्मृति के आधार पर अधिन्यास में उसका प्रयोग करना सीखना एक कठिन कार्य हो सकता है। वस्तुतः शिक्षक सम्पूर्ण स्वतंत्र प्रभावी कार्य करने की योग्यता को उच्च स्तर के अध्ययन कौशल से जोड़कर देखते हैं। वे बालकों से यह आशा करते हैं कि वे सूचनाओं तथा शैक्षिक संसाधनों जैसे नोट्स, पाठ्य पुस्तक, कार्यसूचि, सूचनाओं आदि को फलदायी प्रकार से सम्बन्धित कर अपने अधिन्यास को प्रभावकारी ढंग से पूर्ण कर सकें।

**सामाजिक कौशल प्रशिक्षण**— सामाजिक कौशल प्रशिक्षण सकारात्मक पुनर्बलन के प्रयोग तथा भावनाओं को समझने आदि की क्रियाओं पर बालकों की विशेष कौशल क्षेत्र में सहायता करता है। वे क्षेत्र इस प्रकार है— मित्र बनाने में, वयस्कों से विभिन्न परिवेश तथा परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने में आदि। यह प्रशिक्षण बालकों को भावनात्मक स्तर पर दृढ़ बनाता है, साथ ही उनमें आत्मसम्मान का भाव उत्पन्न कराता है। अतः इस प्रकार बालकों में स्वप्रोत्साहन, आत्मप्रशंसा, आत्मसम्मान संयम एवं स्थितियों व भावों पर नियन्त्रण आदि का भाव पुष्ट होता है। बालकों में प्रतियोगिता की भावना का विकास होता है। सामाजिक कौशल प्रशिक्षण बालकों में अवसाद तनाव एवं भ्रम आदि से मुक्ति पाने व भावनाओं के आदान-प्रदान करने के कौशलों का विकास करता है। शिक्षकों को प्रसन्न व्यवहार करवाना ही इस प्रशिक्षणों का प्रमुख लक्ष्य है। 'क्या आप इसे पुनः बताएंगे?', एक अच्छा प्रारम्भिक प्रश्न हो सकता है। इस प्रश्न को पूछने के लिए बालक के लिए यह

आवश्यक हो जाता है कि वह उस शिक्षक द्वारा प्रदान की गयी जानकारियों या व्याख्यान को सुनने के बाद उचित अन्तराल की ध्यानपूर्वक प्रतीक्षा करें जिससे उसके प्रश्न की सार्थकता सिद्ध हो सके।

**समावेशी कार्यविधियाँ** – विशेष शिक्षा के नूतन यिम इस बात पर बल देते हैं कि अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा यथासम्भव सामान्य बालकां के साथ हो। यदि इन बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ पढ़ने का मौका दिया जाएगा तो ये बालक अपने आयु वर्ग के दूसरे बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त कर उसे उनके साथ सामंजस्य स्थापित कर पाएंगे। यदि ये बालक वहाँ सामंजस्य नहीं बिठा पाते तब उनके लिए वैकल्पिक अनुदेशनात्मक प्रतिमान का प्रयोग किया जाता है। इसमें सही तथा प्रभावी अनुदेशन के लिए पाठ्यक्रम को प्रयोगात्मक सृजनात्मक एवं कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। शिक्षक छात्रों के स्तर की अनुदेशन और विषय सामग्री उपलब्ध कराकर उनकी सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं। इसके अन्तर्गत कार्यपुस्तिका एवं अभ्यास पुस्तिका के आकर्षक तथा सूचनाओं का एक तार्किकता एवं क्रमबद्धता के साथ पेश किया जाना चाहिए। शिक्षक अधिगम अक्षम छात्रों के लिए अनुदेशन को कई बार दोहरा सकता है। इसके अन्तर्गत कार्य को पूरा करने के लिए अधिक समय देना, अनुदेशन के लिए कार्यों को छोटी-छोटी इकाईयों में तोड़ना अधिन्यास को सरल बनाने के लिए छोटे-छोटे भागों में बाँटना और कार्य का सम्पूर्ण विश्लेषण करना आदि सम्मिलित है। सामान्य अनुदेशनात्मक सुधार के अन्तर्गत - दैनिक अधिन्यास, चार्ट और ग्राफिक का व्यवस्थापन एवं रंगीन विषय सामग्री, जो कार्यों के निर्देश को रेखांकित करती हैं, को सम्मिलित किया जा सकता है।

**सहपाठी सहयोग निर्देशन**— यह एक परखी हुई प्रतिक्रिया है जिसमें विद्यार्थी ही दूसरे विद्यार्थियों के लिए निर्देश एजेन्ट के रूप में काम करता है। सफल कार्यक्रम सदैव तार्किक रूप से व्यवस्थित अनुदेशनात्मक अभ्यास के नियमों का सतत् रूप से पालन करते हैं। सफल होने के लिए सहपाठी-शिक्षक अपने शिक्षकों की भाँति ही सूचनाओं को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करते हैं। सहयोगी सहपाठियों का निरीक्षण भी करते हैं, प्रतिक्रियाओं की सार्थकता पर नियन्त्रण रखते हैं तथा तत्काल प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। सहपाठी सहयोगात्मक निर्देशन का प्रयोग एक वैकल्पिक

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

अभ्यास क्रिया के रूप में किया जा सकता है। इसका प्रयोग समूह में नई चीजों को पढ़ाने के लिए किया जा सकता है। वे दो सहयोगी कार्यक्रम जिनको इस क्षेत्र में प्रोत्साहन दिया गया है, वे इस प्रकार हैं- पीयर ट्यूटोरिंग एवं क्लास वाइज पीयर ट्यूटोरिंग टीम (सीडब्लूपीटी)।

**संगणक निर्देशित अनुदेशन-** संगणक निर्देशित अनुदेशन संगणक एवं साफ्टवेयर का ऐसा प्रयोग है जो व्यापक और विविध अनुदेशन प्रदान कर सके जैसे शैक्षिक खेल, समस्या हल अनुभव, शब्द कार्य प्रक्रिया, उच्चारण तथा व्याकरण जाँच अनुदेशन तथा इनका अभ्यास। संगणक निर्देशित अनुदेशन एक आकर्षक प्रोत्साहित करने वाला अनुदेशन है जो छात्रों को सफल अनुभव अधिगम की ओर अग्रसरित करता है। यह छात्रों को सीधे प्रतिपुष्टि देता है, साथ ही विषयों को खण्डों में विभाजित कर गलतियों की सम्भावना को कम करता है। शिक्षकों को बच्चों के विकास के निरीक्षण हेतु पूरा अवसर प्रदान करता है। यदि छात्र किसी पाठ को सस्वर पढ़ना चाहे तो वह संगणक वाचक या ध्वनि यंत्र का प्रयोग कर अभ्यास कर सकते हैं। इस प्रकार संगणक ध्वनि मिश्रक समस्या वाले बालकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह बच्चों के हस्तलेखन की आवश्यकता को कम करता है, इससे समय की बचत होती है। लेकिन यही संगणक निर्देशित अनुदेशन की एक सीमा भी है।

अधिगम अक्षम बालकों का प्रशिक्षण, उनके सीखने की क्षमता व विशेषता, प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रकृति और कार्यक्रम के प्रस्तुतिकरण से प्रभावित होती है। रेड्डी, रमार तथा कुशमा (2003) ने अधिगम अक्षम बालकों के देखरेख के लिए निम्न पाँच अधिगम के चरणों के आधार पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम निर्धारण की बात कही है:

- अधिग्रहण (Acquisition) चरण
- प्रवीणता (Proficiency) चरण
- अनुरक्षण (Maintenance) चरण
- सामान्यीकरण (Generalization) चरण
- अनुकूलन (Adaption) चरण

## NOTES

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रस्तुतीकरण में संबंधित पर्यावरण का अनुकूलित होना बालकों के अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बना देता है। स्मिथ पॉवेल, पैटॉन तथा डॉवडी (2011) ने अधिगम अक्षम बालकों की कक्षा में समावेशन के लिए कुछ सुझाव दिये, जो कक्षीय सुविधाओं से जुड़े हुए थे। उन्होंने सुझाव दिया कि लिखित सामग्री स्पर्शीय हो तथा केवल आवश्यक विषयवस्तु को ही समाहित किया जाना चाहिए जो कक्षीय सुविधाओं से जुड़ी हों। श्यामपट एवं श्वेत पट पर लिखित निर्देशों को पढ़ने के लिए छात्रों को उसके नजदीक बैठाना लाभकारी हो सकता है। छात्रों को लिखित तथा वाचिक दोनों अनुदेशन एक साथ देना ज्यादा उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अधिगम अक्षम बालकों की कक्षा को उनके हेतु सरल एवं बोधगम्य बनाने के लिए शिक्षण के दौरान विषयवस्तु से सम्बन्धित पूर्व-उल्लेखित बातों को भी सम्मिलित करना चाहिए। जिससे बच्चे नये और पुराने विषयवस्तु के मध्य सरलतापूर्वक सम्बन्ध स्थापित कर सकें। शिक्षण के दौरान निश्चित अन्तराल पर विराम, पठित विषयवस्तु की जाँच एवं प्रश्नोत्तर तथा नोट्स बनाने के लिए समय देना इस छात्रों के लिए उपयोगी होता है। शिक्षक को विभिन्न प्रकार के नये शब्दों का ज्ञान कराने के लिए नयी-नयी युक्तियों का उपयोग करना चाहिए। कई छात्र रंगीन शीर्षक युक्त पाठ तथा सहयोगी युगल में काम करने पर कार्य को आसान पाते हैं। अतः उन्हें ऐसा अवसर और सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

### आंकलन के उपकरण तथा क्षेत्र

अधिगम अक्षमता के मूल्यांकन के संबंध में गुवेल्फ विश्वविद्यालय (2000) द्वारा प्रकाशित “ए हैंडबुक फॉर फैंकल्टी ऑन लर्निंग डिसएबिलिटी इंशुज्स” में यह प्रमाणित किया गया है कि “अधिगम क्षमता का मूल्यांकन एवं व्यापक एवं थकाऊ प्रक्रिया है जिसके लिए समय, विशेषज्ञता एवं अच्छे नैदानिक (क्लिनिकल) निर्णयात्मक क्षमता की जरूरत होती है। मूल्यांकन दक्ष पेशेवर के द्वारा परीक्षणों की एक ऐसी बैटरी का प्रयोग कर किया जाना चाहिए जो बुद्धिमता, विद्यालयी कार्यशैली, सूचना संसाधन, सामाजिक-भावात्मक कार्यशैली और अधिगम अक्षमता के अन्य निर्धारक तत्वों की जाँच करे”। मनोवैज्ञानिक द्वारा अधिगम अक्षमता के मूल्यांकन को चार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। (पानानेन, फेब्रुवरी, कलीमा, मौव्स तथा कानुकी, 2011)-

## NOTES

- फिनोटाइप का आलकन-बच्चे के कामों और व्यवहार की जाँच की प्रक्रिया।
- विकास इतिहास-बच्चे के विकास और अपनी खास विशेषताओं और संभावित कमी का ज्ञान।
- ज्ञानात्मक कार्यों के मूल्यांकन-फिनोटाइप में पाया समस्याओं का और ज्यादा विस्तृत मूल्यांकन।
- संसाधन अथवा हस्तक्षेप कारक- ये बच्चे के वातावरण और इसके साथ तालमेल तथा समस्याओं को संशोधित रूप में निर्धारण करने की सामर्थ्य से हैं।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में अधिगम अक्षमता के मूल्यांकन हेतु कुछ मुख्यतः प्रक्रियाओं का वर्णन भार्गव (1998) में किया है जो निम्नलिखित है:

- मनोवैज्ञानिक दशा शैक्षिक उपलब्धि
- मनोस्नायुविक+मनोवैज्ञानिक शैक्षिक उपलब्धि
- मनोस्नायुविक+जैव रसायनिक+ मस्तिष्क विधुत तरंगीय+मनोवैज्ञानिक शैक्षिक उपलब्धि

### i. मनोवैज्ञानिक दशा शैक्षिक उपलब्धि

यह एक द्विआयामी प्रक्रिया है। पहले आयाम में पाँच परीक्षणों जिनमें की बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, प्रात्यक्षिक गति परीक्षण, अवधान परीक्षण, अभिक्षमता परीक्षण सम्मिलित है का प्रयोग कर व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक दशा का अध्यापन किया जाता है। दूसरा आयाम शैक्षिक उपलब्धि का है जिसमें बालक के शैक्षिक प्रगति तथा शैक्षिक कार्य-कलाप में सहभागिता का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए विद्यालय द्वारा प्रगति प्रमाण-पत्र की जाँच की जाती है, माता-पिता से शैक्षिक उपलब्धि, धर पर अध्ययन के लिए बच्चों द्वारा दिए जाने वाले समय एवं परिवार के अन्य व्यक्तियों के साथ बालक के समायोजन के संबंध में जानकारी प्राप्त की जाती हैं। इन अध्ययनों के आधार पर निर्णय प्रदान किया जाता है।

## ii. मनोस्नायुविक + मनोवैज्ञानिक शैक्षिक उपलब्धि

यह प्रक्रिया थोड़ी जटिल हैं लेकिन इससे प्राप्त परिणाम अपेक्षाकृत ज्यादा विश्वसनीय हैं। मनोवैज्ञानिक दशा तथा शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण पूर्ववत ही होता है। मनोस्नायुविक दशा के परीक्षण के लिए मूल्यांकनकर्ता "वेड विजुअल मोटर गेस्टाल्ट टेस्ट" का प्रयोग करता है। इस परीक्षण के द्वारा अध्ययनकर्ता को अतिक्रियाशीलता, हाइपर काइनेसिस, गति संबंधी तालमेल आदि का विस्तृत विवरण प्राप्त हो जाता है जिसके फलस्वरूप वह अधिगम अक्षमता संबंधी निर्णय ज्यादा विश्वास के साथ प्रदान करता है।

## iii. मनोस्नायुविक + जैव रसायनिक + मस्तिष्क विद्युत तरंगीय + मनोवैज्ञानिक शैक्षिक उपलब्धि

यह एक अति उपयोगी प्रक्रिया हैं, इस प्रक्रिया में जो दो नवीन बातें हैं, वे जैव रसायनिक दशा एवं मस्तिष्क विद्युतीय तरंगीय दशा का परीक्षण इनके लिए अध्ययनकर्ता निम्नलिखित तथ्यों की जाँच करता है:

- रक्त में वर्तमान शर्करा की मात्रा का आकलन;
- मूत्र परीक्षण, जिसमें मूत्र में निहित 17 केटो वसा रेशों की स्थिति का आकलन;
- थायराइड ग्रंथि के कार्यशैली का परीक्षण;
- रक्त संरचना का विश्लेषण;
- गुण-सूत्रों का परीक्षण; और
- मस्तिष्क तरंगों का आकलन;

इन परीक्षणों से अध्ययनकर्ता को व्यक्ति के संबंध में विशद् जानकारी प्राप्त हो जाती है जिसके फलस्वरूप अधिगम अक्षमता संबंधी उसका मूल्यांकन अति विश्वसनीय हो जाता है। इन प्रक्रियाओं के इतर कुछ गणितीय मानदण्डों का उपयोग भी अधिगम अक्षमता का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। इनमें से कुछ मुख्य निम्नलिखित हैं:

- मानसिक स्तर (मेंटल ग्रेड) का आकलन— हैरिस ने सन 1961 ई० में इसका विकास एवं प्रमापीकरण किया था, इसके लिए निम्न सूत्र

## NOTES

## NOTES

का प्रयोग किया जाता हैं

आर.ई. = एम.ए-5

एम.ए. = (आई. क्यू. = सी.ए.)/100

सी.ए. से यहाँ अर्थ क्रानिकल एज से हैं जो पाँच वर्ष निश्चित है।

- अधिगम अक्षमता लब्धांक- इस विधि को प्रतिपादित करने का श्रेय प्रसाद तथा श्रीवास्तव को जाता है। इसके लिए उन्होंने निम्नलिखित सूत्र का प्रतिपादन किया:

एल. डी. क्यू. = 1-पास/(आई. क्यू.+ग्रेड)

यहाँ पास = प्रतिशत शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांक

आई. क्यू. = मानसिक दक्षता; तथा

ग्रेड = शैक्षिक स्तर

अधिगम अक्षमता के मूल्यांकन की ये विभिन्न विधियाँ अपने उद्देश्य को पूर्ण करती है यद्यपि परिणाम की विश्वसनीयता में अंतर हो जाता है। परिणामस्वरूप विधियों का अलग-अलग प्रयोग उतना लाभकारी नहीं हैं जितना कि होना चाहिए। अतः, अधिगम के समग्र तथा प्रभावपूर्ण मूल्यांकन के लिए विधियों का एक साथ प्रयोग किया जाना चाहिए।

### अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण

अधिगम अक्षमता एक वृहद् प्रकार के को कई आधारों पर विभेदीकृत किया गया है। ये समस्त अपने उद्देश्यों के अनुकूल हैं। इसका मुख्य विभेदीकरण ब्रिटिश कोलंबिया (2011) एवं ब्रिटेन के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक सपोर्टिंग स्टुडेंट्स विद लर्निंग डिसएबिलिटी: ए गाइड फॉर टीचर्स में दिया गया है, जो निम्नलिखित है:

1. डिस्लेक्सिया (पढ़ने संबंधी विकार);
2. डिस्ग्राफिया (लेखन संबंधी विकार);
3. डिस्कैलकुलिया (गणितीय कौशल संबंधी विकार);
4. डिस्फैसिया (वाक् क्षमता संबंधी विकार);

## NOTES

5. डिस्प्रेक्सिया (लेखन एवं चित्रांकन संबंधी विकार);
6. डिसऑर्थोग्राफिया (वर्तनी संबंधी विकार);
7. ऑडिटरी प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (श्रवण संबंधी विकार);
8. विजुअल परसेप्शन डिसऑर्डर (दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता संबंधी विकार);
9. सेंसरी इंटीग्रेशन और प्रोसेसिंग डिसऑर्डर (इन्द्रिय समन्वयन क्षमता संबंधी विकार); तथा
10. ऑर्गनाइजेशनल लर्निंग डिसऑर्डर (संगठनात्मक पठन संबंधी विकार)

1. **डिस्लेक्सिया**— डिस्लेक्सिया शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द “डिस” तथा “लेक्सिस” के योग से जिसका शाब्दिक अर्थ है “कठिन भाषा (डिफिकल्ट स्पीच)”。 वर्ष 1887 में एक जर्मन नेत्र रोग विशेषज्ञ रूडोल्फ बर्लिन द्वारा खोजे गए इस शब्द को “शब्द अंधता” भी कहा जाता है। डिस्लेक्सिया को भाषायी और सांकेतिक कोडों भाषा के ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्णमाला के अक्षरों अथवा संख्याओं का प्रतिनिधित्व कर रहे अंकों के संसाधन में होनेवाली पेशानी के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह भाषा के लिखित रूप, मौखिक रूप एवं भाषायी दक्षता को प्रभावित करता है। यह अधिगम अक्षमता का सबसे सामान्य प्रकार है। डिस्लेक्सिया के लक्षण निम्न हैं—

- वर्णमाला अधिगम में कठिनाई
- अक्षरों की ध्वनियों को सीखने में कठिनाई
- एकाग्रता में कठिनाई
- पढ़ते समय स्वर वर्णों का लोप होना
- शब्दों को विपरीत या अक्षरों को क्रम इधर-उधर का पढ़ा जाना, जैसे— नाम को मान या शाक को शाक पढ़ा जाना; वर्तनी दोष से पीड़ित होना;
- समान उच्चारण वाले ध्वनियों को न पहचान पाना;
- शब्दकोष में कमी
- भाषा के अर्थपूर्ण प्रयोग का अभाव; तथा

## NOTES

### ● कमजोर स्मरण शक्ति

**डिस्लेक्सिया की पहचान-** उपर्युक्त लक्षण यद्यपि डिस्लेक्सिया की पहचान करने में उपयोगी होते हैं लेकिन इन लक्षणों के आधार पर पूर्णतः विश्वास के साथ किसी भी व्यक्ति को डिस्लेक्सिक धोषित नहीं किया जा सकता है। डिस्लेक्सिया की पहचान करने के लिए सन् 1973 में अमेरिकन फिजिशियन एलेना बोडर ने "बोड टेस्ट ऑफ रीडिंग-स्पेलिंग पैटर्न" नामक एक परीक्षण का विकास किया। भारत में इसके अन्तर्गत "डिस्लेक्सिया अर्ली स्क्रीनिंग टेस्ट" और "डिस्लेक्सिया स्क्रीनिंग टेस्ट" का प्रयोग किया जाता है।

**डिस्लेक्सिया का उपचार-** डिस्लेक्सिया का पूर्ण उपचार असंभव है परंतु इसको उचित शिक्षण-अधिगम पद्धति के द्वारा निम्नतम स्तर पर लाया जा सकता है।

2. **डिसग्राफिया-** "डिसग्राफिया अधिगम अक्षमता का वो प्रकार है जो लेखन क्षमता को प्रभावित करता है। यह वर्तनी संबंधी कठिनाई, खराब हस्तलेखन तथा अपने विचारों को लिपिबद्ध करने में समस्या के रूप में जाना जाता है"। (नेशनल सेंटर फॉर लर्निंग डिसएबलिटीज्स, 2006).

**डिसग्राफिया के लक्षण-** इसके निम्नलिखित लक्षण हैं:

- i. लिखते समय खुद से बातें करना;
- ii. अशुद्ध वर्तनी एवं अनियमित रूप और आकार वाले अक्षर को लिखना;
- iii. पठनीय होने पर भी कॉपी करने में अधिक श्रम का प्रयोग करना;
- iv. लेखन सामग्री पर कमजोर पकड़ अथवा लेखन सामग्री को कागज के बहुत पास से पकड़ना।
- v. अपठनीय हस्तलेखन;
- vi. लाईनो का ऊपर-नीचे लिखा जाना एवं शब्दों के मध्य अनियमित स्थान छोड़ना; तथा
- vii. अर्पूण अक्षर अथवा शब्द लिखना

**उपचारात्मक कार्यक्रम-** चूँकि यह एक लेखन संबंधी विकार है, अतः, इसके उपचार के लिए यह जरूरी है कि इस अधिगम अक्षमता से ग्रसित व्यक्ति को लेखन का अधिक से अधिक अभ्यास कराया जाय।

3. **डिस्कैलकुलिया-** यह एक व्यापक पद है जिसका प्रयोग गणितीय कौशल अक्षमता के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत अंकों संख्याओं के अर्थ समझने की अयोग्यता से लेकर अंकगणितीय समस्याओं के समाधान में सूत्रों एवं सिद्धांतों के प्रयोग की अयोग्यता तथा समस्त प्रकार के गणितीय कौशल अक्षमता सम्मिलित है।

**डिस्कैलकुलिया के लक्षण-** इसके निम्नलिखित लक्षण हैं:

- नाम तथा चेहरा पहचानने में कठिनाई;
- अंकगणितीय संक्रियाओं के चिन्हों को समझने में कठिनाई;
- अंकगणितीय संक्रियाओं के अशुद्ध परिणाम मिलना;
- गिनने के लिए उंगलियों का प्रयोग;
- वित्तीय योजना या बजट बनाने में कठिनाई;
- चेकबुक के प्रयोग में कठिनाई;
- दिशा ज्ञान का अभाव या अल्प समझ;
- नकद अंतरण या भुगतान से; तथा
- समय की अनुपयुक्त समझ के कारण समय-सारणी बनाने में समस्या का अनुभव करना।

**डिस्कैलकुलिया के कारण-** इसका कारण मस्तिष्क में उपस्थित कार्टेक्स की कार्यविपरूपता को माना जाता है। कभी-कभी तार्किक चिंतन क्षमता की कमी के कारण या कार्यकारी स्मृति के अभाव के कारण भी ग्राफिया पैदा होता है।

**डिस्कैलकुलिया का उपचार-** उचित शिक्षण-अधिगम रणनीति अपनाकर केलकुलिया को कम किया जा सकता है। कुछ प्रमुख रणनीतियाँ निम्नलिखित हैं:

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

- जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से संबंधित उदाहरण प्रस्तुत करना;
- गणितीय तथ्यों को स्मरण करने की लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना;
- फ्लैश कार्ड्स और कम्प्यूटर गेम्स का उपयोग करना; तथा
- गणित को सरल करना और यह बताना कि यह एक कौशल है जिसे अर्जित किया जा सकता है।

4. **डिस्फैसिया**— ग्रीक भाषा के दो शब्दों “ डिस्” तथा “फासिया” जिनके शाब्दिक अर्थ क्रमशः “अक्षमता” एवं “वाक्” होते हैं से मिलकर बने शब्द डिस्फैसिया का शाब्दिक अर्थ वाक् अक्षमता से है। यह एक भाषा एवं वाक् संबंधी विकृति है जिससे ग्रसित बच्चे विचार की अभिव्यक्ति या व्याख्यान के समय कठिनाई अनुभव करते हैं। इस अक्षमता के लिए प्रमुख रूप से मस्तिष्क क्षति (ब्रेन डैमेज) को उत्तरदायी माना जाता है।
5. **डिस्प्रेक्सिया**— यह मुख्य रूप से चित्रांकन संबंधी अक्षमता की ओर संकेत करता है। इससे ग्रसित बच्चे लिखने एवं चित्र बनाने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

### अधिगम अक्षमता और अन्य विकलांगता

#### अधिगम अक्षमता और मानसिक मंदता

“अधिगम अक्षमता” और “मानसिक मंदता” पद एक सामान्य आदमी की भाषा में एक-दूसरे के पर्याय हैं और भ्रववश में वे दोनों पदों का एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। यह बिल्कुल गलत है। अधिगम अक्षमता और मानसिक मंदता में स्पष्ट अन्तर है जिन्हें आप उनकी परिभाषाओं के माध्यम से समझ सकेंगे।

“अधिगम अक्षमता” को लिखित या मौखिक भाषा के प्रयोग में सम्मिलित किसी एक या अधिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में कार्यविरूपता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जबकि मानसिक मंदता को मानसिक विकास की ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया जाता है। जिसमें बच्चों का

बौद्धिक विकास औसत बुद्धि वाले बालकों से अल्प होता है। इस अंतर को आप निम्नलिखित तालिका के माध्यम से आप और स्पष्ट कर सकते हैं:

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

| अधिगम अक्षमता   | मानसिक मंदता  |
|---|---|
| 1. औसत या औसत से अधिक बुद्धिलब्धि प्राप्तांक                            | बुद्धिलब्धि प्राप्तांक 70 या उससे कम                                      |
| 2. मस्तिष्क की सामान्य कार्य-प्रणाली बाधित नहीं होती है या औसत होती है। | मस्तिष्क की सामान्य कार्य-प्रणाली औसत से कम                               |
| 3. योग्यता और उपलब्धि में स्पष्ट अंतर                                   | दैनिक जीवन की जरूरतों की पूर्ति करने में पूर्णतः अक्षम या कठिनाई का सामना |
| 4. अधिगम अक्षम व्यक्ति  | मानसिक मंद व्यक्ति जरूरी रूप से   |
| मानसिक मंदता से ग्रसित हो यह जरूरी नहीं हैं।                            | अधिगम अक्षमता से ग्रसित होते हैं।   |
| 5. यह किसी में भी हो सकता है  | यह महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में अधिकतर पाई जाती है।                     |

## NOTES

### पाठ्यक्रम संबंधी अनुकूलन

### बाधित बालकों के लिए सूचनाओं के अनुकूलन का आव्यूह (Strategies for Adapting Instruction for Disabled)

यदि बालकों को निपुणता तथा सूचनाएँ समझने में कठिनाई होती है तो अनुदेशन अनुकूलन की निम्नलिखित प्रविधियाँ हैं-

#### ( अ ) कार्य तथा सामग्री का परिवर्तन (Modifying Materials And

**Activities)** – (1) कार्य निर्देशन स्पष्ट होने चाहिए, (2) अधिगम कार्यों में सहायता के लिए संकेत शब्दों को तथा ऐसे अन्य आकर्षक विधियों को सम्बद्ध किया जाये जो बालक को कार्य समझाने में स्पष्टता प्रदान करें। संकेत मौखिक, लिखित, अथवा वस्तु विशेष को देखकर भी हो सकते हैं जैसे प्रतीक बनाना, एवं आकृति या शब्दों के नीचे रेखा खींचना जिसमें बालक का ध्यान आकर्षित हो। (3) यदि

## NOTES

बालक किसी विशेष त्रुटि को बार-बार दोहराता हो, तो त्रुटि को सुधार कर बालक का ध्यान विशिष्ट रूप से आकर्षित किया जाये जिससे बालक में सुधार हो सके।

- ( ब ) शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार व परिवर्तन (**Changing Teaching Procedure**)— (1) निपुणता तथा सूचनाओं का अतिरिक्त प्रस्तुतीकरण दो, (2) अतिरिक्त मार्ग दर्शन का अभ्यास, (3) बालकों के द्वारा किये गये सफल कार्यों के परिणामों को आकर्षण का केन्द्र बनाये इसमें अध्यापक के द्वारा दिये गये परिणाम अथवा पारितोषिकों का ज्ञान भी शामिल है, (4) अनुदेशन में हुई प्रगति को धीमा करो, अनुदेशन तथा अधिगम कार्यों के लिये निश्चित समय में परिवर्तन मत करो, समय पहले के समान ही रखो लेकिन सामग्री तथा अभ्यास को कम कर दो।
- ( स ) कार्य की आवश्यकताओं में परिवर्तन करना (**Altering Task Requirements**)— विद्यार्थियों की सफलता में वृद्धि करने के लिए अधिगम कार्यों में परिवर्तन किया जा सकता है— (1) सफल रूप से कार्य करने के लिए मानदण्ड में परिवर्तन करो, सफलतापूर्वक कार्य करने के मानदण्ड मुख्यता तीन बातें शामिल हैं— कार्य की मात्रा, गति तथा शुद्धता (त्रुटिरहित), (2) कार्य के गुणों में परिवर्तन करो। कार्य-गुणों में कार्य करने की स्थितियाँ एवं व्यवहार की प्रकृति शामिल हैं, (3) कार्य को छोटे-छोटे कार्यों में विभाजित करो, यदि कार्य गुण तथा मानदण्ड परिवर्तन से सफलता प्राप्त न हो तो समझना चाहिए। शायद कार्य संकीर्ण तथा समस्याओं से भरा है। ऐसी दशा में कार्य को छोटे-छोटे भागों में बाँटो।
- ( द ) वैकल्पिक कार्य चुनाव (**Selection an Alternate Task**)— यदि अनुदेशनात्मक अनुकूल के बावजूद भी विद्यार्थी की कार्य करने की क्षमता में प्रगति न हो तो अध्यापक को अधिगम कार्य में परिवर्तन करना चाहिए और विकल्प के रूप में अन्य कोई कार्य देने चाहिए, जैसे— (1) पहले जैसे कार्य के समान लेकिन उससे कोई आसान कार्य, (2) कोई कार्य जो पहले भी किया गया हो। इस परिस्थिति में मूल कार्य को अन्य कार्य में परिवर्तन कर दिया जाता है। अध्यापक को बालकों की समस्या, प्रकृति एवं बालक की बाधिता के परिणाम को ध्यान में रखते हुए आव्यूहों को चुनना चाहिए।

## बाधित बालकों के लिए अनुकूलन शिक्षण आव्यूह (Adaptation Teaching Strategies for Disabled)

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

अध्यापक को बाधित बालकों की प्रत्येक विषय में अधिगम सम्बन्धी समस्याओं की पहिचान करनी चाहिए तथा रोकथाम के लिए अचित अभ्यास करने के प्रस्ताव देने चाहिए, लेकिन इस प्रकार के अभ्यास संशोधित अध्यापक द्वारा सामान्य कक्षा में न देकर अन्य उपयुक्त स्थान पर दिये जाने चाहिए, जो शिक्षण संस्था के समय में ही विशिष्ट व्यवसी करने के बाद दिये जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, जैसे ध्वनि में भेद का विकास करने के लिए कुछ कठिन कार्य क्षेत्र में अधिगम अभ्यास दे सकता है। यदि बालक “भ” “थ” “ध” आदि के ध्वनि के अन्तर में कठिनाई का समाना करता है जिसके कारण वह बोल पाने में असमर्थ हैं। इन अक्षरों से सम्बन्धित 2-3 अभ्यास अध्यापक द्वारा बालकों को दिये जा सकते हैं। संसाधन युक्त अध्यापक बालकों की कठिनाइयों के शैक्षिक क्षेत्र की पहिचान करने के बाद इसके आधार पर सुधार हेतु बालकों की और अधिक अभ्यास दे सकता है। अध्यापक को विशेष ध्वनि को शिक्षा के लिए विभिन्न अभ्यासों का प्रारूप बनाना चाहिए।

दृष्टिहीन बालक की कठिनाइयों को भी पहिचाना जा सकता है। उदाहरण- यदि दृष्टिहीन बालक हाथ की उँगलियों की गति को त्रुटियों के कारण ब्रेल संसाधित अध्यापक की मदद लेनी चाहिए जिससे बालक की त्रुटियों को सुधारा जा सके। संसाधित अध्यापक बालक की पढ़ने सम्बन्धी त्रुटियुक्त विधि की आदत को सुधारने में मदद कर सकता है तथा बालक को संसाधनयुक्त विशिष्ट कक्ष में लेकर जाकर ब्रेल पढ़ने की ठीक विधियों से बालक की त्रुटियों से छुटकारा दिला सकता है। इसी प्रकार अध्यापक बाधित बालकों की विभिन्न क्षेत्रों में कठिनाइयों को पहिचान सकते हैं। सामान्य शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण कर रहे, बाधित संस्थाओं में शिक्षण प्राप्त कर रहे बाधित बालकों को उपरोक्त बातों के अनुसार अनुदेशनात्मक सामग्री एवं विधियों के अनुकूल की आवश्यकता के लिए अध्यापक को अधिगम सम्बन्धी विधियाँ तथा उसके मुख्य भागों के सम्बन्ध में जानकारी होनी चाहिए जो सामान्य कक्षा में अधिगम को प्रभावित करते हैं अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है। इसको अधिगम सम्बन्धी बिन्दुओं, शिक्षण विधियों एवं अधिगम सम्बन्धी वातावरण प्रमुख रूप से प्रभावित करता है। यद्यपि बाधित बालकों में सामान्य बालकों की भाँति अधिगम प्रक्रिया परिवर्तनशील हैं, यह परिवर्तन बाधिता के

## NOTES

## NOTES

परिणाम पर निर्भर करता है। जैसे- कहा जा सकता है कि एक श्रवण बाधित बालक दृष्टि द्वारा देखे जाने वाले संकेतों पर अधिक निर्भर करता है। जबकि दृष्टि बाधित बालक को श्रवण सामग्रियों के द्वारा समझाने में पर्याप्त आसानी होती है। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के बाधित बालक अपने इन्द्रिय ज्ञान के अनुसार प्रयोग करके अधिगम सम्बन्धी क्षेत्रों में जहाँ वे क्षीणता समझते हैं, पूरा कर लेते हैं।

बाधित बालक तथा सामान्य बालक में यह अन्तर होता है कि सामान्य बालक प्राकृतिक विधियों में अधिगम तथा वातावरण की खोज करना प्रारम्भ कर देता है जबकि बाधित बालक अधिगम के लिए वातावरण की खोज करना आरम्भ कर देता है जबकि बाधित बालक का अधिगम के लिए वातावरण कुछ सीमाएँ खड़ी कर देता है अथवा बाधित बालक को वातावरण के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि किसी बालक को कम सुनाई देता है तो ऐसे बालक की सुनने की क्षमता उसी समय से अपर्याप्त हो जाती है। जिस समय से उस बालक में श्रवण दोष पैदा होने का विकास प्रारम्भ होता है। यही कमी सामान्य बालक की अपेक्षा प्रभावित बालक में वाणी एवं भाषा उन्नति को बुरी तरह से प्रभावित करती है। उस समय वातावरण परिस्थितियाँ अवरूद्ध होती हैं क्योंकि वह श्रवण इन्द्रियों का प्रयोग नहीं कर सकता। इस प्रकार ऐसे बालक का अधिगम अनुभव भी अवरूद्ध हो जाता है तथा उसके बाल वाली शैक्षिक उपलब्धियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार उसे यह क्षति निरन्तर होती रहती है। दृष्टि बाधिता तथा खराबी के कारण बालकों को किसी वस्तु का पूरा चित्र देखने में कठिनाई होती है। ऐसे बालक को वस्तु को पूर्ण चित्र की कल्पना करने के लिए अन्य इन्द्रियों की मदद लेने के लिए जूझना पड़ता है मुख्यतया श्रवण इन्द्रियों की सहायता बालकों को अवश्य लेनी पड़ती है। यदि अध्यापक को बालकों की शैक्षिक समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी होती है तो अध्यापक बालकों का मार्ग विधियों द्वारा कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे बालकों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकता है। यह शैक्षिक समन्वय में मदद करेगा।

### अधिगम में कठिनाई रखने वाले छात्रों की शिक्षा (Teaching Students with Learning Difficulties)

अधिगम असमर्थी बालकों के लिए शिक्षा के अनुदेशनों के लिए निम्न दो आयाम उपलब्ध हैं-

(1) **रोकथाम आयाम (Remedial Approach)**— प्राथमिक निपुणताओं के शिक्षण के लिए रोकथाम की प्रविधियाँ को प्रयोग किया जाता है एवं शिक्षा की मुख्य धारा वाले कम उम्र के छात्रों के लिए अधिकतर उपयुक्त है।

(2) **क्षतिपूर्ति आयाम (Compensation Approach)**— यह प्रविधियाँ बालकों की प्राथमिक निपुणताओं में कमियों के प्रभाव से बचा कर निकाल लाती हैं, अर्थात् बालक की निपुणता में कमियाँ इन प्रविधियों के प्रयोग में बालक की शिक्षा में अवरोध पैदा नहीं करती तथा बालक को किसी भी विषय में शिक्षा प्रदान जा सकती है। आधारित निपुणता में पढ़ना लिखना, शब्दों की वर्तनी करना गणित तथा लिखे गये भाव आदि शामिल है।

सामान्य शिक्षा कक्ष में विशिष्ट छात्रों के आधारित निपुणताओं को प्राप्त करने के लिए अनुकूलन का प्रयोग किया जा सकता है—(1) अतिरिक्त अनुदेशन देना और (2) अतिरिक्त मार्गदर्शन अनुभव देना।

इसके अलावा सीधे अनुदेशन देना तथा अतिरिक्त मार्गदर्शन को अनुभव देना ही अनुकूलन है। जो ऐसे बालकों की सहायता कर सकता है, जिनकी स्मृति कमजोर है। अधिगम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए विषय की सामग्री को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित देना चाहिए तथा धीरे-धीरे अधि गम के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। अभ्यास के लिए पर्याप्त अवसर होने चाहिए। अध्यापक अभ्यास के समय बालकों की कार्य क्षमता का निरीक्षण कर सकता है। इस कार्य में कोई सहायक अथवा सहयोगी भी सहायता कर सकता है। स्वतः ठीक करने वाली सामग्री की भी प्रयोग कर सकते हैं। परिवर्तन के प्रस्तावों में निम्नलिखित बातें भी शामिल है।

(1) पढ़ने की क्षमता को कम करना, (2) पढ़ने के निम्न स्तर पर पढ़ने योग्य सामग्री को दूसरी सामग्री द्वारा बोलना, (3) सूचनाओं को अन्य साधनों द्वारा प्रस्तुत करना; जैसे— भाषण, कक्षा में विचार-विमर्श, देखने योग्य सामग्री; जैसे— चित्र, मानचित्र, स्लाइड्स आदि। (4) सुलेख कार्यों में असमर्थ बालकों के लिए श्यामपट्ट, स्लेट, स्टेन्सिल का प्रयोग। ऐसे बालक जो सुलेख में मन्द गति रखते हैं उनके लिए सुलेख कार्य का परिणाम कम करना अथवा समय सीमा को अधिक करना, (5) परीक्षा तथा कार्यों का प्रारूप कुछ इस प्रकार बनाना कि लेखन सम्बन्धी कार्य कम हो जाये। जैसे वैकल्पिक प्रश्नों का प्रयोग, निबन्ध रूप में प्रश्न न पूछ कर दिये गये प्रारूप

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

## NOTES

को बालकों से पूरा कराया जाये तथा (6) बालकों का मार्गदर्शन किया जाये कि जहाँ तक सम्भव हो, केलकुलेटर का प्रयोग कर सकते हैं तथा अन्य उपकरणों की भी मदद ले सकते है।

### शिक्षण की सहायक सामग्री का अनुकूलन (Adapting of Supportive Aids of Teaching)

इसके अध्यापक सामान्य एवं बाधित बालकों की शिक्षा में कठिन प्रत्ययों को कक्षा में पढ़ाने के लिए अधिगम अनुभवों का प्रयोग कर सकता है। उदाहरण के लिए- अध्यापक श्रवण बाधित बालक की शिक्षण के लिये बालकों की वाणी समस्या को दूर करने के लिए ध्वनियुक्त टेप का प्रयोग कर सकता है। टेप में सुनने योग्य ध्वनि होनी चाहिए जिससे श्रवण बाधित बालकों द्वारा वाणी के प्रयोग का उचित विकास हो सके। इसके अलावा टेप की हुई ध्वनि से मेल रखती हुई पठन सामग्री ध्वनि पर आधारित बालकों को प्रदान करनी चाहिए। इस प्रकार अध्यापक कम सुनने वाले बालक, अथवा श्रवण बाधित बालकों के अक्षरों के अधिगम में सहायता कर सकता है तथा प्रत्येक ध्वनि के अधिगम के लिए शुद्ध उच्चारण करने में अध्यापक बालकों की सहायता कर सकता है। इसी प्रकार दृष्टिहीन बालकों को कक्षा में अधिगम प्रत्ययों को सिखाने के लिए प्रविधियों की सामग्री को दिया जा सकता है। उदाहरण के लिये- यदि अध्यापक पहाड़ियों और चट्टानों के सम्बन्ध में शिक्षण दृष्टि हीन बालकों को दे रहा है तो वहीं समुचित प्रविधियों का प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार सामान्य बालक भी कक्षा में शिक्षा के दौरान पहाड़ी तथा चट्टान में अन्तर समझ सकते है। अस्थि बाधित बालकों को किसी भी तरह की सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। सामान्य कक्षा में सामान्य बालकों के साथ अधिगम प्रत्ययों की अस्थि बाधित बालकों को शिक्षा प्रदान की जा सकती है। परन्तु ऊपर के हाथ-पैर से बाधित बालकों की प्रारम्भिक अधिगम शिक्षण निपुणताओं की प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सहायक सामग्रियाँ ऐसे बालकों की शिक्षा में उपयोगी होती हैं तथा अधिगम शिक्षा को आसान बना देती हैं। उदाहरण के लिए-एक बालक जिसके भुजा (हाथ) नहीं है तो उसे लेखन में निपुणता प्राप्त करने में कठिनाई होती है ऐसी परिस्थिति में अध्यापक (लँगड़े) हाथ-पैर के अनुकूलन में उपकरण सामग्री को प्राप्त करने में बालक की मदद कर सकता है। अध्यापक बालकों को मोटे पेन अथवा

अतिरिक्त अभ्यास पुस्तकें दी जा सकती हैं। जिससे शिक्षा से सम्बन्धित निपुणताओं का अभ्यास पर्याप्त रूप से बालकों को कराया जा सकता है।

## व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना

### (Individualised Education Plan) [I E P]

व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना का संबंध ध्यानपूर्वक सुनियोजित, सुसंगठित रूप से लागू की गई तथा उद्देश्यपूर्ण ढंग से मूल्यांकित की गई योजना से है जो बच्चे को व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाई जाती है। बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए यह व्यक्तिगत योजना अध्यापक को यह सुनिश्चित करने में सहायता करती हैं कि उद्देशित बच्चे विद्यालय में समुचित अध्ययन कर उन्नति कर पा रहे हैं या नहीं। भली प्रकार लिखी व नियोजित की गई व्यक्तिगत योजना एक अध्यापक की विशेष क्षेत्रों या उद्देशित क्षेत्रों में योजनाबद्ध, संरचनात्मक तथा श्रृंखलाबद्ध अधिगम में सहायता करती है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि विद्यालय में सब कुछ, जो बच्चा सीखता है, सीखेगा या सीखना चाहिए, उसके लिए बनाई गई व्यक्तिगत योजना में सम्मिलित होना चाहिए जबकि व्यक्तिपरक योजनाएँ दिये गये समय में बालक के अधिगम पर मुख्य दबाव देते हुए ध्यान केन्द्रित करती है। अगर इन्हें उपयुक्त ढंग से प्रयोग किया जाये तो यह प्रतिदिन के शिक्षण में उपयोगी शिक्षण सहायक सामग्री हो सकती है। इसका सुनियोजित क्रियान्वयन उपयोगी प्रभाव डालता है। व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना बालक विशेष के लिए अत्यन्त सहायक एवं लाभकार हो सकती हैं।

## व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना के उद्देश्य

व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना के उद्देश्य यह सुनिश्चित करने के लिए होते हैं कि-

- अध्यापकों की जवाबदेही का कुछ स्तर बालक की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
- विद्यालय के अन्दर सभी लोगों को एवं बालक संबंधित धर एवं विद्यालय के बीच का संवाद उपयोगी हो।
- बच्चों की कमजोरियाँ कम करने वाला हो।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

- निर्धारित तथा उद्देशित क्षेत्रों में बालक की निपुणता विकसित करने वाला हो।
- बालक व्यवहार में परिवर्तन करे।
- बालक में स्थिति के अनुसार ढालने या व्यवहार करने की भावना विकसित करने वाला हो।

### उद्देश्य की पूर्ति- किसका दायित्व

व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना एक जटिल प्रक्रिया है। यह किसी एक व्यक्ति विशेष की जिम्मेदारी नहीं है। ठीक उसी प्रकार जैसे एक सफल समावेशी अनेक लोगों पर निर्भर करता है, जो बच्चों विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति या कल्याण से जुड़े हुए है, व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना में भी बहुत से लोगों का समूह सम्मिलित होता है। यह पेशेवर लोगों के समूह का सांझा दायित्व है जो व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना समूह का गठन करते है। अधिकतर पाश्चात्यकृत देशों में मुख्याध्यापक, शिक्षा हेतु नियमित अध्यापक या कक्षा अध्यापक, विशिष्ट शिक्षक, बालक के अभिभावक तथा विशेषज्ञ डॉक्टर या मनोचिकित्सक मिलकर व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना की टीम का गठन करते है। परिणाम देना इन सबका सामुहिक उत्तरदायित्व होता है। भारत में विशेषज्ञ डॉक्टर या मनोवैज्ञानिक बच्चे का समुचित मूल्यांकन करने के लिए हमेशा उपलब्ध नहीं होते हैं क्योंकि यहाँ इस प्रकार की व्यवस्था की और ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में क्या हमें बालक की विशेष आवश्यकताओं के लिए इस प्रकार के व्यक्तिगत कार्यक्रम की और ध्यान नहीं देना चाहिए? आरम्भ में, भारतीय विद्यालयों में फ्रेंच समूह में निम्नलिखित सदस्य हो सकते है तथा जब कभी भी एवं जहाँ कहीं भी विशेषज्ञ डॉक्टरों व मनोचिकित्सकों की उपलब्धता होगी, हम उनकी सेवा का सदुपयोग कर पायेंगे-

### IEP समूह

- मुख्यध्यापक या प्राचार्य
- कक्षा अध्यापक
- विशेष अध्यापक
- बालक के अभिभावक

## IEP के तत्व

IEP टीम निम्नलिखित तत्वों को लेकर गठित हो सकती है-

- (i) बालक के प्रदर्शन के वर्तमान स्तर की रिपोर्ट।
- (ii) बालक के सीमित-अवधि उद्देश्यों के साथ-साथ वार्षिक उद्देश्यों की रिपोर्ट।
- (iii) बालक को दी जाने वाली विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं की रिपोर्ट तथा वह सीमा जिस तरह एक बालक नियमित शैक्षिक योजना में भाग लेने योग्य हो जाये।
- (iv) ऐसी सेवाओं के आरम्भ एवं अनुमानित के लिए निर्धारित अवधि ।
- (v) उपयुक्त मूल्यांकन प्रक्रियाएँ अनुसूचियाँ- यह सुनिश्चित करने के लिए एक निर्देशात्मक उद्देश्यों की पूर्ति कर ली गई हैं या नहीं।

## IEP के चरण

**प्रथम चरण-** पुनर्विचार या स्थानांतरण या रेफरल- बालक पर विचार किया जाता है कि उसकी विशिष्ट आवश्यकताएँ हैं। ऐसे बालक को गतिविधियों में सम्मिलित द्वारा लिखित रूप में उल्लिखित किया जाना चाहिए अगर रेफरल अध्यापक द्वारा किया जाता है तो इस संदर्भ में अभिभावक को सूचित कर देना चाहिए।

**द्वितीय चरण-** मूल्यांकन- मूल्यांकन बच्चे की शिक्षा संबंधित सूचनओं को सुनियोजित तरीके से एकत्रित करने की प्रक्रिया होती है। इसका प्रमुख उद्देश्य यह जानना होता है कि बालक क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता हैं, उसकी ताकत क्या है, उसकी सीमाएँ एवं समस्याएँ क्या है? मूल्यांकन तीन प्रकार का हो सकता है-

- (i) चिकित्सीय खामियाँ या व्याधि,
- (ii) मनोवैज्ञानिक अनुकूलता का स्तर,
- (iii) शैक्षिक स्तर।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

## NOTES

चिकित्सीय मूल्यांकन बच्चे की कमियों या बीमारियों की और संकेत करता है। यदि बच्चे में कोई बिमारी है और नहीं जाँची जाती तो वह बच्चे पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन बालक के अनुकूलन स्तर प्रवृत्ति एवं रूचि के स्तर को समग्र लाता है। शैक्षिक मूल्यांकन बालक के शैक्षिक स्तर और उसकी अधिगम शैली की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है।

मूल्यांकन करने के लिए बालक के पहले से उपलब्ध आँकड़ों को पुनः जाँचा परखा जाता है। कमेटी का प्रधान यह सुनिश्चित करता है कि क्या अधिक सूचना एकत्रित किये जाने की आवश्यकता है ताकि संभव सेवाओं के सम्बन्ध में विचार किया जा सके, अगर ऐसा है तो कौन-सी सूचना चाहिए अगर पर्याप्त सूचना पूर्व में ही उपलब्ध हैं तो कमेटी की बैठक बुलाई जाती है ताकि मूल्यांकन रिपोर्ट पर चर्चा की जा सके। अगर पूर्व में एकत्रिक की गई सूचना उपलब्ध नहीं है या सूचना वर्तमान मूल्यांकन के लिए पर्याप्त नहीं है तो नवीन आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं।

इस विषय में एक अन्य बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूल्यांकन करने वाली टीम बहु-अनुशासित होनी चाहिए यह पक्षपात दूर हो। उसका जातीय, संस्कृति, सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रति कोई भेदभाव न हो। मूल्यांकन के आंकड़े एकत्रित होने पर तैयार रिपोर्ट पर चर्चा कमेटी की बैठक बुलाई जाये। अभिभावक यह निर्णय करें कि एकत्रित किये गये आंकड़ों पर आधारित रिपोर्ट विश्वसनीय हैं या नहीं।

**तृतीय चरण- योजना-** मूल्यांकन प्रक्रिया समाप्त होने पर कमेटी उस सम्बन्ध में एक योजना बनाती है। यह मासिक, त्रैमासिक आधार पर वार्षिक या सीमित अवधि उद्देश्यों का निर्धारण करती है। कमेटी यह भी योजना बनाती है कि कौन-सी सेवाएँ प्रदान जानी चाहिए जैसे कि भाषण प्रशिक्षण तथा निदानात्मक निर्देशन आदि।

**चतुर्थ चरण -क्रियान्वयन-** एक पूर्ण रूप से सुनियोजित की गई योजना के बाद उन सेवाओं की योजना के अनुरूप क्रियान्वित किया जाता है। इसमें सभी सकारात्मक के साथ ही नकारात्मक पक्षों को ध्यान में रखा जाता है।

**पंचम चरण-पुनर्मूल्यांकन-** पुनर्मूल्यांकन क्रियान्वयन प्रक्रिया का अभिन्न भाग होता है। यह उद्देश्य आधारित होना चाहिए। पुनर्मूल्यांकन मासिक,

## NOTES

त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक आधार पर किया जा सकता है। यह ये दर्शाने के लिए होता है कि क्या बालक संतोषजनक उन्नति कर रहा है या नहीं, अगर नहीं तो सेवा प्रदान करने में कौन-से परिवर्तन किये जाने चाहिए।

**अन्तिम चरण-पूर्णतया या सम्पन्न होना-** सभी सेवाएँ तब तक जारी रहनी चाहिए जब तक कमेटी यह निर्णय नहीं कर लेती कि उनकी अब कोई और अधिक आवश्यकता नहीं है। तब, अगर उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया गया है तो कमेटी का कार्य पूर्ण हो जाता है। ये उद्देश्य व्यवहार परिवर्तन या शैक्षिक स्तर में सुधार या व्यवहार के अनुकूलन के विकास से संसोधित हो सकते हैं।

**IEP का महत्व** - व्यक्तिपरक शैक्षिक योग्यता का महत्व केवल विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालक के लिए ही नहीं, बल्कि अध्यापकों तथा अभिभावकों के लिए भी इसका बड़ा महत्व है। अध्यापन के परम्परागत आयामों में बालक की असफलता के लिए अध्यापक जबाबदेह नहीं होता था। लेकिन IEP कुछ स्तर तक अध्यापकों की जबाबदेही सुनिश्चित करती है।

परम्परागत शिक्षा प्रणाली में घर तथा विद्यालय, अध्यापक एवं अभिवाहक के मध्य कोई जुड़ाव या रिश्ता नहीं होता था। आमतौर पर अध्यापक अलग रहकर कार्य करता था। IEP नियमित अध्यापक एवं संसाधन अध्यापक एवं अन्य के मध्य परस्पर संचार को प्रोत्साहित करती है। समावेशी शिक्षा के लिए अध्यापक तथा अभिभावकों के मध्य बेहतरीन सहयोग होना चाहिए।

IEP बालक में अनिश्चित व्यवहार परिवर्तन को सुनिश्चित करती है और इच्छित व्यवहार के सीखने एवं अनुकूलन में सुधार लाने में सहायता करती है।

**कुछ कठिनाईयाँ-** भारतीय विद्यालयों में ने केवल एक दुर्लभ विषय है बल्कि एक अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है। यहाँ तक कि जरूरतमंद बालकों को विशेष शिक्षा देने वाले विशिष्ट विद्यालय भी IEP को लागू करने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते हैं। निम्नलिखित कुछ मुश्किलें हैं जो IEP को लागू करने में समक्ष आती हैं-

- (i) IEP के सिद्धान्त एवं क्रियान्वयन में अध्यापकों का समुचित प्रशिक्षित न होना।

## NOTES

- (ii) अधिकांश अध्यापकों की इस योजना पर मजबूत पकड़ का अभाव।
- (iii) IEP टीम के गठन के लिए पेशेवर विशेषज्ञ, डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक या पुनर्वास अधिकारियों की उपलब्धता का न होना।
- (iv) मुख्य अध्यापकों में नेतृत्व का विकास।
- (v) अभिभावकों का, अधिकतर मामलों में, फैसला लेने में शामिल न होना।
- (vi) समय खर्चीली प्रक्रिया है। इसमें धैर्य की आवश्यकता होती है। पर हमारे अभिभावक इतने महत्वाकांक्षी होते हैं कि वे परिणाम की शीघ्र-अतिशीघ्र आशा करते हैं।
- (vii) सरकार का की योजना तथा क्रियान्वयन के सम्बन्ध में स्पष्ट निर्देश का न होना।

### प्रबंधकीय तथा जीवनपर्यन्त शिक्षा

#### अक्षमता के अध्ययन के विभिन्न उपागम

चिकित्सकीय उपागम विकलांगता/अक्षमता के अध्ययन के कई उपागम हैं जो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण एवं मान्यताओं के आधार पर विकलांगता का अध्ययन करते हैं। अक्षमता के अध्ययन का सबसे प्राचीन मॉडल है चिकित्सकीय मॉडल जिसकी मान्यता है कि अन्य बीमारियों की भाँति ही अक्षमता/विकलांगता भी किसी व्यक्ति के अंदर किसी प्रकार की जैविक कमी से होती है जिसे दवाओं से ठीक किया जा सकता है।

सामाजिक उपागम: अक्षमता के अध्ययन का सामाजिक उपागम अक्षमता को एक सामाजिक वैविध्य (Social Diversity) के रूप में देखता है तथा उसे स्वीकार करते हुए, उसके सामाजिक समाधान तथा सामाजिक भागीदारी से समाधान पर बल देता है। सामाजिक उपागम अक्षमता युक्त बालकों को समाज का एक विभिन्न अंग मानता है अतः उनके अलग "पुनर्वास" की बजाए समुदाय आधारित पुनर्वास (Community Based Rehabilitation) की बात करता है। यह बच्चे को प्राथमिक मानता है तथा उसके अनुसार के वास एवं पुनर्वास (Habilitation and Rehabilitation) में समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानता है।

## अक्षमता के चिकित्सकीय और सामाजिक मॉडल की तुलना

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं

| क्र.स. | चिकित्सा मॉडल   | सामाजिक मॉडल  |
|--------|---|---|
| 1      | दोष बच्चे में हैं   | बच्चा महत्वपूर्ण है                                 |
| 2      | निदान की आवश्यकता   | विशेष आवश्यकताओं के पहचान की आवश्यकता               |
| 3      | बच्चे का वर्गीकरण विभिन्न कमियों के आधार पर                       | विभिन्न व्यवधानों की पहचान और उनके समाधान पर जोर    |
| 4      | बच्चे की अक्षमता महत्वपूर्ण/ प्राथमिक।                            | बच्चा महत्वपूर्ण उसके आवश्यकतानुसार कार्यक्रम विकास |
| 5      | परीक्षण और सतत् निरीक्षण की आवश्यकता                              | संसाधन उपलब्ध कराना।                                |
| 6      | समाज से विलगाव एवं वैकल्पिक समाधान                                | माता-पिता एवं अन्य व्यवसायियों का विशेष प्रशिक्षण   |
| 7      | समावेश यदि सामान्यता की प्राप्ति अन्यथा हमेशा के लिए समाज से अलग। | बच्चों का उनकी वैयक्तिक भिन्नता के साथ स्वागत।      |
| 8      | समाज का कोई सरोकार नहीं।  | समाज की महत्वपूर्ण भूमिका।                          |

## NOTES

### “लेबलिंग” के लाभ तथा हानियाँ

हालाँकि किसी व्यक्ति पर “विकलांगता” का ठप्पा (Label) लगाने का उसके संपूर्ण जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन उसके कुछ सकारात्मक पहलुओं की वजह से यह आवश्यक है। आइये हम जानें कि लेबलिंग (labelling) का किसी व्यक्ति के जीवन पर क्या नकारात्मक तथा सकारात्मक प्रभाव हो सकता है। हेवर्ड (2006) के अनुसार लेबलिंग के निम्नलिखित सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं:-

### “लेबलिंग” के नकारात्मक पहलू

- एक सामाजिक धब्बा है जो व्यक्ति के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता।
- यह प्रभावित व्यक्ति को भेद भाव का शिकार बना देता है।

## NOTES

- (iii) व्यक्ति स्वयं को असामान्य महसूस करने लगता है।
- (iv) कभी-कभी व्यक्ति हीन भावना का शिकार हो जाता है।
- (v) प्राथमिक रूप से बालक के अंदर “कुछ गलत” होने का एहसास
- (vi) सामाजिक स्तर में कमी एवं भेदभाव

### लेबलिंग के सकारात्मक पहलू

- (i) विशेष शिक्षा की अर्हता के लिए
- (ii) उपलब्ध सामाजिक तथा सरकारी सहायता के लाभ के लिए
- (iii) शैक्षणिक एवं अन्य
- (iv) अतिरिक्त सेवाओं की आवश्यकताओं के निर्धारण के लिए।
- (v) विकलांगता की गम्भीरता और उसके प्रभावों के पूर्वानुमान के लिए।
- (vi) सहायता समूहों की सदस्यता एवं निर्माण के लिए।
- (vii) उपयुक्त कानून एवं नीति निर्धारण के लिए
- (viii) सुरक्षात्मक सामाजिक अनुक्रिया के लिए

### समावेशी शिक्षा का सक्षिप्त इतिहास (अधिगम अक्षमता का संदर्भ)

आजकल आप समावेशी विकास (Inclusive Growth) सामाजिक समावेश (Social Inclusion), समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) की चर्चा हर जगह सुन रहे होंगे, तथा तब आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा कि आखिर ये “समावेश” है क्या? इसकी आवश्यकता क्या है? किसका समावेश किया जाना चाहिए? समावेश की यह प्रक्रिया क्या हो सकती है? समावेश में किसी भूमिका महत्वपूर्ण है आदि-आदि। उपरोक्त प्रश्नों के समाधान के लिए हमें मानवधिकारों की वैश्विक धोषणा की ओर जाना होगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ की विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों की धोषणा के (1975) अनुसार

“विकलांग व्यक्तियों को, उनके “आत्म सम्मान” के लिए सम्मान पाने का प्राकृतिक अधिकार है। विकलांग व्यक्तियों को भी उनके हम उम्र व्यक्तियों के समान सभी मूल अधिकार, जिसमें जिन्दगी को पूर्णता एवं सम्मान से जीना सम्मिलित है, प्राप्त है चाहे उनका मूल (जाति/वंश) प्रकृति अथवा उनकी विकलांगता एवं अक्षमता की गंभीरता कुछ भी क्यों ने हो।” [Article -3]

## NOTES

संयुक्त राष्ट्र संध की इस धोषणा के बाद सभी सदस्य राष्ट्रों ने सहमति जतायी कि अक्षमता/वातावरण के ख्याल किये बिना, विकलांग व्यक्तियों को भी वे सारे मूल अधिकार प्राप्त होने चाहिए जो एक सामान्य नागरिक को उपलब्ध होते हैं। मानवधिकारों तथा तत्पश्चात, विकलांग व्यक्तियों के अधिकारी की इस धोषणा को आगे “बालकों के अधिकार” पर हुए संयुक्त राष्ट्र के अन्वेशन (1989) में “समावेशी शिक्षा” की जड़े छुपी हैं।

बालकों के वैश्विक अधिकारों की इस धोषणा के अनुसार “एक विकलांग बच्चे की विशेष आवश्यकता की पहचान करते हुए, उन्हें उपयुक्त सहायता देना ताकि उन्हें प्रभावित शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके, और बच्चे के अनुकूल, उसका पूर्ण सामाजिक एकीकरण एवं पूर्ण विकास संभव हो। [Article 23]

उपरोक्त दोनों धोषणाओं से स्पष्ट है कि समाज में सभी व्यक्तियों की पूर्ण भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण तथा तदुसार सभी बालकों को बिना किसी भेदभाव के अपनी संस्कृति में विकसित होने का अवसर मिलना चाहिए ताकि वे उसके मूल्यों को आत्मसात् कर सकें एवं उसके विकास में योगदान कर सकें।

सलमांका कान्फ्रेंस (1994) के अनुसार,

- सभी बालकों को शिक्षा को मौलिक अधिकार है तथा उन्हें एक स्वीकार्य स्तर तक सीखने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
- सभी शैक्षिक निकायों की संरचना और कार्यक्रमों को क्रियान्वयन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे बालकों की वैयक्ति भिन्नता और विविध आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो सकें। विशेष



## NOTES

- शैक्षणिक आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालय अवश्य उपलब्ध होने चाहिए।
- नियमित समावेशी विद्यालय
    - iv. विभेदक प्रवृत्तियों को समाप्त करने में;
    - v. एक समावेशी समाज के निर्माण में एवं
    - vi. विद्यालय सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सबसे प्रभावी साधन हो सकते हैं।
  - सामान्य/आम विद्यालयों में प्रभावी अध्ययन की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि अधिकांश बच्चे शिक्षा का लाभ ले सकें तथा इस प्रकार शिक्षा को प्रभावी और अल्प व्ययी (Cost-Effective) बनाया जा सके।

### अधिगम अक्षमता का संक्षिप्त इतिहास

| वर्ष      | घटना  | शैक्षणिक निहितार्थ   |
|-----------|---|--|
| 1950-1960 | अधिकांश सार्वजनिक विद्यालयों ने विभिन्न विकलांगता यथा मानसिक मंदता, अस्थि विकलांगता, संवेदी विकलांगता आदि से ग्रस्त बालकों के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम का आरम्भ कर दिया गया परंतु कई ऐसे छात्र जिन्हें गंभीर अधिगम कठिनायी थी पर इनमें से किसी श्रेणी में नहीं आते थे, उनके लिए कोई व्यवस्था नहीं की गयी। | अपने बच्चों की अधिगम से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए अभिभावकों ने वैकल्पिक सेवाओं मनोवैज्ञानिक डॉक्टर, आदि से संपर्क करना शुरू किया तथा तदनुसार ब्रेन डेमेज, एम.वी.डी. मितिमल ब्रेन डिसफंक्शन डिस्लेक्सिया आदि शब्द उन बच्चों के लिए प्रयोग किये जाने लगे जो किसी अक्षमता की श्रेणी में तो तो नहीं आते थे पर उन्हें अधिगम से संबंधित गंभीर समस्या थी। |
| 1963      | सैमुअल क्रिक ने, अभिभावकों के समूह को संबोधित करते हुए 'अधिगम अक्षमता', शब्द का प्रयोग उन बच्चों के लिए किया जिन्हें अधिगम से संबंधित गंभीर समस्याएँ थी।  | अभिभावकों ने इस शब्द को पसंद किया तथा उसी शाम को अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के संगठन (Association for Children with LD) का गठन किया।   |

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

|      |   |  |
|------|---|--|
| 1966 | एक राष्ट्रीय टास्क फोर्स ने 99 विशेषतायें न्यूनतम मस्तिष्क अभिक्रियात्मकता (Mineral Brain Dysfunction) के बताये।  | इससे यह खतरा उत्पन्न हो गया कि सभी अधिगम की कठिनाई से ग्रस्त बालकों से ये सारी विशेषतायें उम्मीद की जाने लगी जब कि यह समूह वृहत भिन्नताओं वाला है।   |
| 1968 | विकलांग बच्चों की राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् ने कॉंग्रेस में अधिगम अक्षमता की एक परिभाषा प्रस्तुत की।   | इस परिभाषा को बाद में आइडिया; में लिया गया और इन बच्चों हेतु सहयोग के लिए फंड का प्रावधान किया गया।  |
| 1969 | द चिल्ड्रेन विथ लर्निंग डिसेबिलिटी ऐक्ट (PL91-230) काँग्रेस के द्वारा पारित किया गया।   | इस कानून ने पाँच साल के लिए धन आबंटित किया अधिगम अक्षमता में शिक्षक प्रशिक्षण एवं मॉडल डेमोस्ट्रेशन कार्यक्रम बनाने का प्रयास किया गया।  |
| 1975 | कॉंग्रेस ने IDEA (PL 94-142) स्वीकृति प्रदान की।  | अधिगम अक्षमता को इसके एक भाग में शामिल किया गया।   |
| 2001 | बड़ी संख्या में बच्चों की पहचान अधिगम अक्षमता प्राप्त होने की वजह से यू.एस.ए. के विशेष शिक्षा कार्यालय ने अधिगम अक्षमता पर वाशिंगटन में एक समिति आयोजित किया। | नौ श्वेत पत्र अधिगम अक्षमता के नैदानिक निर्णय, वर्गीकरण, शीघ्र पहचान, आदि पर जारी किये गये, तथा इसे अक्षमता के रूप में स्वीकार किया गया।   |
| 2004 | IDEIA 2004 ने अधिगम अक्षमता के नैदानिक मानदंडों में परिवर्तन किया।  | स्कूल को इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं रही कि एक बच्चे की बौद्धिक क्षमता तथा उसकी प्राप्तियों में अंतर की गंभीरता कितनी है। उन्हें इस प्रक्रिया का प्रयोग करने की छूट दी गयी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि बच्चा मूल्यांकन के एक भाग के रूप में वैज्ञानिक अनुसंधान आधारित हस्तक्षेप पर क्या अनुक्रिया देते हैं। |

भारतीय परिदृश्य: अधिगम अक्षमता की भारतीय परिदृश्य में बड़ी विचित्र स्थिति है। एक और तो भारत के वर्तमान कानून विकलांग जन कानून, 1995, भारतीय पुनर्वास परिषद् कानून, 1992, राष्ट्रीय न्याय कानून, 1999 कोई भी अधिगम अक्षमता को अक्षमता नहीं मानता वहीं दूसरी तथा भारतीय

पुनर्वास परिषद् अधिगम अक्षमता के कई शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रही है।

## NOTES

### विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा, समावेशी शिक्षा

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त छात्रों के शैक्षणिक नियोजन के विकल्प

- i. विशेष शिक्षा
- ii. समेकित शिक्षा
- iii. नियमित/समावेशी शिक्षण

### विशेष शिक्षा

विशेष शिक्षा प्रायः व्यक्तिगत अनुदेष्टनात्मक कार्यक्रम है। इसका प्रमुख आधार हैं बच्चे की वर्तमान क्रियाशीलता जिसके आधार पर शिक्षण के लक्ष्य, शिक्षण सामग्री शिक्षण विधि, शिक्षण की तकनीय आदि निर्धारित होती है। विशेष शिक्षा में इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चे को व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उनके अधिकतम स्तर तक पहुँचाना है।

विशेष शिक्षा का तात्पर्य है विशेष आवश्यकता युक्त बालक को (सामान्य से अलग) विशेष वातावरण में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा, विशेष संरचित पाठ्यक्रम, विशिष्ट तकनीकों तथा विधियों तथा विशेष रूप से निमित्त शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करके शिक्षा देना। यह हालाँकि गंभीर अक्षमता युक्त बालकों को समाज एवं समुदाय से अलग करती हैं, के कारण वर्तमान समय में उपयुक्त नहीं है। इसकी विशेष ताएं और सीमाएं निम्नलिखित है:

विशेष शिक्षा के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं:

- i. सभी बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान।
- ii. यह आधारभूत जीवनयापन कौशल सिखाता है ताकि व्यक्ति/बालक स्वावलंबी हो सकें।
- iii. यह बालकों को एक सुरक्षित को एक सुरचित अधिगम कार्यक्रम का आधार देता है।

iv. बच्चे के बौद्धिक विकास में सहायक।

v. बच्चे के माता-पिता को उपयुक्त सेवाएं प्राप्त करने में सहायक।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

विशेष शिक्षा की कमियों जिन्होंने समावेशी शिक्षा की नींव रखी:

- i. विशेष शिक्षा की उच्च लागत, जो गरीब बालक वहन नहीं कर सकते।
- ii. सामान्यतः शहरी क्षेत्रों में विशेष शिक्षा की उपलब्धता जो सिर्फ उच्च आयवर्ग से आने वाले बालकों को उपलब्ध थीं।
- iii. विशेष शिक्षक तथा सामान्य शिक्षकों के मध्य "विशेष ज्ञता" के आदान-प्रदान का अभाव।

## NOTES

### समेकित शिक्षा

#### समावेशी शिक्षा

समेकित शिक्षा का तात्पर्य है अक्षमताग्रस्त बालकों को कुछ समय के लिए सामान्य बालकों के साथ अंतःक्रिया का अवसर देना जैसे लंट टाइम में, खेल के समय, विभिन्न सामाजिक अवसरों पर आदि परंतु उनका संपूर्ण शिक्षण का कार्य भिन्न-भिन्न होता है चाहे दोनों विद्यालय अलग-अलग हों या विशेष बालक की एक ही कैम्पस में अलग कक्षा हो। यह इस मान्यता पर आधारित है कि यदि अक्षमता युक्त बालक कुछ उपयुक्त सामाजिक व्यवहार सीख ले तब, उसे सामान्य कक्षा में भेजा जा सकता है। यह विशेष शिक्षा से बेहतर विकल्प है लेकिन वर्तमान मानवधिकारों के दौर में प्रासंगिक नहीं है क्योंकि गुणवर्त्तापूर्ण शिक्षा सभी बालक का अधिकार है।

समेकित शिक्षा का तात्पर्य सामान्य अर्थों में "बच्चे के सामान्य स्कूल में जाने" से है। जबकि समावेशी शिक्षा का अर्थ विद्यालय में बच्चे की पूर्ण भागादारी से होता है।

#### समेकित शिक्षा के लाभ:

- i. बच्चे का अच्छा समाजीकरण
- ii. बच्चे के सामाजिक एकीकरण का बढ़ना
- iii. बच्चे के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति सकारात्मक

## NOTES

- iv. अभिभावकों की बालक की शिक्षा में अधिक भागीदारी
- v. विशेष शिक्षा की अपेक्षा में व्यय
- vi. कुछ शोधों के अनुसार छात्रों की बेहतर उपलब्धि
- vii. संस्थानीकरण तथा आवागमन के खर्च में बचत

### समेकित शिक्षा की सीमायें

- i. सभी बालकों की आवश्यकता पूरी करने में संक्षम नहीं
- ii. सीमित संसाधनों पर अधिक दबाव
- iii. अभिभावकों, स्वयंसेवकों और अन्य बालकों द्वारा सहयोग की आवश्यकता

### समावेशी शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में समावेश (समावेशी शिक्षा) का तात्पर्य है विद्यालय के पुनर्निर्माण की वह प्रक्रिया जिसके लक्ष्य सभी बच्चों को शैक्षणिक तथा सामाजिक अवसरों की उपलब्धता है। इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रम, परीक्षण, छात्र की उपलब्धियों का रिकार्ड, विभिन्न योग्यताओं के आधार पर छात्रों के समूहन, शिक्षण तकनीक, कक्षा के अंदर के कार्यकलाप आदि के साथ ही खेल तथा मनोरंजनात्मक क्रियाओं भी शामिल हैं (Mittlar 2000)।

यूनस्को के अनुसार, समावेशी शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जो;

- i. यह विश्वास करती है सभी बच्चे सीख सकते हैं तथा सभी बच्चों की अलग-अलग प्रकार की विशेष आवश्यकता होती है।
- ii. जिसका लक्ष्य सीखने की कठिनाइयों की पहचान तथा उनका प्रभाव न्यूनतम करना है।
- iii. जो औपचारिक शिक्षा से वृहत् अर्थ रखता है और धर समुदाय एवं घर से बाहर शिक्षा के अन्य अवसरों पर भी बल देता है।
- iv. अभिवृत्तियों, व्यवहारों, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम एवं वातावरण को बदलने की कालत करता है ताकि सभी बालकों की विशेष आवश्यकतायें पूरी हो सकें।

- v. एक स्थिर गति से, चलन वाली एक गतिशील प्रक्रिया है तथा समावेशी समुदाय को प्रोन्नत करने के लिए प्रयुक्त विभिन्न तरीकों का एक भाग है।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

### समावेशी शिक्षा की विशेषताएँ -

- i. विद्यालय व्यक्तिगत भिन्नताओं को सीन में रखते हुए सभी बालकों के लाभ के सिद्धांत पर काम करते हैं। विद्यालय की अभिवृति में अक्षमतायुक्त बालकों के प्रति सकारात्मक परिवर्तन।
- ii. विशेष विद्यालयों की अपेक्षा कम खर्च का विकल्प
- iii. मातापिता पर कोई अतिरिक्त व्यय नहीं
- iv. अक्षमता युक्त बालकों के सामाजिक कल्याण पर व्यय में कमी
- v. अक्षमतायुक्त बालकों सहित अन्य सभी बालकों की उपलब्धियों में वृद्धि
- vi. विशेष बालक का उन्नत सामाजिक समायोजन
- vii. समावेशी शिक्षा का किफायती (ब्वेज मीमिबजपअम) होना
- viii. स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करके व्यय में कमी संभव
- ix. अक्षमता युक्त बालकों को अपेक्षाकृत वृहत पाठ्यक्रम उपलब्ध

### सीमायें

- i. पाठ्यक्रम अनुकूलन का अतिरिक्त व्यय
- ii. शिक्षण सामग्री का अतिरिक्त व्यय
- iii. शिक्षक में समावेशी शिक्षा हेतु उपयुक्त कौशल विकास पर व्यय
- iv. सामान्य एवं विशेषज्ञ शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या
- v. अभिभावक तथा समुदाय की अधिक भागीदारी की आवश्यकता

### समावेशी शिक्षा के लाभ

भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अनुसार, समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को निम्नलिखित लाभ होते हैं:

### NOTES

## NOTES

- i. समावेशी शिक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बालकों को अपने हम उम्र और विकलांग बच्चों के साथ अंतःक्रिया का अवसर मिलता है, जो विशेष विद्यालयों में उपलब्ध नहीं है।
- ii. विशेष आवश्यकता वाले बालक अपने अविकलांग सहपाठियों से सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार सीखते हैं।
- iii. शिक्षक प्रायः विशेष आवश्यकता वाले बालकों से भी अपेक्षाकृत ऊँची अपेक्षा रखते हैं।
- iv. सामान्य एवं विशेष शिक्षा बिना किसी असमानता के सभी छात्रों से समान उम्मीद रखते हैं।
- v. विशेष आवश्यकता वाले बालकों को भी उनकी उम्र के उपयुक्त, शैक्षणिक विषयों के कार्यात्मक/प्रायोगिक भाग को सीखने का अवसर मिलता है जो विशेष विद्यालयों में प्रायः अनुपलब्ध है।
- vi. समावेशी शिक्षा के कारण यह संभावना बढ़ जाती है कि विशेष बालकों की सामाजिक भागादारी बढ़ेगी तथा जीवन पर्यन्त रहेगी।

इसके अतिरिक्त, समावेशी परिवेश में अध्ययन करने से, विशेष बालकों को निम्न लाभ होते हैं:

- i. विशेष बालकों के सहपाठियों के फलस्वरूप समाज में उनके प्रति एक सकारात्मक और स्वीकार्यात्मक अभिवृत्ति का विकास।
- ii. विशेष बालकों में एक स्वास्थ्य प्रतिस्पर्द्धा की भावना का विकास।
- iii. विशेष बालकों के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति में परिवर्तन।
- iv. विशेष बालक को “लघु समाज” का अनुभव।
- v. विशेष बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास।

समावेशी शिक्षा से न केवल विशेष आवश्यकता वाले बालकों को लाभ होता है, बल्कि इससे गैर विकलांग बालकों को भी लाभ प्राप्त होता है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं।

भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अनुसार, गैर विकलांग बालकों के लिए समावेशी शिक्षा के लाभ।

- i. विभिन्न अनुदेशात्मक गतिविधियों में सहपाठी-शिक्षा (चमंत ज्ञ. जवत) के रूप में काम करने का अवसर।
- ii. विशेष बालकों के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन।
- iii. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के दौरान विशेष बालकों का सहयोग करने का अवसर सामान्य बालकों में।
- iv. व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने, सहनशक्ति आदि का विकास करने में मदद मिलती है।
- v. सामान्य बालक कई सकारात्मक व्यवहार विशेष बालकों से सीख सकते हैं।
- vi. सामान्य बालकों को कई मानवता से जुड़े व्यवसाय और उनमें कैरियर की संभावनाओं यथा विशेष शिक्षा, फिजियोथेरापी, अँकुपेनल थेरापी आदि की जानकारी मिलती है।
- vii. सामान्य बालकों में अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों से प्रभावी संप्रेषण कौशल का विकास होता है।

यूनिसेफ पोजिशन पेपर के अनुसार समोवेशी शिक्षा के निम्नलिखित लाभ हैं:

#### सभी बच्चों को लाभ

- i. बच्चे ज्यादा आत्मविश्वासी तथा आत्म सम्मान युक्त हो जाते हैं।
- ii. वे विद्यालय के अंदर और विद्यालय के बाहर स्वतंत्र की प्रक्रिया सीखते हैं।
- iii. वे अपने सीखे हुए ज्ञान और समझ का अपने दैनिक जीवन में (सम्बन्धित खेल के मैदान में, धन में) उपयोग करता सीखते हैं।
- iv. वे अपने इस इतर सहपाठियों एवं शिक्षकों से ज्यादा सक्रिय एवं प्रसन्नतापूर्ण अंतः क्रिया सीखते हैं।
- v. वे अपने से भिन्न बालकों के प्रति संवेदनशीलता तथा उन भिन्नताओं को स्वीकार करते हुए उनके साथ अनुकूलित होता सीखते हैं।

#### NOTES



## NOTES

- vi. बच्चों के संप्रेषण कौशल का बेहतर विकास होता है, और बेहतर जीवन के लिए तैयार होते हैं।
- vii. वे अपने आप पर अपनी उपलब्धियों पर गर्व करना सीखते हैं।

### शिक्षकों को लाभ

- i. शिक्षकों के पास विभिन्न प्रकार के बालकों को पढ़ाने के भिन्न-भिन्न तरीके सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
- ii. शिक्षकों को वैयक्तिक भिन्नता युक्त कक्षा में शिक्षण तथा अधिगम के अलग-अलग नए तरीकों का ज्ञान होता है।
- iii. विभिन्न प्रकार की अधिगम संबंधी बाधाओं को कम करने का उपाय खोजते हुए, शिक्षकों को व्यक्तियों, बालकों एवं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है।
- iv. शिक्षकों के पास संप्रेषण के नए तरीकों की खोज का बेहतर अवसर होता है विभिन्न सहकर्मियों, अभिभावक, समुदाय के विभिन्न व्यक्तियों आदि से।
- v. नए विचारों/तरीकों का शिक्षण के दौरान प्रयोग करते हुए वे अधिगम ज्यादा रूचिकर, बना पाता है। अतः बच्चे और उनके अभिभावकों से शिक्षकों का सकारात्मक फीडबैक मिलता है।
- vi. शिक्षक अधिक संतुष्टि का अनुभव करते हैं क्योंकि सभी बालक अपनी समता को अधिकृत स्तर तक सफल हो सकते हैं।

### अभिभावकों को लाभ

- i. अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में भागीदारी बढ़ती है तथा अपने बच्चों का उनके अधिगम में वे अधिक सहयोग करते हैं।
- ii. अभिभावक उनके बच्चों को कैसे शिक्षा दी जा रही है, सीखते हैं।
- iii. शिक्षक विभिन्न अवसरों पर अभिभावकों के विचार पूछते हैं अतः अभिभावक को अपने अंदर सम्मान महसूस होता है तथा वे स्वयं

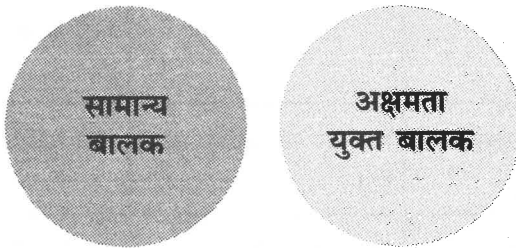
को बच्चे की शिक्षा का समान भागीदार मानते है।

- iv. अभिभावकों के पास भी ज्यादा लोगों तथा शिक्षक, अन्य अभिभावक, अन्य बालकों आदि से अंतः क्रिया का अवसर होता है तथा वे पारस्परिक सहयोग की भावना सीखते हैं।
- v. सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अभिभावक यह जाने लगते हैं कि उनके बच्चे अन्य सभी बच्चे के साथ, गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

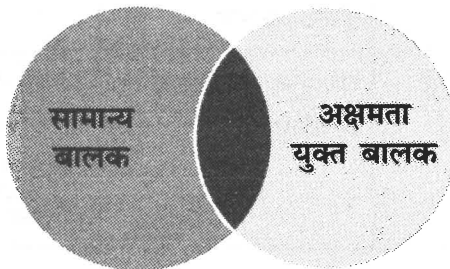
सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

### विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा, एवं समावेशी शिक्षा में अंतर



### विशेष शिक्षा



### समावेशी शिक्षा

## NOTES

| क्र. सं. | विशेष शिक्षा   | समेकित शिक्षा  | समावेशी शिक्षा  |
|----------|--|--|---|
| 1.       | अक्षमताग्रस्त बच्चों को विशेष सेवा देना।               | अक्षमता युक्त बालकों की विशेष आवश्यकताओं पर बल   | अक्षमता युक्त बालकों के अधिकारों पर बल।   |
| 2.       | अक्षमतायुक्त बालकों का विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण। | अक्षम बालकों में 'परिवर्तन' ताकि वे सामान्य बालकों के साथ शिक्षा ग्रहण करने योग्य हो सकें। | विद्यालय तथा वातावरण में परिवर्तन ताकि कोई भी बालक अपने आप को अक्षम महसूस न करें। |
| 3.       | विकलांगता एक व्यक्ति                                   | विकलांगता एक समस्या है।  | सभी व्यक्ति सक्षम हैं, परंतु व्यक्तिगत भिन्नताएं होती हैं।                        |
| 4.       | सभी सेवाएं सामान्य से                                  | विकलांग बालकों कि लाभ हेतु।  | सभी बालकों के हितार्थ।  |
| 5.       | इनपुट पर बल  | प्रक्रिया पर जोर।  | आउटपुट पर जोर।  |
| 6.       | अलग पाठ्यक्रम पर बल।                                   | विकलांग बच्चों को पाठ्यक्रम सिखाने की प्रक्रिया पर बल।                                     | पाठ्यक्रम की सामग्री छात्र के क्षमतानुसार।  |
| 7.       | दया की भावना पर आधारित।                                | दया मुक्त सामाजिकता पर आधारित।   | व्यक्ति के सामान्य मानवाधिकार पर आधारित समाज में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना।   |

### अधिगम अक्षमतायुक्त बालक के समावेशी शिक्षण में शिक्षक की भूमिका

सफल समावेशी शिक्षण में विशेषज्ञ शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है विद्यालय के नियमित सामान्य शिक्षक के साथ समन्वय स्थापित करने में चूंकि समावेशी शिक्षा के मत के अनुसार एक विशेष बालक को अधिकाधिक समय तक अपने हम उम्र बच्चों के साथ सामान्य कक्षा में ही सीखना है अतः विशेषज्ञ शिक्षक, एक सामान्य शिक्षक को बालकों की उन विशिष्ट आवश्यकताओं को समझने में सहयोग कर सकता है, जो सामान्य कक्षा में भी पूरी की जा सकती हो। कई बार अक्षमतायुक्त बालकों में कुछ

समस्यात्मक व्यवहार भी देखने को मिलते हैं। एक विशेषज्ञ शिक्षक सामान्य शिक्षक की सहायता समस्यात्मक व्यवहारों के प्रबंधन में भी कर सकता है।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा में विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिका

### NOTES

#### विशेषज्ञ शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका

- मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की पहचान करने में
- अतिरिक्त कक्षाओं के द्वारा मानसिक मंद/बौद्धिक अक्षम बालक की विशेष आवश्यकता पूर्ण करने में
- मानसिक मंद/बौद्धिक अक्षम बालक को संसाधन कक्ष शिक्षण प्रदान करने में तथा संसाधन कक्ष के विकास में
- मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पहुँच बनाने एवं पाठ्यक्रम निर्माण में
- शोध आधारित शिक्षण विधियों के अभिनव प्रयोग में

1. अधिगम अक्षमता की पहचान करने में विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिका- अधिगम अक्षमता एक अत्यंत जटिल संकल्पना है और इसकी पहचान करने में भी अत्यंत सावधानी की आवश्यकता होती है। आपने यह भी देखा है कि किसी बालक पर विकलांगता/अक्षमता को लेबल लगने के उसके जीवन पर क्या नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। अतः अधिगम अक्षमता की पहचान का कार्य एक कठिन कार्य है, जो एक विशेषज्ञ शिक्षक को ही करना चाहिए। उपरोक्त कार्य को करने में एक विशेषज्ञ शिक्षक निम्नलिखित का प्रयोग कर सकता है:

- i. मानक परीक्षणों के द्वारा (Using NRT's)
- ii. मानदंड आधारित परीक्षणों के द्वारा (Using CRT's)
- iii. अनौपचारिक पठन जाँच सूचियों द्वारा
- iv. पाठ्यक्रम आधारित मापन का प्रयोग कर के
- v. प्रत्यक्ष दैनिक मापन (Observation)

## NOTES

अधिगम अक्षमता की पहचान करने में, एक विशेषज्ञ शिक्षक को परिस्थितियों के अनुसार एकाधिक युक्तियों का प्रयोग करके अधिगम अक्षमता की पहचान करनी होती है। उसकी गंभीरता तथा प्रकार का भी निर्धारण करना होता है तथा वैकल्पिक नियोजन का सुझाव भी देना होता है जो बच्चे के समानार्थिक स्तर गंभीरता का स्तर, अधिगम अक्षमता के प्रकार आदि पर निर्भर होता है।

2. अतिरिक्त कक्षाओं के द्वारा बालक की विशेष आवश्यकता पूरी करने में— विशेष कक्षाओं के द्वारा बालक की विशेष आवश्यकता पूरी करने में भी विशेषज्ञ शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके लिए विशेषज्ञ शिक्षक को कक्षोपरांत अथवा खाली समय में अधिगम अक्षमता युक्त बालक को उसकी कठिनाई क्षेत्र की समस्याओं का निदान अतिरिक्त कक्षा में विशेष शिक्षण तकनीकों का प्रयोग कर के करना चाहिए।

**बहुसंवेदी प्रशिक्षण (Multi Sensory Training)**— अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण में बहुसंवेदी प्रशिक्षण बहुत उपयोगी है। बहुसंवेदी प्रशिक्षण का तात्पर्य है एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों (दृश्य/श्रव्य, स्पर्श/घ्राण/स्वाद आदि) को प्रेरित करते हुए पढ़ाना। बहुसंवेदी अधिगम की प्रणेता सुप्रसिद्ध शिक्षाविद मारिया मांटेसरी मानी जाती है।

वी.ए.के.टी. (विजुअल ऑडिटरी काइनेस्थेस्टिक एंड टैक्टाइल) उपागम अधिगम अक्षमता युक्त बालकों को भाषायी प्रशिक्षण देने की एक सुप्रसिद्ध विधि है। जिसमें बच्चे को सर्वप्रथम किसी शब्द के सभी अक्षरों से परिचित कराया जाता है। इसके बाद बच्चे को क्रमशः पुरे शब्द से परिचय कराया जाता है फिर बच्चे को संदर्भित शब्द से जुड़ी चीजों को देखने, सुनने तथा अनुभव करने के लिए प्रेरित करते हैं जब बच्चे को उस शब्द विशेष का ज्ञान हो जाता है तब उसे उस शब्द को वाक्यों में प्रयोग करना सिखाया जाता है। शब्द तथा शब्द के वाक्यों में प्रयोग पर अधिकार कर लेने के बाद बच्चे को छोटी-छोटी कहानियाँ आदि लिखने के लिए कहा जा सकता है। सीखने की प्रक्रिया को बहुसंवेदी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक सामग्री यथा: फ्लैश कार्ड, कंप्यूटर, शब्द विशेष से संबंधित त्रिआयामी वस्तुएँ एवं चित्र आदि का भी उपयोग किया जाता सकता है।

## NOTES

**प्रत्यक्ष निर्देश (Direct/Explicit Instruction)**— प्रत्यक्ष निर्देश शिक्षण की एक व्यवस्थित विधि है जिसमें छोटे-छोटे चरणों में आगे बढ़ना, छात्रों के समझ की जाँच करते रहना, और सभी छात्रों के सक्रिय और सफल सहभागी बनाना समाहित है। (रोशेन शाइन, 1987)।

रोशेनशाइन (Rosenshine) 1986, ने प्रत्यक्ष निर्देश के निम्नांकित चरण बनाये हैं:

- प्रत्येक पाठ का आरंभ पिछले दिन के गृहकार्य की जाँच और छात्रों ने क्या पढ़ा था उसकी पुनरावृत्ति से करे।
- आज के पाठ का लक्ष्य-उद्देश्य बतायें।
- नई पाठ्य वस्तु को छोटे-छोटे भाषणों में स्पष्ट एवं विस्तृत व्याख्या के साथ प्रस्तुत करें और प्रायः छात्रों के ग्राहाता की जाँच बीच-बीच में प्रश्न करते करते रहें।
- छात्रों को सक्रिय अभ्यास का अवसर प्रदान करे।
- विभिन्न अभ्यासों के द्वारा की प्रगति पर नजर रखे।
- छात्रों को अभ्यास/पुनरावृत्ति का अवसर तक तब प्रदान करते रहें जब तक वे सिखाये गये कौशलो का स्वतंत्रता पूर्वक करने में सक्षम न हो जायें।
- प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन, पिछले सप्ताह के कार्यों का पुनरीक्षण करे तथा प्रत्येक माह के अंत में छात्रों द्वारा सीखे गये कौशल का पुनरीक्षण करते रहें।

इस प्रकार, प्रत्यक्ष निर्देश में प्रारंभ में शिक्षक, छात्रों के अधिगम की पूरी जिम्मेदारी लेता है, परंतु धीरे-धीरे छात्रों को स्वतंत्र बनाने के लिए इसे कम करते हुए, उन पर स्थानांतरित कर देता है। प्रत्यक्ष निर्देशन में शिक्षक ज्ञानार्जन तथा उसके प्रयोग के बीच के संबंधों को छात्रों द्वारा अचानक सीखे जाने की बजाय, छात्रों को इस संबंध के बारे में पारदर्शी एवं स्पष्ट भाषा में बताता है। फच और फच (Fuchs & Fuchs 2001) प्रत्यक्ष निर्देश न एक क्रमिक, सतत् श्रेणी हैं जो शिक्षक के द्वारा मोडलिंग से होते हुए विभिन्न सहायता संकेतों के द्वारा निर्देशित अभ्यास तक जाता है जो छात्रों को सिखाये गये कौशल में स्वतंत्र एवं धाराप्रवाह बनाता है।

## NOTES

### पाठ्यवस्तु संशोधन

पाठ्यवस्तु संशोधन का तात्पर्य उन विस्तृत तकनीकों से है जिसके द्वारा शिक्षक पाठ के गठन तथा उसके क्रियान्वयन को संशोधित करता है ताकि पाठ्यवस्तु को छात्र अच्छे में संगठित कर सके, उसे बेहतर तरीके से समझ सके एवं संदर्भित सूचनाओं को अपनी समृद्धि में लंबे समय तक संचित कर सकें। (क्राफ्ट एवं मिलर 1993) पाठ्य-वस्तु संशोधन के लिए शिक्षक को निम्नांकित चीजों को ध्यान में रखना चाहिए:

- पाठ्य वस्तु का आलोचनात्मक तुलनात्मक चिंतन
- छात्रों के सफल अधिगम के लिए उनकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण विधि का चयन
- बच्चे को सीखना है उसका चयन
- बच्चे को कैसे सिखाना/सीखना है इसका चयन

पाठ्यवस्तु संशोधन के निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं:

निर्देशित नोट्स निर्देशित नोट्स पाठ्यक्रम संशोधन तथा उसके पुनर्गठन की एक विधि है जो विकलांगता युक्त बालकों एवं उसके अन्य अविकलांग सहपाठियों को कक्षा के दौरान सक्रिय भागीदारी निभाने में सहायता करता है। (हेवर्ड, 2001)

सामान्यतः निर्देशित नोट्स शिक्षक द्वारा तैयार छोटे नोट्स होते हैं जो पाठ की रूपरेखा, मुख्य तथ्य, संकल्पनाएँ, एवं संबंधों के संक्षिप्त विवरण युक्त होते हैं। निर्देशित नोट्स का प्रयोग अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के शिक्षण में अत्यंत प्रभावी है।

#### निर्देशित नोट्स से लाभ

- छात्रों द्वारा पाठ्यवस्तु को लंबे समय तक याद रखना
- छात्रों की कक्षा में सक्रिय भागीदारी में वृद्धि
- छात्रों को समझने में सरलता
- कक्षोपरांत अध्ययन के लिए छात्रों के पास पाठ्यवस्तु का मानक संकलन

## ग्राफ युक्त विवेचक (Graphic Organizer)

यह सुचनाओं की एक दृश्य (Spatical) व्याख्या जिसमें शब्दों अथवा संकल्पनाओं को आरेखों के द्वारा जोड़ा जाता है। जो छात्रों को तुलनात्मक, क्रमिक तथा विभिन्न स्तर युक्त संकल्पनाओं को समझने में सहायता करता है। यह छात्रों को एक से अधिक इंद्रियों को प्रभावित करता है, अतः इसकी स्मृति लंबे समय तक रहती है।

**Mnemonics (Memory Enhancing Strategies)** शोधों से यह साबित हुआ है कि इस प्रकार के अन्य स्मृति सुधार तकनीके अधिगम अक्षमतायुक्त बालकों के लिए अत्यंत प्रभावी हैं।

3. बालक को संसाधन कक्ष शिक्षण प्रदान करने में तथा संसाधन कक्ष के विकास में अधिगम अक्षमता युक्त बालक को संसाधन कक्ष शिक्षण प्रदान करने एवं संसाधन कक्ष को उनकी आवश्यकतानुसार संरचित करने में भी विशेषज्ञ शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। संसाधन कक्ष में अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की आवश्यकतानुसार सामग्रियों को इकट्ठा करना संसाधन कक्ष शिक्षण तकनीकों का प्रयोग, समय प्रबंधन, उपयुक्त सामग्रियों की मदद से विशेष शिक्षण तकनीकों का उपयोग करके अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के अधिगम की कठिनाइयों को दूर करने में भी विशेषज्ञ शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रत्येक समावेशी विद्यालय में संसाधन कक्ष स्थापित करना और उसमें अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं पूरा करने के लिए उपयुक्त सामग्री उपलब्ध कराना विशेष शिक्षक अधिगम अक्षमता युक्त बच्चों की विशेष आवश्यकता की पूर्ति के लिए निम्नलिखित सामग्री संसाधन कक्ष में उपलब्ध होनी चाहिए।

- i. धीमी गति से वाचन करने वाले या लिखे हुए शब्दों को पढ़ने में कठिनायी बालको के लिए “बोलती पुस्तक; जूसपदह ठवबोद्ध ताकि वे सुनकर साथ-साथ वाचन करने का प्रयास कर सके। इनके साथ-साथ विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक वीडियो आदि।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

- ii. धीमी गति से लिखने वाले बालकों के लिए कंप्यूटर जो कि वर्ड प्रोसेसर से युक्त हो।
- iii. वे छात्र जिन्हे लघु अवधि की स्मृति में कठिनायी हो अथवा गणितिय समस्यायें हो, उनके लिए विभिन्न तथ्यों को दर्शाते चार्ट कैलकुलेटर आदि उपलब्ध कराये जा सकते है।
- iv. छात्रों की स्मृति, तथा श्रवण कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार की कवितायें राइमस, गीत आदि के दृष्य श्रव्य साधन रखे जाने चाहिए।
- v. गणित से संबंधित कठिनायी वाले बालकों के लिए संसाधन कक्ष में “गणितीय प्रयोगशाला” से संबंधित सामग्रियाँ होनी चाहिए जिनमे से प्रमुख निम्नलिखित है:
  - विभिन्न प्रकार की ज्यामितिय आकृतियाँ
  - ज्यामिति बॉक्स
  - अँबेकस
  - लंबाई चौड़ाई आदि मापने के लिए मानक टेप
  - तरल की मात्रा मापने हेतु मापन मग
  - समय की संकल्पना सीखने हेतु डमी दीवाल घड़ियाँ
  - प्लास्टिक के विभिन्न गणितिय खिलौने
  - खेलने वाले कार्डस
  - मुद्रा/रूपय/पैसे/ की संकल्पना के लिए डमी नोट
  - फ्लैश कार्डस
  - सेंगुइन फार्म बोर्ड
  - विभिन्न प्रकार के त्रिविधीय मॉडल
  - चार्ट पेपर
  - ग्राफ पेपर
  - जोड़ घटाव की संकल्पना के लिए लकड़ी या प्लास्टिक के ब्लॉक

- स्वॉप वॉच
- कम्प्यूटर सिस्टम,
- एल.सी.डी.
- ओ.एच.पी.
- डी.वी.डी. प्लेअर्स

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

विभिन्न प्रकार के पजल्स धन की उपलब्धता के अनुसार ऐसी कई सामग्री संसाधन कक्ष में, रखी जा सकती है जो अधिगम अक्षम बालकों की विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करती हो। इनके अलावा विशेषज्ञ शिक्षक को छात्रों की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार उत्पन्न व्यय वाली नवीनता युक्त स्वनिर्मित शिक्षण-सामग्रियों को भी संसाधन कक्ष में रखना चाहिए।

4. बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए IEP बनाने एवं पाठ्यक्रम निर्माण में अधिगम अक्षमता युक्त बच्चों को कक्षा-प्रशिक्षण के अतिरिक्त व्यक्तिगत शिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता भी हो सकती है क्योंकि एक बड़ी सामान्य बालकों की कक्षा में उसकी व्यक्तिगत, शैक्षणिक आवश्यकताएँ पूरी नहीं की जा सकती हैं। अधिगम अक्षम बालक के व्यक्तिगत शिक्षण कार्यक्रम बनाने एवं क्रियान्वित करने का कार्य भी विशेषज्ञ शिक्षक का है। अधिगम अक्षमता युक्त बालक की व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना उसके सामान्य पाठ्यक्रम के साथ तालमेल पूर्ण होना चाहिए तथा वह बालक को सामान्य पाठ्यक्रम से अलग नहीं बल्कि उसका पूरक (Complementary) होना चाहिए।
5. शोध आधारित शिक्षण विधियों के अभिनव प्रयोग में

समावेशी शिक्षा, एक नई संकल्पना है, जिसने नित्य नवीन शोध हो रहे हैं, और आगे कई शोधों की आवश्यकता है। ऐसे में विशेषज्ञ शिक्षक, को इन शोधों का अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के शिक्षण के प्रयोग तथा नवीन शिक्षण विधियों की खोज का प्रयास करने का होना चाहिए।

## NOTES

### विशेषज्ञ शिक्षक की सामाजिक भूमिका

- अक्षमतायुक्त बालकों के सहपाठियों, विद्यालय के अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों को अधिगम अक्षमता के प्रति जागरूक करना।
- समुदाय में जागरूकता लाने तथा मानसिक मंदता युक्त बालकों के समुदाय आधारित पुनर्वास (Community Based Rehabilitation CBR) में
- अक्षमता युक्त बालकों को तथा अभिभावकों को उनके अधिकारों एवं मिलने वाले सरकारी लाभ के सम्बन्ध में जागरूक करने में
- अभिभावकों एवं अधिगम अक्षमता युक्त बालक के एक काऊंसलर के रूप में

१. अक्षमतायुक्त बालकों के सहपाठियों, विद्यालय के अन्य शिक्षकों एवं अभिभावकों को अधिगम अक्षमता के प्रति जागरूक बनाने में— अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के सहपाठियों, विद्यालय के अन्य शिक्षकों तथा अभिभावकों में अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के प्रति जागरूकता एवं उनकी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रति संवेदनशील बनाने में विशेषज्ञ शिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हालांकि वर्तमान समय में भारतीय समाज में अधिगम अक्षमता के प्रति थोड़ी जागरूकता आयी है लेकिन अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षित लोगों में ही नहीं बल्कि शिक्षित लोगो, कई बार शिक्षकों में भी अधिगम अक्षमता के प्रति उपयुक्त जागरूकता नहीं आयी है। ऐसे में विशेषज्ञ शिक्षकों की यह अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका बन जाती है कि वह विद्यालय के अन्य छात्रों साथी शिक्षकों, एवं विद्यालय के अन्य कर्मचारियों को अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के प्रति जागरूक तथा उनकी विशेष आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनायें।

२. समुदाय में जागरूकता लाने तथा अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के समुदाय आधारित पुनर्वास (Community Based Rehabilitation CBR) में— शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का नेतृत्व करता है क्योंकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का आधार होती है। विद्यालयी क्रियाओं से इतर, विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिका अधिगम अक्षमता के प्रति

सामाजिक जागरूकता लाने तथा अधिगम अक्षम बालकों के समुदाय आधारित पुनर्वास में भी हैं। विशेषज्ञ शिक्षक की यहीं भूमिका भ्रमणशील शिक्षक (Itinerant Teacher) की संकल्पना में नीहित हैं जिसमें, विशेषज्ञ शिक्षक की इतर विद्यालयी भूमिकाओं में समुदाय में जाकर अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की पहचान, रेफरल, तथा उन्हें नियमित विद्यालय में भेजना सुनिश्चित करना भी सम्मिलित हैं।

## NOTES

३. अक्षमता युक्त बालकों को एवं अभिभावकों को उनके अधिकारों तथा मिलने वाले सरकारी लाभ के सम्बन्ध में जागरूक करने में— अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के समावेशी शिक्षण का प्रोत्साहन देने के लिये एवं उनके कल्याणार्थ विभिन्न सरकारी योजनायें चलायी जा रही है जिसके सम्बन्ध में प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावक जागरूक नहीं हैं और फलतः उसका लाभ नहीं उठा पाते। एक विशेषज्ञ शिक्षक को तत्संबंधित योजनाओं के सम्बन्ध में न केवल जागरूक होना चाहिए बल्कि अभिभावकों को इसके प्रति जागरूक बनाने एवं सुविधायें हासिल करने की विभिन्न प्रक्रियाओं से परिचित कराने में सहायता करनी चाहिए ताकि चलायी जा रही कल्याणकारी योजनायें उपयुक्त लाभार्थी तक पहुँच सकें।
४. अभिभावकों एवं अधिगम अक्षमता युक्त बालक के एक काउंसलर के रूप में— किसी बालक में अधिगम अक्षमता का निर्धारण, न केवल बालक को, बल्कि उसके सम्पूर्ण परिवार को प्रभावित करता है। परिवार के लोग सर्वप्रथम यह स्वीकार नहीं कर पाते कि उनके बच्चे में अधिगम अक्षमता है, फलतः इधर उधर उसके इलाज, झाड़-फूँक आदि के लिये परेशान होते रहते हैं। तथा बच्चे के प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण समय इन कार्यों में गँवा देते हैं। फिर जब वे यह स्वीकार कर लेते हैं कि उनके बच्चे में अधिगम अक्षमता है तब वे प्रायः उनके शिक्षण के लिये उन्मुख होते हैं लेकिन उन्हें आशा होती है कि विशेषज्ञ शिक्षक के पास को जादू है जिससे उनका बच्चा बिल्कुल ठीक हो जायेगा। इसके अतिरिक्त कई बार वे अपने बच्चे का आवश्यकता से अधिक ध्यान रखना शुरू कर देते हैं जो बच्चे को स्वावलंबी बनने में बाधा उत्पन्न करता है। अधिगम अक्षम बालक का पिता कहलाने में सामाजिक शर्म महसूस करते हैं, तथा बच्चे सामाजिक अवसरों पर ले

## NOTES

जाने से कतराते हैं जो बच्चे के सामाजिक समायोजन को प्रभावित करता है। साथ ही बच्चे के अभिभावक बच्चे के भविष्य को लेकर अवसादग्रस्त हो जाते हैं। इन परिस्थितियों में विशेषज्ञ शिक्षक न केवल बच्चे के लिये बल्कि उसके अभिभावकों के लिये भी, एक काउंसलर के रूप में उन्हें उपरोक्त परिस्थितियों से बाहर निकालने में, उन्हें यह समझने में कि शैने: शैने प्रशिक्षण दिये जाने पर उनको अनुकूलनीय व्यवहार उत्पन्न होगा। और यह किसी भी परिवार में हो सकता है, अतः सामाजिक शर्म महसूस करने की बजाय वे बच्चे के साथ अधिकाधिक सामाजिक कार्यों में भाग लें, बच्चे को अति रख-रखाव की बजाय कार्य करने का अवसर दें, उसकी शिक्षा में भागीदार बनें और अक्षमता के प्रति समुदाय में जागरूकता फैलाये। इन कार्यों में विशेष शिक्षक एक अत्यंत उपयोगी काउंसलर की भूमिका निभा सकता है।

### विशेषज्ञ शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ

- सामान्य शिक्षक एवं आवश्यकतानुसार अन्य विशेषज्ञों से समन्वय स्थापित करने में
  - TLM निर्माण में
  - अक्षमता युक्त बालकों के लिए प्रभावी अनुकूलन
- (i) सामान्य शिक्षक एवं आवश्यकता नुसार अन्य विशेषज्ञों से समन्वय स्थापित करने में – समावेशी शिक्षा में एक अधिगम अक्षमता युक्त बालक अधिकांश समय तक सामान्य कक्षा में सीखता है। ऐसे में विशेषज्ञ शिक्षक द्वारा विभिन्न विषयों के शिक्षकों से समन्वय बनाकर कार्य करना पड़ता है। जब तक बच्चे के व्यक्तिगत प्रशिक्षण और सामान्य कक्षा के क्रियाओं में तारतम्यता नहीं होगी तब तक बच्चे की उपयुक्त प्रगति संभव नहीं। इसके अतिरिक्त कई बार अधिगम अक्षमता से जुड़ी हुई अन्य स्थितियाँ भी होती हैं तथा आँख तथा हाथ के समन्वय में परेशानी, गामक कठिनाइयों आदि और इसके लिए उसे विभिन्न व्यवसायियों तथा चिकित्सक, आकुपेशनल, बेरेपिस्ट, फिजियाथेरेपिस्ट योगा थेरापिस्ट स्वीच आदि के सेवाओं की आवश्यकता भी होती है, ऐसी परिस्थिति में विशेषज्ञ शिक्षक को प्रभावी शिक्षण उनके लिये समय का आबंटन आदि कार्यों में प्रमुख भूमिका निभानी पड़ती है।

(ii) शिक्षण सामग्रियों के निर्माण में— अधिगम अक्षमता युक्त बालक समूह व्यक्तिगत-वैविध्य से पूर्ण होता है, प्रत्येक बच्चे की शैक्षणिक आवश्यकता भिन्न होती हैं, उनके सीखने की गति अलग होती है। ऐसे में विशेषज्ञ शिक्षक विभिन्न व्यक्तिनिष्ठ (Customized) शिक्षण सामग्रियों की आवश्यकता होती है। अधिगम अक्षमता युक्त बालक के आवश्यकतानुरूप टिकाऊ विषयोन्मुख, खोजपूर्ण शिक्षण सामग्रियों के निरंतर विकास में विशेष शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है।

(iii) अक्षमता युक्त बालकों के लिये लिये प्रभावी अनुकूलनों के विकास में— कई परिस्थितियाँ ऐसी आती हैं जिसमें हल्के वातावरणीय संशोधनों के बाद मानसिक मंदता युक्त बालक दिये गये कार्य करने में सक्षम हो जाता है। इन वातावरणीय संशोधनों को अनुकूलन (Adaptation) कहते हैं। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुगम एवं आसान बनाने के लिये, परिस्थितियाँ का आलोचनात्मक अध्ययन करके विशेषज्ञ शिक्षण को कई वातावरणीय अनुकूलन बनाने पड़ता है। जैसे यदि एक बालक का सूक्ष्म गामक (Fine Motor) की समस्या होने की वजह से यदि वह चम्मच को ठीक से पकड़ नहीं पाता तो उसे पकड़े बाँध कर मोटा बनाया जा सकता है। यदि कोई बच्चा लिखने समय कलम पकड़ने में समस्या का अनुभव कर रहा हो तो पेंसिल में एक छोटी गेंद ग्रिप के लिये लगायी जा सकती है। अनुकूलन प्रायः परिस्थिति जन्य होती है तथा शिक्षक की “खोजपूर्ण” प्रवृत्ति पर निर्भर है कि वर्तमान परिस्थिति का प्रयोग करते हुए अधिकतम अधिगम कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

### अक्षमता युक्त बालकों के लिए प्रभावी अनुकूलन

| शैक्षिक वातावरण संबंधी   | अनुदेशानात्मक विधियों से संबंधित                         | परीक्षण प्रक्रिया संबंधी            | समय एवं संगठन संबंधी | अधिगम सामग्री/ संसाधन सम्बंधी                    |
|--------------------------|--|-------------------------------------|----------------------|--|
| कक्षा में वैकल्पिक स्थान | शाब्दिक प्रस्तुतियों के पूरक के रूप में दृश्य सामग्रियाँ | ध्वनि से आलेख तकनीक (Voice to Text) | अतिरिक्त समय         | ‘मैनिपुलेटिव’ (Manipulative) मिटाने योग्य मार्कर |

## NOTES

|                     |   |                   |                               |  |
|---------------------|---|-------------------|-------------------------------|--|
| सुगम भवन            | कार्यों का छोटे भागों में विभाजन              | शाब्दिक प्रस्तुति | शैक्षणिक क्रियाओं में विविधता | ग्राफ/चार्ट/डायग्राम                           |
| अनुकूलित डेस्क टेबल | सहपाठी शिक्षण                                 | दृश्य प्रस्तुति   | असाइनमेंट के छोट छोटे खंड     | कम्प्यूटर सिस्टम उभरी पंक्तियों वाले कागज      |
| बैठने हेतु कुशल     | सहयोगी शिक्षण                                 | वर्तनी जाँच       | सहयोगी कक्षा                  | श्रवण यंत्र, (लाउड स्पीकर/हैंडसेट) आदि         |
| ध्वनिक यंत्र        | कंप्यूटर सहयोगी/ तकनीकी (यथा: लाउडस्पीकर आदि) | कैलकुलेटर         | सुगम भवन                      | बड़े प्रिंट में विभिन्न पाठ्य वस्तुओं के चार्ट |

### अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा में सामान्य शिक्षक की भूमिका

अभी आपने अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा में विशेषज्ञ शिक्षक की भूमिकाएं देखीं। अब हम समावेशी शिक्षा के संदर्भ में सामान्य शिक्षकों की भूमिकाओं का अध्ययन करेगी।

#### सामान्य शिक्षक की शैक्षणिक भूमिका

- अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की विशेष शैक्षिक आवश्यकता की सामान्य कक्षा में पूरा करना
  - सभी बालकों के शैक्षिक विकास पर ध्यान रखना
  - शिक्षण में विशेषज्ञ शिक्षण के साथ समन्वय
  - अभिनव शिक्षण तकनीकों का कक्षा में प्रभावी शिक्षण के लिए प्रयोग करने में
- (i) अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की विशेष शैक्षिक आवश्यकता की सामान्य कक्षा में पूरा करना अधिगम अक्षमतायुक्त बालक की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा शिक्षण समावेशी शिक्षा की

## NOTES

- संकल्पना “सभी बालकों के समन्वित विकास” पर आधारित है अतः सामान्य शिक्षक को कक्षा में उपस्थित बालकों की विभिन्न को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए। विभिन्न अक्षमता युक्त (जिसमें अधिगम अक्षमता भी सम्मिलित है) बालकों की विशेष आवश्यकताओं के मद्देनजर पढ़ाने में शिक्षक को वातावरण को रूचिकर बनाना, आकर्षक एवं उपयुक्त विभिन्न शिक्षण सामग्रियों आदि का प्रयोग करना, शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में सभी बालकों की सक्रिय भागादारी सुनिश्चित करना आदि क्रियाओं को शामिल करना चाहिए।
- (ii) सभी बालकों के शैक्षिक विकास पर ध्यान रखना-समावेशी शिक्षण के वातावरण में सभी बालकों के शैक्षणिक विकास पर ध्यान रखना सामान्य शिक्षक की नैतिक भूमिका है। शिक्षक को अधिगम अक्षमता अन्य अक्षमता युक्त बालकों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ अन्य बालकों के शैक्षणिक विकास पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि सामान्य शिक्षक का शिक्षण सिर्फ अधिगम अक्षमता/अन्य अक्षमता युक्त बालकों को ध्यान में रखकर होगा, तो कक्षा के अन्य बच्चों की शिक्षा प्रभावित होगी, वहीं यदि सामान्य शिक्षक कक्षा में उपस्थित अधिगम तथा अन्य अक्षमता युक्त बालकों की उपेक्षा करेगा तब समावेशी शिक्षण की मूल भावना प्रभावित होगी। अतः सामान्य शिक्षक को सभी बालकों के शैक्षणिक विकास पर ध्यान रखते हुए कार्य करने चाहिए।
- (iii) शिक्षण में विशेषज्ञ शिक्षण के साथ समन्वय-विशेषज्ञ शिक्षक के साथ समन्वय करने एवं सामान्य सामूहिक कक्षा में अधिगम अक्षमता युक्त बालक को अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्य शिक्षक विभिन्न अक्षमता/अधिगम अक्षम बालकों के विशेषज्ञ शिक्षक के सलाह लेकर, एवं बालक के व्यक्तिगत शिक्षण योजना से तालमेल बिठाकर ही, प्रभावी शिक्षण कर सकता है। सामान्य शिक्षक एवं विशेष शिक्षक दोनों को आपस में विचार-विमर्श करके, अधिगम अक्षमता युक्त बालक के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजना, बालक की अधिगम समस्याएं तथा सामूहिक कक्षा में उसका संभव समाधान निकालें, तभी अधिगम युक्त बालकों का कक्षा शिक्षण एवं अधिगम प्रभावी होगा।
- (iv) अधिगम शिक्षण तकनीकों का कक्षा में प्रभावी शिक्षण के लिए प्रयोग करने में अधिगम शिक्षण तकनीकों का कक्षा में प्रयोग करके सभी



## NOTES

बालकों के लिए प्रभावी अधिगम सुनिश्चित करने में सामान्य शिक्षक का बड़ा हाथ है। अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षण पद्धतियों पर नित्य नए-नए शोध हो रहे हैं नई-नई शिक्षण तकनीकें विकसित की जा रही हैं सामान्य शिक्षक को गंभीरतापूर्वक विचार करके विभिन्न नवीन शिक्षण तकनीकों का यथासंभव, परिस्थितिनुसार, उपयुक्त प्रयोग करके शिक्षण को प्रभावी बनाने के प्रयास करना चाहिए।

### सामान्य शिक्षक की सामाजिक भूमिका

- सामान्य कक्षा में अधिगम अक्षमता युक्त बालकों का सामंजस्य करने में
  - अधिगम अक्षमता युक्त बालकों को स्व. अभिव्यक्ति का बराबर अवसर देने में
  - अधिगम अक्षमता युक्त बालक तथा अन्य विभिन्न आवश्यकता वाले बालकों में एक सहयोग पूर्ण वातावरण निर्मित करने में।
- (i) सामान्य कक्षा में अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के सामंजस्य बिठाने में सामान्य कक्षा में अधिगम अक्षमता युक्त बच्चों का सहपाठियों के साथ सामंजस्य बिठाने में सामान्य शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई बार, अधिगम अक्षमता युक्त बालक, अपनी विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप सहपाठियों में पिछड़ा समझा जाने लगता है, तथा सहपाठी अस्वीकार्यता का शिकार हो जाता है। कई बार ऐसी विशेष आवश्यकता वाले बच्चे विभिन्न तरीकों के शोषण का शिकार हो जाते हैं। एक सामान्य शिक्षक को कक्षा में छात्रों की विभिन्न गतिविधियों एवं कक्षा की गतिकि पर पैनी नजर रखनी चाहिए और यदि ऐसी किसी भी संभावना का संकेत मिलता है तो शिक्षक को तुरंत हस्तक्षेप करना चाहिए ताकि स्थिति गंभीर रूप ग्रहण न कर ले। जब तक अधिगम अक्षमता युक्त बालक कक्षा में स्वीकार्य नहीं होगा तब तक अधिगम अभावी नहीं हो सकता। अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की कक्षा में सहपाठियों के बीच स्वीकार्य बढ़ाने के लिए सभी बालकों को विशेष आवश्यकता वाले बालकों के प्रति जागरूक बनाने में सामान्य शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, साथ ही “सहपाठी शिक्षण” जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग भी कर सकता है जो

अधिगम अक्षमता युक्त बालकों को अपने अन्य सहपाठियों से धुलने-मिलने में उनकी सहायता करेगा।

सीखने की अक्षमता:  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

- (ii) अधिगम अक्षमता युक्त बालकों के स्व. अभिव्यक्ति का बराबर अवसर देने में- अधिगम अक्षमता युक्त बच्चों को स्व.अभिव्यक्ति को समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए, जिसकी जिम्मेदारी मुख्यतः सामान्य शिक्षक की हैं। प्रायः इस प्रकार के अक्षमता युक्त बालक कक्षा में पिछड़े दिखाई देते हैं और परिणामस्वरूप इन्हें स्वाभिव्यक्ति का अवसर नहीं मिल पाता, उस अवसर को अन्य बालक छीन लेते हैं एक सामान्य शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिगम अक्षमता युक्त बालक को भी कक्षा में स्वाभिव्यक्ति का पूरा अवसर मिले अन्यथा वह कक्षा में उत्तरोत्तर पिछड़ता चला जाएगा।
- (iii) अधिगम अक्षमता युक्त बालक एवं अन्य विभिन्न आवश्यकता वाले बालकों में एक सहयोग पूर्ण वातावरण बनाने में- अधिगम अक्षमता युक्त बालक तथा अन्य बालकों के मध्य एक सहयोग पूर्ण वातावरण का विकास का प्रयास सामान्य शिक्षक को करना चाहिए जो शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को अत्यंत प्रभावी बनाता है कक्षा के सभी बालकों में एक पारस्परिक सद्भावना एवं सम्मान का भाव विकसित करने के लिए सामान्य शिक्षक छात्रों को व्यक्तिगत कार्यों के अतिरिक्त सामूहिक कार्य भी दे सकता है। कक्षा में छात्रों/छात्र समूहों के मध्य एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का पर्यावरण विकसित किए जाने में सामान्य शिक्षक की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

### सामान्य शिक्षक की अन्य भूमिकाएँ

- (i) अधिगम अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी बढ़ाने में
- (ii) समुदाय को समावेशी शिक्षा की प्रक्रिया में शामिल करने में
- (iii) अक्षमता ग्रस्त बालकों (जिसमें अधिगम अक्षमता भी शामिल है) के प्रभावी शिक्षण के लिए अल्पव्ययी, खोजपूर्ण, कार्यानुसार शैक्षणिक सामग्री के विकास में।
- (iv) सामान्य पाठ्यक्रम में अधिगम अक्षम बालकों के लिए उपयुक्त अनुकूलन

## NOTES

### परीक्षापयोगी प्रश्न

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अधिगम अक्षमता से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रकृति एवं विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. अधिगम अक्षम बालक की पहचान किसी प्रकार की जा सकती है, वर्णन करे।
3. अधिगम अक्षमता के मूल्यांकन की प्रक्रिया का विवेचन करें।
4. अधिगम अक्षम बालकों के लिए समुचित प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्लेषण करें।
5. अधिगम अक्षम बालकों के प्रतिस्थापन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।
6. अक्षमता के अध्ययन के विभिन्न उपागम क्या हैं? अक्षमता के अध्ययन के चिकित्सकीय एवं सामाजिक उपागम का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।
7. सामाजिक उपागम का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।
8. विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा और समावेशी शिक्षा की परिभाषा दीजिए एवं इनके लाभ और हानियों की व्याख्या करें।
9. समावेशी शिक्षा से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेष ताएं और फायदे पर प्रकाश डालें।
10. एक अधिगम अक्षमता युक्त बालक के समावेशी शिक्षण में विशेष शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं की विस्तृत वर्णन कीजिए।
11. एक अधिगम अक्षमता युक्त बालक के समावेशी शिक्षण में सामान्य शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है, विस्तार से लिखें।

#### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अधिगम अक्षमता का ऐतिहासिक परिचय दीजिए।
2. अधिगम अक्षम बालकों का प्रतिस्थापन स्पष्ट कीजिए।
3. आंकलन के उपकरण तथा क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।
4. व्यक्तिपरक शैक्षिक योजना की व्याख्या कीजिए।
5. पाठ्यक्रम संबंधी अनुकूलन को स्पष्ट कीजिए।
6. प्रबंधकीय तथा जीवनपर्यन्त शिक्षा से आपका क्या अभिप्राय है।
7. अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए।

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- संक्षिप्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
- मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली संस्थाएँ।
- व्याधियों का अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण।
- मानसिक मंदता की परिभाषा।
- मानसिक मंदता तथा मानसिक रूग्णता।
- मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण तथा विशेषताएँ।
- परीक्षण उसके उद्देश्य, प्रकार तथा परीक्षण उपकरण।
- सामाजिक कौशल एवं शैक्षिक सम्बन्धी कार्यात्मक युक्तियाँ।
- अनुकूलन।
- व्यक्तिगत शैक्षिक प्लान की भूमिका।
- मानसिक मंदता वाले बच्चों के लिए शिक्षण तथा प्रशिक्षण।
- परीक्षापयोगी प्रश्न

NOTES

उद्देश्य—

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे—

- संक्षिप्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
- मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली संस्थाएँ।
- व्याधियों का अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण।
- मानसिक मंदता की परिभाषा।
- मानसिक मंदता तथा मानसिक रूग्णता।
- मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण तथा विशेषताएँ।
- परीक्षण उसके उद्देश्य, प्रकार तथा परीक्षण उपकरण।
- सामाजिक कौशल एवं शैक्षिक सम्बन्धी कार्यात्मक युक्तियाँ।
- अनुकूलन।
- व्यक्तिगत शैक्षिक प्लान की भूमिका।
- मानसिक मंदता वाले बच्चों के लिए शिक्षण तथा प्रशिक्षण।

## NOTES

### प्राक्कथन

इस इकाई में आप-मानसिक मंदता की आधारभूत संकल्पनाओं द्वारा परिचित होंगे। पाठ का मुख्य केंद्र है मानसिक मंदता, का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (पाश्चात्य एवं भारतीय) मानसिक मंदता की परिभाषा में आ रहे क्रमिक परिवर्तन, परिभाषा के पीछे की जटिलता, एवं मान्यताएं आदि। इस इकाई में आप यह भी पढ़ेंगे कि हमारे समाज के अन्तर्गत किस प्रकार की भ्रांतियाँ मानसिक मंदता के प्रति व्याप्त हैं तथा मानसिक मंदता किस प्रकार मानसिक रोगों से भिन्न है। इकाई के अंत में हम मानसिक मंदता के विभिन्न वर्गीकरण प्रणालियों एवं उनकी समानता चर्चा करेंगे। पाठ में आंतरालिक रूप से कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गए हैं, जिससे आपको अपनी प्रगति की जाँच करने में सहायता मिलेगी, साथ ही, किसी भी प्रकार की अस्पष्टता को दूर करने के लिए तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी समानार्थी शब्द भी दिए गए हैं। पाठ के अंत में शीर्ष पुनरीक्षण के लिए इकाई सारांश एवं महत्वपूर्ण पद/शब्दों संक्षेपों की व्याख्या दी गई है जो आपको इस इकाई को समझने में सहायक होगी। साथ ही आखिरी पृष्ठों पर आपको संदर्भ ग्रंथों की सूची प्राप्त होगी जिसका प्रयोग करके मानसिक मंदता से संबंधित और अधिक जानकारियाँ एकत्र कर सकते हैं। लेखक के अनुसार प्रस्तुत पाठ आपके लिए ज्ञानवर्द्धक एवं रुचिकर साबित होगा।

### संक्षिप्त ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

#### पाश्चात्य ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

विकलांगता का प्राचीन इतिहास अस्पष्ट है। सामाजिक जागरुकता न होने की वजह से इतिहासकारों ने विकलांगता/अक्षमता के इतिहास को तरजीह नहीं दी है। तत्कालीन साहित्य का अध्ययन करने पर हमें विकलांगता ग्रस्त, व्यक्तियों के जीवन की थोड़ी जानकारी अवश्य मिलती है। प्राचीन ग्रीस के अन्तर्गत राज्य परिषद के अधिकारी नवजात शिशुओं की जांच करते थे और यदि वे 'दोषपूर्ण' पाये जाते तो उन्हें समाप्त कर दिया जाता था। अक्षमताग्रस्त शिशुओं के संदर्भ में शिशु हत्या प्रचलित थी। दूसरी शताब्दी के अन्तर्गत रोम-साम्राज्य में मनोरंजन के उद्देश्य से, अक्षमताग्रस्त बालकों एवं व्यक्तियों को बेचे जाने के प्रमाण मिलते हैं। पांचवी से पंद्रहवी शताब्दी के बीच शिशु हत्या और विक्रय में थोड़ी कमी आयी और अक्षमता युक्त व्यक्तियों/बालकों के साथ

मानवीय व्यवहार का आरंभ हुआ। 12वीं शताब्दी में इंग्लैंड के राजा हेनरी द्वितीय ने कानून बनाकर मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों के साथ अमानवीय व्यवहारों पर रोक लगाने की कोशिश की।

1690 के अन्तर्गत जॉन लॉक द्वारा प्रतिपादित धारणा कि नवजात का मस्तिष्क 'टेबुला रसा' (खाली स्लेट) के समान होता है, ने मानसिक मंदता युक्त बालकों के प्रशिक्षण एवं जीवन शैली को अत्यधिक प्रभावित किया। जॉन लॉक ने सर्वप्रथम मानसिक मंदता को मानसिक रोग से अलग बताया।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में विशेष शिक्षा को शिक्षा की एक शाखा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। हालांकि यह विकलांग बालकों के अधिकार पर आधारित शिक्षा की अपेक्षा उनके प्रति दयाभाव (Charity) अधिक था।

यह वह समय था जब कई समाज सेवा करने वाली संस्थाएं और राज्य समर्थित विशेष विद्यालय खोले गए। विशेष शिक्षा की औपचारिक शुरुआत में फ्रांस के मनो चिकित्सक जीन मार्क गैस्पर्ड इटार्ड का नाम अग्रणी है, जिन्हें प्रायः विशेष शिक्षा के प्रतिपादक के रूप में सम्बोधित किया जाता है। बाद में उसका नाम 'विक्टर' रखा गया। 12 वर्ष के विक्टर को जिसके सभी व्यवहार 'आदि मानव' के समान थे, को शिक्षित करने की जिम्मेदारी इटार्ड को दी गई। पांच वर्ष के लगातार प्रयासों के बाद इटार्ड, विक्टर को सामान्य संप्रेषण कौशल एवं सामान्य सामाजिक व्यवहार सिखाने में सक्षम हो सके परंतु श्रम के अनुपात में सफलता नहीं मिल पायी। इटार्ड के इन प्रयासों ने पूरे यूरोप को मानसिक मंद बालकों के शिक्षण के प्रति उद्बलित कर दिया। इटार्ड के शिष्य सेंगुइन ने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों को शिक्षा के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया और विशेष शिक्षा की जड़ों को मजबूत बनाने में अपना योगदान दिया। सेंगुइन द्वारा विकसित 'सेंगुइन फॉर्म बोर्ड' (SFB) आज भी छोटे बच्चों की बौद्धिक क्षमता के आकलन में प्रयुक्त होता है।

सेंगुइन ने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा के लिए एक विस्तृत विधि का विकास किया जिसे उन्होंने शरीर क्रियात्मक विधि (Physiological Method) का नाम दिया। सेंगुइन विकसित विशेष शिक्षा की इस विधि में संवेदी प्रशिक्षण (दृष्टि/श्रवण/आंखों और हाथों का समन्वय) आदि शामिल थे। सन् 1850 में सेंगुइन यू.एस.ए. चले गए और वहां मानसिक

## NOTES

## NOTES

मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा में अपना योगदान दिया। सन् 1876 के अन्तर्गत सेंगुइन ने असोसिएशन ऑफ मेडिकल ऑफिसर्स ऑफ अमेरिकन इंस्टीच्यूसंस फॉर इडिओटिक एण्ड फीबल माइंडेड पर्सनल (Association of Medical Officers of American Institution for Idiotic & Feeble Minded Persons-AMMOAIIIFMP) की स्थापना की। बाद में यह संस्था मानसिक मंदता में काम करने वाली विश्व की प्रथम संस्था बन गई और अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिसिएंसी (American Association of Mental Deficiency-AAMD) अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन (American Association of Mental Retardation-AAMR) जैसे परिवर्तित नामों का सफल तय करते हुए अब अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ इंटेल्जुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज के नाम से प्रसिद्ध है।

19वीं सदी का प्रारंभिक भाग मानसिक मंदता के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सन् 1905 में विश्व का पहला बौद्धिक परीक्षण बिनो एवं साइमन द्वारा विकसित कर के, मानसिक मंदता की पहचान में क्रांति की शुरुआत कर दी। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूरा विश्व अस्थिर हो गया फलतः राज्यों की ओर से विकलांगता में काम कर रहे संस्थाओं के अनुदान में एक तरफ कटौती हो गई और दूसरी ओर युद्ध के परिणामस्वरूप लाखों व्यक्ति विकलांग होकर घर लौटे। इन कारणों की वजह से, 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में बड़े-बड़े संस्थानों की स्थापना की गई और विकलांग व्यक्तियों को बड़ी-बड़ी (5000-6000 व्यक्ति) संस्थाओं में सम्मिलित किए जाने लगे जहाँ बुनियादी सुविधाओं की भी पर्याप्त कमी थी। सन् 1962 में अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कॅनेडी ने प्रेसीडेंट कमिटी ऑफ मेंटल रिटार्डेशन गठित किया जिसका प्रमुख उद्देश्य था मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों के जीवन स्तर की समीक्षा करना। इस समय, कुछ लोग डेनमार्क, स्वीडन आदि देशों में बड़ी-बड़ी संस्थाओं में हो रहे मानवाधिकारों हेतु हनन के विरुद्ध सामने आए और इन सभी के संयुक्त प्रयासों ने विसंस्थानीकरण (Deinstitutionalization) की नींव रखी। विसंस्थानीकरण एवं समुदाय आधारित आंदोलन के प्रमुख अग्रणी नेताओं में नील्स एरिक बैक माइकेल्सन, वुल्फ, वुल्फेन्सवर्गर, बेन्जट नीरजी आदि प्रमुख हैं। बैक मिकेल्सन को सामान्यीकरण की अवधारणा का जनक माना जाता है। इसके पश्चात् सन् 1975 में विकलांग व्यक्तियों के वैश्विक अधिकारों की घोषणा की गई और अमेरिका में सभी विकलांग बालकों के लिए शिक्षा (Education for all

Handicapped Children Act 1975) पारित किया गया और तदुसार, सामान्य विद्यालयों के दरवाजे विकलांग बालकों के लिए भी खोल दिए गए। तत्पश्चात् आए कानूनों (जिनका अध्ययन हम अगली इकाइयों में करेंगे) तथा विकलांग बालकों के अधिकार द्वारा संबंधित सलमांका केन्फ्रेंस और अद्यतनल यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन ऑन राइट्स ऑफ पर्सनस विथ डिसेबिलिटीज (UNCRPD) ने सभी अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा में वैश्विक क्रांति ला दी है।

## NOTES

### भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

बौद्धिक अक्षमता/मानसिक मंदता का भारतीय इतिहास उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता। भारतीय धार्मिक ग्रंथों के अन्तर्गत विकलांगता/मानसिक मंदता के साक्ष्य उपलब्ध हैं। लगभग 5000 ई. पू. रामायण काल में रानी कैकेयी की दासी मंथरा 'मानसिक मंदता' की उदाहरण है, जो अपनी अल्प बौद्धिक क्षमता के कारण इधर-उधर की बातों से शीघ्र प्रभावित हो जाती थी।

रामायण काल के पश्चात् महाभारत काल में भी मानसिक मंदता/विकलांगता का विवरण उपलब्ध है। महाभारत कालीन युग में कृष्ण की दासी 'कुब्जा' और विद्वान 'अष्टावक्र' दोनों ही अस्थि विकलांगता के उदाहरण माने जा सकते हैं। चौथी शताब्दी ई.पू. महान भारतीय अर्थशास्त्री चाणक्य द्वारा अक्षमताग्रस्त व्यक्तियों के लिए अपमान जनक शब्दों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और इसके लिए सजा का प्रावधान भी किया था। लगभग पहली शताब्दी ई. पू. भारतीय राजा अमरशक्ति के तीनों बच्चे वासुशक्ति, उग्रशक्ति और अनेकशक्ति मानसिक मंदता/बौद्धित अक्षमता युक्त माने जा सकते हैं, जो सामान्य शिक्षण विधियों द्वारा सीख नहीं पाये, फलतः राजा के दरबारी पंडित विष्णु शर्मा उन्हें राजनीति का ज्ञान कराने के लिए 'पंचतंत्र' की रचना की जो विश्व की प्रथम विशेष शिक्षा की किताब मानी जाती है।

बौद्धिक धार्मिक ग्रंथों में विकलांगता/मानसिक मंदता को पिछले जन्म के पापों का परिणाम बताया गया है। प्राचीन ग्रंथ मनुस्मृति में मनु ने भी उद्धृत किया है कि पूर्व जन्म में किए गए अपराधों के कारण व्यक्ति 'विकलांगताओं' को भोगता है और उसका प्रायश्चित्त करता है।

प्राचीन काल में विकलांग बालकों को जीने का अधिकार प्राप्त नहीं था इसके प्रमाण मिलते हैं कि प्रायः विकलांगता ग्रस्त शिशुओं की हत्या (Infanticide) कर दी जाती थी। यदि विकलांग व्यक्ति जीवित रह जाते थे तो भी उनकी



## NOTES

शिक्षा एवं अन्य आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रखा जाता था और ऐसे सभी विकलांग व्यक्तियों को 'पागल' की श्रेणी में माना जाता था। यदि मानसिक मंदता/विकलांगता के अद्यतन वैज्ञानिक भारतीय इतिहास की बात की जाये तो यह अत्यंत संक्षिप्त है। विकलांगता/अक्षमता से संबद्ध पहला भारतीय कानून इंडियन लूनासी ऐक्ट (1912) पारित किय गया तथा अक्षमता ग्रस्त व्यक्तियों के लिए पहला कानून अस्तित्व में आया। इंडियन लूनासी ऐक्ट (1912) ने मानसिक मंदता और मनोरोगों को समान मानते हुए, उनके लिए समान मानक एवं समान मानदण्ड तय किये। इसके बाद, एक लंबे समय के बाद मानसिक स्वास्थ्य कानून (1987) मेंटल हेल्थ ऐक्ट 1987 आया जिसमें मानसिक रोग और मानसिक मंदता को अलग तो मान लिया गया परंतु मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के लिए कोई प्रावधान नहीं दिया गया। इससे पूर्व कोठारी आयोग की अनुशंसा पर 1974 के अन्तर्गत समेकित शिक्षा कार्यक्रम (Integrated Education for Disabled Children-IEDC) आरंभ हो चुका था, 1984 में राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH) की स्थापना सिकंदराबाद में की गई थी।

इसके पश्चात् NPE - 1986, भारतीय पुनर्वास परिषद कानून 1992, विकलांग जन (समान अवसर, पूर्ण भागीदारी और अधिकारों की रक्षा) कानून 1995, राष्ट्रीय न्याय अधिनियम 1999, शिक्षा का अधिकार (RTE, 2009) कानून आदि तैयार किए गए और अक्षमता युक्त बालकों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा।

### मानसिक मंदता को परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थायें AAMR, DSM, ICD-WHO

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एवं डेवलपमेंटल डिसेबिलिटी, विश्व का सबसे प्राचीन और सबसे विशाल व्यावसायिक संगठन है जो मानसिक मंद बालकों के लिये कार्य करने में अग्रणी माना जाता है। इसकी स्थापना 1876 ई. में मानसिक मंदता के कल्याणार्थ की गयी थी। इसकी स्थापना 1876 ई. के अन्तर्गत सेंगुइन ने की थी। सेंगुइन ने असोसिएशन ऑफ मेडिकल ऑफिसर्स ऑफ अमेरिकन इंस्टीच्यूसंस फॉर इडिओटिक एण्ड फीबल माइंडेड पर्सनल (Association of Medical Officers of American Institution for Idiotic & Feeble Minded Persons-AMOAIFMP) की स्थापना की। बाद में यह संस्था मानसिक मंदता में काम करने वाली

विश्व की अग्रणी संस्था बन गई और अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डेफिसिएंसी (American Association of Mental Deficiency-AAMD) अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन (American Association of Mental Retardation-AAMR) जैसे परिवर्तित नों का सफल तय करते हुए सन् 2007 में जब एक मत द्वारा मानसिक मंदता का नाम बदलकर 'बौद्धिक अक्षमता' कर दिया गया और तदुसार अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ रिटार्डेशन का नाम परिवर्तित कर अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (American Association of Intellectual & Developmental Disabilities-AAIDD) कर दिया गया है। ए.ए.आई.डी.डी. ने मानसिक मंदता की परिभाषा और उसे नैदानिक मानदण्ड आदि के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है एवं मानसिक मंदता की संकल्पना को समयानुसार, सकारात्मक करने का प्रयास करती रही है।

## NOTES

ए.ए.आई.डी.डी. मूलतः निम्नांकित सिद्धांतों पर आधारित कार्य करती है :

1. बौद्धिक एवं विकासात्मक अक्षमता युक्त बालकों का पूर्ण सामाजिक समावेश एवं साझेदारी।
2. समानता, व्यक्तिगत सम्मान एवं मानवधिकारों की वकालत।
3. व्यक्तिगत इच्छाओं को व्यक्त करने और आत्म निर्णय की क्षमता का प्रोत्साहन।
4. बौद्धिक अक्षमता युक्त व्यक्तियों के योगदान को प्रोत्साहित कर उनके प्रति जागरुकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
5. जीवन के सभी पक्षों में बौद्धिक विकलांग व्यक्तियों की साझेदारी को प्रोत्साहित करना।

## डी.एस.एम. (DSM) डायनोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल

डी.एस.एम. (DSM) का पूरा नाम डायनोस्टिक एंड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ मेंटल डिऑर्डर है। यह अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन (American Psychiatric Association) के अनुसार प्रकाशित किया जाता है एवं मनोविकारों के वर्गीकरण तथा निदान के वैश्विक मानक प्रस्तुत करता है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका में सैनिकों के चयन, परीक्षण और उपचार में बड़ीसंख्या में मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सकों ने भाग लिया।

## NOTES

1949 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ICD (International Clarification of Disease) का छठा भाग प्रकाशित किया जिसके अन्तर्गत उन्होंने पहली बार उसके एक भाग के रूप में मानसिक विकृतियों में शामिल किया। ICD के समानांतर अमेरिकन मनोचिकित्सक संगठन (APA) को विशेष रूप से अमेरिका में प्रयोग किए जाने के लिए मानसिक विकारों के लक्षण एवं निदान हेतु मानक निर्धारित करने का कार्य सौंपा गया और उसके फलस्वरूप डायग्नोस्टिक एवं स्टैटिस्टिकल मैनुअल का प्रथम अंक (DSM-1) 1952 में प्रकाशित किया गया जिसमें 130 पृष्ठों में 106 मानसिक विकृतियों के लक्षण एवं निदान प्रस्तुत किया गया।

इस समय मनोचिकित्सक विलियम सी. मैनिनजर की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने 1943 में अमेरिकी सेना द्वारा प्रयोग किए जाने हेतु मानसिक विकारों का वर्गीकरण मेडिकल 203 के नाम से प्रस्तुत किया।

DSM-I इसी मेडिकल 203 का संशोधित रूप था। बाद में समयानुसार आवधिक रूप में डी.एस.एम. को संशोधित किया जाता है। आज डी.एस.एम. 5, डी.एस.एम. का अद्यतन संशोधित रूप है जो 18 मई 2013 को प्रकाशित किया गया है। डी.एस.एम. की प्रारंभ से लेकर अब तक के उसके महत्वपूर्ण संशोधन निम्नांकित हैं -

| क्र.सं. | DSN संशोधन वर्ष | संशोधित अंक/भाग |
|---------|-----------------|-----------------|
| 1       | 1952            | DSM-I           |
| 2       | 1968            | DSM-II          |
| 3       | 1980            | DSM-III         |
| 4       | 1987            | DSM-III R       |
| 5       | 1994            | DSM-IV          |
| 6       | 2000            | DSM-IVTR        |
| 7       | 2013            | DSM V           |

डी.एस.एम. मनोविकारों के वर्गीकरण की समसामयिक एवं वृहत मानक प्रस्तुत करता है और वैश्विक स्तर पर मान्य है।

**व्याधियों का अंतराष्ट्रीय वर्गीकरण आई.सी.डी.  
(International Clarification Disease) (ICD)**

आई.सी.डी. (ICD) का पूरा नाम है व्याधियों का अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (International Clarification of Disease) जो कि विभिन्न बीमारियों के निदान का एक मानक टूल है जिसका प्रमुख उद्देश्य है विभिन्न बीमारियों के अभिलक्षण, निदान एवं स्वास्थ्य प्रबंधन के मानक तय करना। 1994 से अब तक ICD-10 प्रयोग किया जा रहा है और इसका अगला संशोधन ICD-11 2015 में प्रस्तावित है।

## NOTES

सन् 1893 में फ्रांसीसी चिकित्सक जैकस बर्टिलीन ने बटिलोन क्लासिफिकेशन ऑफ कॉलेज ऑफ डेथ (Bartillon Clarification of Causes of Death) अंतरराष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान, शिकागो में प्रस्तुत किया जिसे अधिकांश राष्ट्रों द्वारा स्वीकार किया गया बाद में अमेरिकन जन स्वास्थ्य संगठन ने प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर इसके संशोधन की अनुसंधान और तदनुसार एक कमिटी के द्वारा इसका संशोधन किया जाता रहा। इसके छोटे संशोधन से पहले तक इसमें कुछ बड़ा परिवर्तन नहीं आया। 1948 से, इसके 10 वर्षों के अंतराल पर संशोधन का कार्य WHO को प्रदान किया गया और इस प्रकार WHO के द्वारा पहली बार ICD-6 1949 में प्रकाशित किया गया। समय के साथ यह महसूस किया गया कि संशोधन हेतु 10 वर्ष का अंतराल कम है फलतः इस निर्धारित समयावधि को 'आवश्यकतानुसार' कर दिया गया।

**ICIDH (International Clarification of Impairment Disability & Handicap)**– विश्व स्वास्थ्य संगठन के विभिन्न वर्गीकरणों में से एक है जो ICD का एक भाग है। यह सर्वप्रथम डब्ल्यू. एच. ओ. द्वारा 1980 में प्रकाशित किया गया जिसका प्रमुख उद्देश्य था विभिन्न बीमारियों के परिणामों की व्याख्या एवं अक्षमता द्वारा संबंधित विभिन्न लक्षणों की मानकीकृत व्याख्या करना। इसे ICD का पूरक माना जा सकता है। बाद में 2001 में इसे संशोधित किया गया है और इसका नाम (ICF (International Clarification of Functioning Disability and Health) रखा गया है जिसका मुख्य उद्देश्य है स्वास्थ्य के विभिन्न घटक और अक्षमता का एक मानकीकृत वर्गीकरण करना। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण परिवार का एक भाग है जो विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं और स्वास्थ्य संबंधी वर्गीकरण का कार्य करता है।

उपरोक्त तीनों संस्थाएं समानांतर स्वतंत्र रूप से, मानसिक विकारों, तथा मानसिक अक्षमताओं के मानक कोड निर्धारित करती हैं हालांकि उपरोक्त तीनों संस्थाओं द्वारा दिए गए बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा का तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्प होगा लेकिन यह हमारे अध्ययन क्षेत्र में नहीं है। वर्तमान

## NOTES

संदर्भ में हम, मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की ए.ए.आई.डी.डी. नवीन परिभाषाओं तक हम अपने अध्ययन को सीमित रखेंगे।

### परिभाषा, प्रकार तथा विशेषताएँ (Definition, Types and Characteristics)

मानसिक मंदता की परिभाषा AAMR 1983, 1992, 2002 और उनका तुलनात्मक विश्लेषण

मानसिक मंदता के क्षेत्र में काम करने वाली अग्रणी संस्था अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलिक्चुअल तथा डेवलपमेंटल डिसेबिलिटी ए.ए.ई.डी.डी. ने 1908 से लेकर अतक तक 11 बार मानसिक मंदता की परिभाषा, उसके नैदानिक मानदण्डों को संशोधित किया पर हम यहाँ पर 1980 के पश्चात् की मानसिक मंदता की परिभाषा का अध्ययन करेंगे।

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ मेंटल रिटार्डेशन (ए.एस.एम.र.) की ओर से ग्रासमैन (1983) ने मानसिक मंदता की परिभाषा दी है जिसके अनुसार मानसिक मंदता का अर्थ तात्त्विक रूप से औसत से कम ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप अनुकूली ब्रूवहार में संगामी असामान्यता की जाती है या तो संगामी अपामान्यता से जुड़ी होती है और जो विकासात्मक अवधि के चलते अभिव्यक्त होती है।

“सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया” इस प्रयोजन के लिए विकसित और क्षेत्र/देश विशेष की परिस्थितियों के अनुकूल बनाए गए मानकीकृत सामान्य बौद्धिक परीक्षण किये जाने पर प्राप्त होने वाले परिणामों को सामान्य बौद्धिक प्रक्रिया कहा जाता है।

“स्पष्ट रूप से औसत से कम” से अभिप्राय है बुद्धि के व्यक्तिगत रूप से प्रशासित (दो मानक विचलन कम) मानकीकृत माप पर 70 या उससे अल्प बुद्धिलब्धि।

“अनुकूली (अडेप्टिव) व्यवहार” वह स्तर है जिस पर कोई व्यक्ति विशेष आत्म-निर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के उन मानकों को पूरा करता है जिसकी उस आयु और सांस्कृतिक समूह के व्यक्तियों से अपेक्षा की जाती है।

ग्रासमैन की इस परिभाषा के अनुसार मानसिक मंदता के नैदानिक मानदण्ड निम्नलिखित थे :

- IQ 70 या उससे कम।
- अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी।
- 18 वर्ष की आयु तक इसका आरम्भ।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

### मानसिक मंदता का नैदानिक मानदण्ड

|                |                           |                           |          |
|----------------|---------------------------|---------------------------|----------|
|                | कम                        | ज्यादा                    |          |
|                | →                         |                           |          |
| <b>बौद्धिक</b> | मानसिक मंदता<br>नहीं<br>1 | मानसिक मंदता<br>नहीं<br>2 | ↑ ज्यादा |
|                | मानसिक मंदता<br>हाँ<br>3  | मानसिक मंदता<br>नहीं<br>4 |          |

### अनुकूलनीय व्यवहार

अगर हम उपरोक्त टेबल का विश्लेषण करें तो निम्नांकित चार परिस्थितियाँ सम्मुख आती हैं:

| परिस्थितियाँ                                      | मानसिक मंदता |
|---|--------------|
| 1. उच्च बौद्धिक + सीमित अनुकूलनीय व्यवहार         | नहीं         |
| 2. उच्च बौद्धिक क्षमता + उच्च अनुकूलनीय व्यवहार   | नहीं         |
| 3. सीमित बौद्धिक क्षमता + उच्च अनुकूलनीय व्यवहार  | नहीं         |
| 4. सीमित बौद्धिक क्षमता + सीमित अनुकूलनीय व्यवहार | हाँ          |

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा पर अगर गौर करें तो उपरोक्त में परिस्थिति (4) है जो मानसिक मंदता को इंगित करती है ..... कि इसका प्रारम्भ 18 वर्ष से पहले हुआ हो। इस परिस्थिति (4) में भी अगर, इसका आरंभ 18 वर्ष की आयु के पश्चात् हुआ हो तो वह मानसिक रोग की श्रेणी में आयेगा।

ग्रॉसमैन द्वारा दी गयी यह परिभाषा काफी महत्वपूर्ण और समसामयिक है। हालांकि इस परिभाषा के पश्चात् भी कई संशोधन हुए हैं परन्तु उन सभी में

## NOTES

उपरोक्त वर्णित परिभाषा में वस्तुनिष्ठता और सकारात्मकता लाने की कोशिश की गई है पर नैदानिक मानदण्ड मूलतः समान रखे गये हैं।

1992 में ल्यूकेसॉन ने उपरोक्त परिभाषा को संशोधित किया और उसमें स्पष्टता और वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास किया। AAMR की ओर से ल्यूकेसॉन 1992 के द्वारा मानसिक मंदता की संशोधित परिभाषा 1992 में दी गई जिसके अनुसार-

मानसिक मंदता का अर्थ व्यक्ति की वर्तमान क्रियाशीलता में महत्वपूर्ण कमी से है। जिसमें महत्वपूर्ण रूप से कम अधोऔसत बौद्धिक क्रियाशीलता के साथ निम्नलिखित क्षेत्रों में से दो या ज्यादा क्षेत्रों में संबद्ध कमी पाई जाती है।

स्व-सहायता, दैनिक कार्य, सामाजिक कौशल, सामुदायिक कौशल, स्व-निर्देश, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा, कार्यात्मक शिक्षा/ज्ञान, मनोसंरचनात्मक एवं कार्य।

मानसिक मंदता 18 वर्ष से पहले प्रकट होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ल्यूकेसॉन ने 1992 में, ग्रॉसमैन (1983) द्वारा दी गई मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता की परिभाषा को वस्तुनिष्ठ (objective) बनाने की कोशिश की। ल्यूकेसॉन के इस प्रयास को आगे बढ़ाते हुए श्लेलाक (shlallock) ने 2002 में, और वस्तुनिष्ठता लाने का प्रयास किया है।

AAMR (अमेरिकन असोसियेशन ऑफ मेंटल रिटाडेशन) 2002, श्लेलाक एवं अन्य के अनुसार

मानसिक मंदता एक अक्षमता है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है और यह कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में परिलक्षित होती है। इस अक्षमता का प्रारम्भ 18 वर्ष से पहले होता है।

अमेरिकन असोसिएशन ऑफ इंटेलेक्चुअल एण्ड डेवलपमेंटल डिसेबिलिटीज (American Association of Intellectual & Developmental Disabilities-AAIDD) 2012 श्लेलाक एवं अन्य के अनुसार 'बौद्धिक अक्षमता' एक अक्षमता है जिसमें व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है और यह कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में परिलक्षित होती है। इस अक्षमता का आरंभ 18 वर्ष से पहले होता है।

उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर आपको निम्नलिखित विशेषताएँ प्राप्त होंगी-

- (i) कमानसिक मंदता एक अक्षमता है।
- (ii) इस अक्षमता में मनुष्य की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में 'महत्वपूर्ण की' पायी जाती है।
- (iii) व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में दिखायी देती हैं।
- (iv) इस अक्षमता की शुरुआत 18 वर्ष से पूर्व होती है।

अब जरा परिभाषा के चारों उपभागों का थोड़ी गहराई से विश्लेषण करें-

- (क) मानसिक मंदता एक अक्षमता है। सामान्य भाषा में 'अक्षमता' का अर्थ है किसी व्यक्ति के शारीरिक भाग/भागों में ऐसी विचलन जिससे उसकी दैनिक कार्य क्षमता सामान्य व्यक्ति के सापेक्ष कम हो जाती है। उदाहरण के लिये यदि किसी मनुष्य का दुर्घटना में पैर कैंट जाये तो उसके पैर की कार्यक्षमता एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में कम हो जाती है। ठीक इसी प्रकार मानसिक मंदता एक अक्षमता है क्योंकि इससे प्रभावित व्यक्ति का मस्तिष्क सामान्य की तुलना में कम काम करने की वजह से उसकी दैनिक कार्यक्षमता सीमित हो जाती है।
- (ख) इस अक्षमता में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में 'महत्वपूर्ण कमी' पायी जाती है। मानसिक मंदता में व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार दोनों में सामान्य अर्थों से महत्वपूर्ण कमी पायी जाती है।

अनुकूलनीय व्यवहार से हमारा अर्थ उन दैनिक क्रियाओं से है जिसके द्वारा हम वातावरण को अपने अनुकूल बनाने के लिये करते हैं। उदाहरण के लिये हम ठंड लगती है तो हम चादर ओढ़ते हैं या गर्म कपड़े पहनते हैं।

- (ग) व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और अनुकूलनीय व्यवहार में कमी उसके सांकल्पनिक, सामाजिक और प्रायोगिक कौशलों में दर्शायी गई है।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

### मानसिक मंदता की परिभाषा का भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारत में मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता को परिभाषित करने का प्रयास ज्यादा प्राचीन नहीं है। पहली बार विकलांग जन अधिनियम (PWD Act) 1995 में मानसिक मंदता को परिभाषित किया गया है। जिसके अनुसार- “मानसिक मंदता का तात्पर्य मानव मस्तिष्क के अवरूद्ध अथवा अपूर्ण विकास से है जो सामान्यतः अधोसामान्य (subnormal) बौद्धिक क्षमता के रूप में परिलक्षित होता है।” भारतीय संदर्भ में दी गई मानसिक मंदता की यह परिभाषा अत्यंत प्राचीन प्रतीत होती है और अंतरराष्ट्रीय परिभाषाओं से इसकी तुलना करें तो अधूरी प्रतीत होती है क्योंकि इसमें मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के निदान हेतु ‘अनुकूलनीय व्यवहार का सीमित होना’ समाहित नहीं है। इसमें ‘बौद्धिक क्षमता’ को मानसिक मंदता का नैदानिक मानदंड माना गया है जो अपर्याप्त है केवल सीमित वर्तमान में इस कानून में संशोधन की बात चल रही है।

### मानसिक मंदता और मानसिक रूग्णता

#### सामान्य अंधविश्वास और सच्चाई

यद्यपि कि विगत दशकों में मानसिक मंदता के प्रति लोगों में जागरूकता आयी है, परंतु अभी भी प्रायः मानसिक मंदता को ‘मानसिक रोग’ समझा जाता है। मानसिक मंदता तथा मानसिक रोग दो भिन्न संकल्पनायें/अवस्था है। इस सन्दर्भ में, भारत में कानूनी विकास का अध्ययन बड़ा महत्वपूर्ण होगा। भारत में आजादी से पूर्व इंडियन लूनासी ऐक्ट, 1912 (Indian Lunacy Act 1912) में आया। इस कानून के अन्तर्गत मानसिक मंदता और मानसिक रोग दोनों को समान माना गया और समान प्रावधान किये गये। यह कानून स्वतंत्रता प्राप्ति के करीब चार दशकों बाद भी लागू रहा। इस दौरान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यधिक परिवर्तन हुए, मानसिक मंदता को मानसिक रोग से इतर मानकर दोनों के लिये अलग-अलग प्रावधान किये गये परन्तु भारत में 1986 तक दोनों में कोई कानूनी अंतर नहीं किया गया।

1987 में पहल बार मानसिक रोग को मानसिक मंदता से अलग माना गया और मेंटल हेल्थ ऐक्ट 1987 के अन्तर्गत मानसिक रूग्णता के लिये अलग प्रावधान बनाये गये। यहाँ पर भी, मानसिक मंदता और मानसिक रूग्णता को अलग-अलग मान तो लिये गये पर, प्रावधान बनाया गया केवल मानसिक रोग के लिये। उपरोक्त कानून द्वारा मानसिक मंदता को पूरी तरह से अलग

रखा गया। मानसिक मंद बालकों को सम्मिलित करते हुए भारत में पहला कानून बना वह है विकलांग जन कानून, 1995 जिसमें मानसिक मंदता की कानूनी परिभाषा के साथ ही उनके लिए विशिष्ट प्रावधान प्रस्तुत किये गये।

आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक मंद बच्चों को 'पागल' कहा जाना एवं माना जाना सामान्य है। इसके अतिरिक्त भी, मानसिक मंदता के प्रति विभिन्न भ्रांतियाँ मंदता बुरी आत्माओं के प्रभाव की वजह से होता है। मानसिक मंदता झाड़-फूँक से ठीक हो सकती है। शादी कर दिये जाने पर मानसिक मंदता ठीक हो सकती है। मानसिक मंदता एक छुआछूत का रोग है जा साथ, बैठने, साथ खेलने आदि द्वारा किसी को भी हो सकता है। मानसिक मंदता माँ-बाप के पिछले जन्म के कर्मों का फल है। यदि आप सहमत होंगे कि इस वैज्ञानिक युग में उपरोक्त मान्यताओं का कोई आधार नहीं। मानसिक मंदता न तो बुरी आत्माओं के प्रभाव से होती है और न ही झाड़-फूँक से उसे खत्म किया जा सकता है। मानसिक मंदता एक मानसिक अवस्था है, कोई छुआछूत का रोग नहीं कि मानसिक मंद व्यक्ति को छूने, साथ खेलने या बैठने से किसी को हो जाये। मानसिक मंदता के अधिकांश संभावित कारणों का पता लगाया जा चुका है तथा बच्चों में मानसिक मंदता का माँ-बाप के पिछले जन्म के कर्मों से कोई लेना-देना नहीं है।

## NOTES

इन भ्रांतियों में सर्वाधिक सामान्य भ्रांति है मानसिक मंदता को मानसिक रूग्णता मान लेना जो कि न केवल कम पढ़े लिखे लोगों में, बल्कि उन पढ़े लिखे लोगों में भी व्याप्त है जिनमें विकलांगता के प्रति जागरूकता नहीं है।

मानसिक मंदता मानसिक रूग्णता से पूर्णतया भिन्न है। जैसे मानसिक मंदता एक अवस्था (State of Mind) है, अतः इसे सही नहीं किया जा सकता है, हाँ नियमित प्रशिक्षण से उनका सामान्य जीवन अनुकूलतम स्तर तक लाया जा सकता है। 'मानसिक रोग' बीमारी है जिसे पूर्णतया ठीक किया जा सकता है और व्यक्ति एक सामान्य जीवन यापन कर सकता है। मानसिक मंदत में व्यक्ति की बुद्धि-लब्धि (IQ) 70 से कम होनी आवश्यक है, परन्तु मानसिक रोग के लिये ऐसा कोई मापदण्ड नहीं है। मानसिक रोग एक कम बुद्धि-लब्धि वाले को भी हो सकता है और एक उच्च बुद्धि-लब्धि वाले व्यक्ति को भी। जैसा कि आपने पिछली इकाई में पढ़ा, मानसिक मंद व्यक्तियों में अनुकूलनीय व्यवहार में कमी पायी जाती है, लेकिन मानसिक रूग्णता में व्यक्ति का अनुकूलनीय व्यवहार पूर्णतया सामान्य हो सकता है। इसके अलावा सबसे

## NOTES

विशिष्ट बात यह है कि मानसिक मंता विकासात्मक अवस्था अर्थात् 18 वर्ष से पूर्व ही हो सकती है, जबकि मानसिक रूग्णता किसी भी उम्र में हो सकती है। नीचे दिये गये टेबल में मानसिक मंदता और मानसिक रूग्णता में, विभिन्न मानदंडों के आधार पर, अन्तर स्पष्ट है जा इनके बीच का अन्तर समझने में आपकी मदद करेगा।

### मानसिक मंदता और मानसिक रूग्णता में अन्तर

|                       |   |  |
|-----------------------|---|--|
| अवधारणा               | मानसिक मंदता एक अवस्था है बीमारी नहीं                           | मानसिक रूग्णता एक रोग है।  |
| दवाइयों की प्रभाविकता | मानसिक मंदता पर दवाइयाँ प्रभावी नहीं है।                        | मानसिक रूग्णता दवाइयों से ठीक हो सकती है।  |
| चिकित्सा              | मानसिक मंदता में इलाज के  | मानसिक रूग्णता इलाज से ठीक बजाय प्रशिक्षण प्रभावकारी है। हो सकती है।                                       |
| आरंभ होने की आयु      | मानसिक मंदता का आरम्भ 18 की आयु तक ही होता है।                  | मानसिक रूग्णता किसी भी उम्र में हो सकती है।  |
| सामाजिक अनुकूलन       | मानसिक मंद बालकों का सामाजिक अनुकूल सीमित होता है।              | मानसिक रूग्ण व्यक्ति का सामाजिक सामान्य हो सकता है। कभी-कभी सम्भव है कि वह असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करे। |
| बुद्धि लब्धि          | मानसिक मंद बालकों की बौद्धिक कौशल (IQ) 70 से नीचे माना जाता है। | एक मानसिक रूग्ण व्यक्ति का आई.क्यू. उच्च भी हो सकता है और निम्न भी।  |
| समानता की संभावना     | सामान्य नहीं बनाये जा सकते                                      | सामान्य हो सकते हैं।   |
| वर्गीकरण का आधार      | 1. बुद्धि लब्धि<br>2. शैक्षिक<br>3. आवश्यक सहायता               | विभिन्न लक्षणों के आधार पर वृहत् रूप से साइकोसिस, न्यूरोसिस, न्यूरो साइकोसिस                               |

### मानसिक मंद बालकों का वर्गीकरण और विशेषताएँ

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता एवं 'सापेक्ष' एक जटिल संकल्पना है जो कि 'बौद्धिक क्षमता' 'अनुकूलनीय व्यवहार' और 'विकासात्मक अवधि'

(Developmental Period) की अवधारणा पर आधारित है। चूंकि समय के साथ उपरोक्त तीनों की परिभाषा और मान्यताएँ परिवर्तित होती रही हैं, अतः तदनुसार मानसिक मंदता बौद्धिक अक्षमता की संकल्पना में भी परिवर्तन होते रहें हैं जैसा कि आपने पिछली इकाई 19 में देखा है।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

| क्रम सं. | शब्दावली                              | आवश्यक सहायता   |
|----------|---------------------------------------|---|
| 1.       | सविराम (असतत) सहायता (Intermittent)   | अल्प अवधि की सहायता, जब आवश्यक हो अर्थात् हमेशा नहीं, धीरे-धीरे सहायता में कमी, केवल कुछ क्षेत्रों में कभी-कभी सहायता आवश्यक, तत्पश्चात्, स्वतंत्र जीवन के योग्य।                         |
| 2.       | सीमित सहायता                          | स्विराम श्रेणी से कुछ अधिक समय तक कुछ अधिक क्षेत्रों में, अधिक गहन, सहायता, लेकिन सतत् सहायता नहीं, अल्प सहायता के साथ जीवन-यापन करने में सक्षम।  |
| 3.       | विस्तृत सहायता (Extensive)            | अधिक गहन सहायता, जो कुछ क्षेत्रों में सतत् (Continuous) भी हो सकती है; आवश्यक सहायता की समय सीमा, तीव्रता एवं क्षेत्र अधिक गहन, सभी में नहीं परंतु कुछ क्षेत्रों में आजीवन सहायता आवश्यक। |
| 4.       | अति विस्तृत/व्यापक सहायता (Pervasive) | अधिकांश क्षेत्रों में जीवन पर्यन्त सतत सहायता आवश्यक सहायता की गहनता (Intensity) अत्यधिक।   |

### मानसिक मंदता का मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण (Psychological Classification of MR/ID)

यह मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का सबसे पुराना वर्गीकरण है जिसका मुख्य आधार है बौद्धिक परीक्षण पर प्राप्त अंक 'बुद्धि-लब्धि'। वर्तमान समय में, दो प्रमुख कारणों से इस वर्गीकरण का प्रचलन काफी अल्प होता जा रहा है। प्रथम कारण है: मानसिक मंदता स्पष्ट करने में बौद्धिक क्षमता के साथ साथ अनुकूलनीय व्यवहार पर बढ़ता जोर, और दूसरा कारण है वर्गीकरण के पीछे की नकारात्मकता जो यह बताता है कि बच्चे की बुद्धि बस इतनी ही है, जिसका प्रयोग कर के वह कुछ सीमित कार्यों में सक्षम है।

## NOTES

मनोवैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार, बुद्धिलब्धि के अनुसार, मानसिक मंदता के निम्नलिखित चार वर्ग हैं :

1. सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
2. मध्यम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
3. गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता
4. अतिगंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता

| क्रम सं. | शब्दावली                              | बुद्धिलब्धि |
|----------|---------------------------------------|-------------|
| 1.       | सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता    | 50-70       |
| 2.       | मध्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता     | 35-49       |
| 3.       | गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता    | 20-35       |
| 4.       | अतिगंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता | 20 से नीचे  |

यहाँ ध्यातव्य है कि :

- (i) चौथी श्रेणी में 20 से नीचे आई. क्यू. लिया गया है, 0-20 नहीं। इसकी वजह है कि प्रायः यह माना जाता है कि बच्चे जन्मजात बुद्धि होती है। अतः बुद्धिकम हो सकती है, शून्य नहीं।
- (ii) मानसिक मंदता सुनिश्चित करने में केवल बुद्धिलब्धि ही नहीं बल्कि बालक के अनुकूलनीय व्यवहार को भी बराबर महत्व दिया जाना चाहिए।

### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का शैक्षणिक वर्गीकरण (Educational Classification of ID)

सर्वप्रथम आपने मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का मनोवैज्ञानिक, वर्गीकरण देखा जिसमें मानसिक मंदता बौद्धिक अक्षमता को चार वर्गों सौम्य, गम्भीर और अतिगम्भीर में वर्गीकृत गया है। आगे के पृष्ठों में हम प्रचलित शैक्षिक वर्गीकरण का अध्ययन करेंगे जिसका मानदंड शैक्षिक उपलब्धियों की पूर्वापेक्षा है। हालांकि मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता क प्रति समाज के बदलते दृष्टिकोण के कारण शैक्षणिक वर्गीकरण का प्रचलन भी धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है।

शैक्षिक पूर्वापेक्षा के आधार पर- विद्वानों ने मानसिक मंदता को तीन श्रेणियों में बांटा है, जिनका विवरण निम्नांकित है-

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

| क्र. सं. | प्रयुक्त शब्दावली                                       | अनुमानित IQ      | शैक्षणिक अपेक्षाएं   |
|----------|---|------------------|--|
| 1.       | शिक्षणीय मानसिकता मंदता (Educable Mental Retardation) स | 50 से 75-80 तक   | 1. विद्यालय में छठी कक्षा तक पढ़ाई करने में सक्षम<br>2. सामाजिक समायोजन में सक्षम<br>3. स्वतंत्र व्यवसाय में सक्षम कुछ क्षेत्रों में आंशिक सहायता की जरूरत हो सकती है।<br>4. अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में कठिनाई |
| 2.       | प्रशिक्षण मानसिक मंदता (Educable Mental Retardation) स  | 20 से 50-55 तक   | स्वसहायता कौशल में प्रशिक्षणोपरांत सक्षम अल्प शैक्षणिक उपलब्धि प्रायः तीसरी, चौथी कक्षा तक, सामाजिक समायोजन घर एवं पड़ोसियों तक सीमित, व्यावसायिक दृष्टिकोण से आश्रय कार्यशाला (Sheltered Workshop) तक उपयुक्त     |
| 3.       | संरक्षणीय मानसिक मंदता (Custodial Mental Retardation)   | आई.क्यू 20 से कम | अत्यधिक देखरेख की आवश्यकता सामान्यतः अपनी दैनिक क्रिया-कलापों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते।  |

कुछ लेखकों ने, मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण की तरह ही धीमी गति से सीखने वाले बच्चे (Slow learners) IQ 70-75-90 तक को भी शैक्षणिक वर्गीकरण में शामिल किया है किन्तु वर्तमान लेखक के दृष्टिकोण से यह उपयुक्त प्रतीत नहीं होता क्योंकि मानसिक मंदता की प्रथम शर्त है, आई. क्यू 70 से कम। फिर इससे अधिक आई.क्यू वाले बालकों को मानसिक मंदता की श्रेणी में कैसे रखा जा सकता है?

### मानसिक मंदता के विभिन्न वर्गीकरणों की समतुल्यता

आपने तीन प्रमुख मानदण्डों: आई. क्यू, शैक्षणिक पूर्वापेक्षा और आवश्यक सहयोग के आधार पर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का वर्गीकरण देखा।

## NOTES

आपके मन में ये प्रश्न उठ रहे होंगे। क्या ये सभी भिन्न-भिन्न हैं? उत्तर है- नहीं। तीनों वर्गीकरण समतुल्य है केवल अंतर है लिए गए मानदण्डों का, जो मानसिक मंदता की पहचान के उद्देश्य पर निर्भर करता है। वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण (अपने नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण) प्रचलन से बाहर हो रहे हैं और 'आवश्यक सहायता' पर आधारित वर्गीकरण पर अधिक जोर दिया जा रहा है। आइये हम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता के तीनों महत्वपूर्ण वर्गीकरणों की समतुल्यता पर विचार करें।

| क्र. सं. | आई.क्यू. | आवश्यक सहायता के आधार पर वर्गीकरण     | मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण                         | शैक्षणिक                       |
|----------|----------|---------------------------------------|---|--------------------------------|
| 1.       | 50-70    | सविराम (असतत) (Intermittent)          | सौम्य मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Mild)     | शिक्षणीय मानसिक मंदता (EMR)    |
| 2.       | 35-49    | सीमित सहायता (Limited)                | मध्यम मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Moderate) | प्रशिक्षणीय मानसिक मंदता (TMR) |
| 3.       | 20-34    | विस्तृत सहायता                        | गंभीर मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता (Severs)   |                                |
| 4.       | 20 से कम | अति विस्तृत/व्यापक सहायता (Pervasive) | अतिगंभीर मानसिक मंदता/अक्षमता (Profound)      | संरक्षणीय मानसिक मंदता         |

### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की विशेषताएँ

मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता का आशय आयु के सापेक्ष बौद्धिक क्षमता एवं अनुकूलनीय व्यवहार में महत्वपूर्ण कमी से है जो बालक में जीवन पर्यन्त पाया जाता है। हालांकि उपयुक्त प्रशिक्षण के द्वारा मानसिक मंदता युक्त बालकों के अनुकूलनीय व्यवहार को उन्नत किया जा सकता है ज्यादातर बालक आजीवन इससे प्रभावित रहते हैं। सौम्य (Mild) मानसिक मंदता वाले अधिकांश बालकों की प्रायः तब तक वह पहचान नहीं हो पाती जब तक के स्कूल जाने नहीं लगते। सर्वाधिक मानसिक युक्त बालक (लगभग 85%) सौम्य मानसिक मंदता से ग्रसित पाए जाते हैं। प्रायः संप्रेक्षण कौशल, स्व-सहायता कौशल अथवा छठी-सातवीं कक्षा तक के शैक्षणिक व्यवहार में ज्यादा समस्या नहीं आती। मध्य श्रेणी (Moderate) की मानसिक मंदता वाले बालक प्रायः विकासात्मक मील के

## NOTES

पत्थर (Developmental Mile Stores) को विलम्ब से प्राप्त कर पाते हैं साथ ही उनमें प्री-स्कूल के समय में भी उम्र के उपयुक्त व्यवहारों का देर से विकास होता है। ये जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं। इनकी आयु और उपयुक्त व्यवहारों के मध्य अंतर बढ़ता जाता है और कई बार स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याएं भी दृष्टिगोचर होती हैं। गंभीर तथा अति गंभीर मानसिक मंदता युक्त बालकों की पहचान प्रायः जन्म से ही अथवा उसके कुछ दिनों बाद हो जाया करती है। इनमें से अधिकांश बालकों में केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) की गंभीर विकृति पाई जाती है। हालांकि बुद्धिलब्धि के आधार पर गंभीर एवं अति गंभीर बालकों की पहचान की जा सकती है परंतु भिन्न कार्यात्मक (Functional) कौशलों की अल्पता भी स्पष्ट होती है।

सामान्यतः मानसिक मंदता युक्त बालक निम्नलिखित विशेषताएं प्रदर्शित करते हैं:

### 1. शारीरिक विशेषताएं

- i. अधो-सामान्य शारीरिक विकास
- ii. शारीरिक विकृतियां।
- iii. स्थूल गामक (Gross Motor) और सूक्ष्म गामक कौशल (Fine Motor) आयु के अनुपयुक्त।
- iv. आँखों और हाथों में समवय का अभाव।

### 2. मानसिक विशेषताएं

- i. अधो औसत बुद्धि लब्धि (70 से कम)।
- ii. किसी कार्य में रुचि का अभाव।
- iii. कभी-कभी आक्रामकता एवं अकेले रहना।
- iv. अमूर्त संकल्पनाओं को समझने में कठिनाई।
- v. सोचने की सीमित क्षमता।
- vi. कमजोर स्मृति
- vii. कमजोर ध्यान केंद्रित क्षमता
- viii. कमजोर आत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान



## NOTES

- ix. सीमित सामाजिक समायोजन क्षमता
- x. सीखे गए कौशलों के सामान्यीकरण में कठिनाई
- xi. रूपएँ पैसे के लेन-देन में समस्या।
- xii. भाषा (अभिव्यक्ति एवं ग्राह्य) संबंधी समस्या।

### 3. मानसिक मंदता ग्रस्त बालकों की सामाजिक विशेषताएं :

- i. सामाजिक समायोजन क्षमता अनुपयुक्त
- ii. सहपाठियों एवं शिखकों के अंतर्संबंध बनाने में कठिनाई
- iii. कभी-कभी दूसरों एवं खुद को नुकसान पहुँचाने वाले व्यवहार
- iv. सामाजिक अवसरों पर उपयुक्त व्यवहार का अभाव
- v. शोषण से बचाव संबंधी कौशलों की कमी
- vi. अपनी इच्छाएँ अभिव्यक्त करने में उपयुक्त कौशलों की कमी

### 4. भावात्मक विशेषताएं

- i. भावात्मक असंतुलन एवं अस्थिरता।
- ii. पूर्व अथवा देर से प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति।
- iii. भावनात्मक संबंधों को समझने में कठिनाई।
- iv. कई बार मानसिक मंदता से जुड़ी अन्य मानसिक एवं शारीरिक बीमारियाँ तथा फिट्स, अवसाद आदि।

## आकलन के उपकरण तथा क्षेत्र (Tools and Area of Assessment)

परीक्षण उसके उद्देश्य उसके प्रकार तथा परीक्षण टूल्स

परीक्षण (Assessment) उसके उद्देश्य उसके प्रकार

परीक्षण (Assessment)

साधारण शब्दों में परीक्षण का आशय है किसी व्यक्ति के बारे में विभिन्न माध्यमों से सूचनार्थें एकत्रित करके उनका विश्लेषण करना।

बैलेंस एवं लारेसन (1982) के अनुसार, “परीक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति से संबंधित सूचनायें एकत्र करना, उन्हें संग्रहित करना तथा उनका विश्लेषण करना शामिल है ताकि उसके लिए शैक्षिक, निर्देशात्मक, अथवा प्रशासनिक निर्णय लिये जा सकें।

उपरोक्त परिभाषा का विश्लेषण करने पर परीक्षण से संबंधित निम्नांकित तथ्य सम्मुख आते हैं।

- i. परीक्षण एक प्रक्रिया है।
- ii. परीक्षण की प्रक्रिया में किसी व्यक्ति के बारे में सूचनायें एकत्र करके, उसे संग्रहित करना और उनका विश्लेषण करना सम्मिलित है।
- iii. सूचनाओं का विश्लेषण करके उन पर आधारित जानकारी का प्रयोग संदर्भित व्यक्ति से संबंधित शैक्षणिक, प्रशासनिक या निर्देशात्मक निर्णय लिया जा सके।

वस्तुतः ‘परीक्षण’ एक विस्तृत पद है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार एवं माध्यमों से किसी व्यक्ति के बारे में सूचनायें एकत्र की जाती हैं। सूचनाएँ संग्रहित एकत्र करने की तकनीकों में निम्नांकित सम्मिलित है।

- i. बच्चे का परोक्ष तथा प्रत्यक्ष जाँच
- ii. बच्चे के शिक्षक/अभिभावकों से साक्षात्कार
- iii. विभिन्न प्रकार की “प्रक्षेप्य” (Projective) एवं तथा अप्रक्षेप्य परीक्षण

### **मानसिक मंदता के परीक्षण का उद्देश्य (Purpose of Assessment)**

सामान्यता मानसिक मंदता धूँ बौद्धिक अक्षमता के संदर्भ में परीक्षण के निम्नांकित उद्देश्य हो सकते हैं :

- i. मानसिक मंदता की आरम्भिक जाँच एवं पहचान
- ii. शैक्षणिक कार्यक्रम एवं रणनीतियों के पूर्वनिर्धारण हेतु
- iii. मानसिक मंदतायुक्त बालक के वर्तमान निष्पादन स्तर तथा शैक्षणिक आवश्यकता का पूर्व निर्धारण
- iv. वर्गीकरण एवं शैक्षिक नियोजन के निर्धारण के लिए

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## **NOTES**

## NOTES

- v. व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम के विकास के लिए।
- vi. व्यक्तिगत शैक्षिक कार्यक्रम (IEP) की प्रभाविता का सबसे अधिक मूल्यांकन करने के लिए।

### परीक्षण के प्रकार (Types of Assessment)

परीक्षण विभिन्न मानदंडों के आधार पर अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं यथा मानकीकरण (Standardization) के आधार पर मानकीकृत परीक्षण प्रकार हो सकते हैं। इसी प्रकार, यदि हम परीक्षण के उद्देश्यों की बात करें तो उसके अनुसार परीक्षण के निम्नांकित प्रकार हो सकते हैं:

- i. शैक्षिक परीक्षण
- ii. मनोवैज्ञानिक परीक्षण
- iii. चिकित्सकीय परीक्षण
- iv. पाठ्यक्रम आधारित परीक्षण
- v. कार्यात्मक परीक्षण

लेखक आपसे आशा करता है कि आप परीक्षण तथा परीक्षणों के प्रकार के बारे में अन्य इकाइयों में यथास्थान पढ़ चुके होंगे।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बुद्धि परीक्षण :

- i. बिने कीमत परीक्षण इंटेलिजेंस डॉ. वी. के भाटिया, 1955 इससे पाँच उप टेस्ट :
- ii. ब्लॉक डिजाइन टेस्ट
- iii. एलेक्जेन्डर पास एलाग टेस्ट
- iv. इमिडियेट मेमरी टेस्ट
- v. पिक्चर कंस्ट्रक्शन टेस्ट

भारतीय परिप्रेक्ष्य में

- i. VSMS : विनलैंड सोशल मैचुरिटी स्केल

ii. ABS: एडेप्टिव विहैविर स्केल

## भारतीय परिप्रेक्ष्य में परीक्षण टूल्स

बौद्धिक अक्षमता/मानसिक मंदता युक्त बालकों के परीक्षण तथा उनके लिए कार्यक्रम बनाने के लिए यूं बहुत सारे टूल्स उपलब्ध हैं किन्तु भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रायः निम्नांकित टूल प्रयोग में लाए जा रहे हैं।

i. MDPS : मद्रास डेवलपमेंटल प्रोग्रामिंग सिस्टम

ii. FACP : फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग

iii. BASIC MR : विहैविरल असेसमेंट स्केल फॉर इंडियन चिल्ड्रेन विद मेंटल रिटार्डेशन

1. मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम (MDPS) : मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम, प्रो. पी. जयचंद्रन एवं वी. बिमला द्वारा 1968 में विकसित किया गया एक अधिकायत में प्रयोग किया जाने वाला परीक्षण एवं कार्यक्रम विकास का टूल है। मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम में कुल 360 आइटम हैं जो बालक के विकास के आरोही क्रम में रखे गए हैं। यह परीक्षण 18 क्षेत्रों में बांटा है और प्रत्येक क्षेत्र में 20 आइटम रखे गए हैं प्रत्येक क्षेत्रों में समस्त आइटमों को सरल से कठिन क्रियाओं की ओर सजाया गया है। मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम के अठारह क्षेत्र निम्नवत् हैं :

i. स्थूल गामक कौशल

ii. सूक्ष्म गामक कौशल                      गामक कौशल

iii. भोजन संबंधित क्रियायें

iv. कपड़े पहनना

v. सजना संवरना                              स्व सहायता/व्यक्तिगत कौशल

vi. शौच क्रिया

vii. ग्रहणशील भाषा

viii. अभिव्यक्ति की भाषा                      भाषा/संप्रेषण कौशल

ix. सामाजिक कौशल

## NOTES

## NOTES

- x. कार्यात्मक पठन
- xi. कार्यात्मक लेखन
- xii. संख्या संबंधित कौशल कार्यात्मक शैक्षणिक क्रियायें
- xiii. पैसा संबद्ध कौशल
- xiv. समय संबद्ध कौशल
- xv. घरेलू व्यवहार
- xvi. सामुदायिक संपर्क
- xvii. मनोरंजनात्मक कौशल मनोरंजनात्मक क्रियायें
- xviii. व्यावसायिक कौशल

### मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम की विशेषतायें

1. निरीक्षणीय तथा मापनीय शब्दों में लिखित।
2. अलग निर्मित 18 क्षेत्र जो बालक का वर्तमान स्तर निर्धारित करने में वस्तुनिष्ठता प्रदान करते हैं।
3. सभी आइटम सकारात्मक आकलन करने के लिए सकारात्मक भाषा में लिखे गये हैं अर्थात् समस्त आइटम में यह विशिष्ट ध्यान रखा गया है कि बच्चा क्या और किस कठिनाई स्तर तक करता है। बच्चा क्या नहीं कर सकता इसकी चर्चा नहीं की गयी है।
4. प्रत्येक क्षेत्र में समान संख्या में आइटम रखे गये हैं।
5. समस्त आइटम सरलता से कठिन के क्रम में व्यवस्थित गये हैं।
6. वैज्ञानिक पद्धति से निर्मित अंकन प्रणाली जो बच्चे के क्रमिक विकास का सरल वर्णित करता है।

### मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम की सीमायें

1. यह टूल काफी प्राचीन हो चुका है, परंतु इसमें समानुकूल परिवर्तन नहीं आये हैं।
2. टूल की अंकन पद्धति सीमित है जो हाँ या ना पर आधारित है।

### 3. टूल का प्रयोग करने में।

**अंकन प्रारूप (Progress Record)**— मद्रास डेवलपमेंट प्रोग्रामिंग सिस्टम में अंकन का एक प्रारूप होता है जिसमें बालक के निष्पादन का अन्तरालिक अंकन होता है (1 तिमाही, 2 तिमाही या तिमाही) तथा इसे परिवार को तथा अन्य को बताया जा सकता है जो विद्यार्थी के शिक्षा से जुड़े हुए हैं। परीक्षण पर अगर विद्यार्थी क्रिया का निष्पादन नहीं करता है इसको 'A' अंकित करते हैं। स्केल में रंगीन कोड भरने की व्यवस्था भी है। जिसमें 'A' को नीला तथा 'B' को लाल से भरते हैं। प्रत्येक तिमाही में प्रगति के आधार पर लाल को नीले रंग से ढका जा सकता है। टूल में एक मेनुअल है समूहीकरण तथा कार्यक्रम बनाने में मददगार होता है। यह विशेष शिक्षक के लिए अन्तरालिक परीक्षण तथा IEP कार्य योजना के लिए लाभप्रद है।

## NOTES

**2. फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग (FACP) :** फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सिंकदराबाद द्वारा विकसित एक कार्यक्रम निर्माण तथा असेसमेंट उपकरण है, जो मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों के परीक्षण एवं कार्यक्रम निर्माण हेतु प्रयुक्त किया जाता है। यह चेकलिस्ट सामान्यीकरण के सिद्धांत (Principle of Normalization) पर आधारित है। यह चेकलिस्ट मानसिक मंद बालकों (3-18 वर्ष) के लिए विशेष रूप से, निर्मित है जो उनकी योग्यता और उनकी आयु दोनों को ध्यान में रखते हुए, उनके अलग-अलग कक्षाओं में पढ़ाए जाने का विकल्प प्रस्तुत करता है।

एफ.ए.सी.पी. के अनुसार मानसिक मंदता युक्त बालकों की क्षमता और उनकी उम्र के अनुरूप उनकी कक्षा का चयन: एफ.ए.सी.पी. कुल सात खण्डों में बंटा है। प्रत्येक खण्ड बच्चे की आयु और योग्यता के अनुरूप उसे किसी एक कक्षा में नियोजित करने का सुझाव देते हैं। ये सात खण्ड तथा उनका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित हैं :

प्रत्येक खण्डों की जांच क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है। संदर्भित क्षेत्र हैं :

1. व्यक्तिगत क्रियाएं
2. सामाजिक क्रियाएं
3. शैक्षणिक क्रियाएं

## NOTES

4. व्यावसायिक क्रियाएं
5. मनोरंजनात्मक क्रियाएं

जैसा कि आपने ऊपर देखा कि फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग के सात खण्ड, निम्नांकित सात कक्षाओं में मानसिक मदन को उनकी योग्यता एवं आयु के अनुसार उन्हें नियोजित करता है।

- i. पूर्व प्राथमिक : यह बच्चे का प्रवेश स्तर है, जिसमें 3-6 वर्ष के बच्चे रखे जाते हैं। इस चेकलिस्ट पर परीक्षण करके उपरोक्त आयु वर्ग के बच्चों का समूहीकरण किया जाता है।
- ii. प्राथमिक स्तर : प्राथमिक स्तर दो भागों में विभाजित किया गया है- प्राथमिक 1 एवं प्राथमिक 2

**प्राथमिक-1 :** वे विद्यार्थी जो 80% पूर्व प्राथमिक जांच तालिका में प्राप्त कर लेते हैं उनको प्राथमिक-1 स्तर में उन्नति दी जाती है तथा विद्यार्थी जो इस स्तर में आते हैं उनकी आयु लगभग 7 वर्ष होती है। कुछ विद्यार्थी पास होने का मापदण्ड प्राप्त करने के लिए एक वर्ष और इस स्तर में रह सकते हैं। (जैसे एक विद्यार्थी 7 वर्ष का है प्राथमिक जांच तालिका में मूल्यांकन करने पर 60% उपलब्धि की है वह उसी कक्षा में अधिक समय के लिए रह सकता है। उसके पश्चात् यह देखा जाएगा कि वह होने वाला मानदण्ड प्राप्त करता है या नहीं/सफलता)

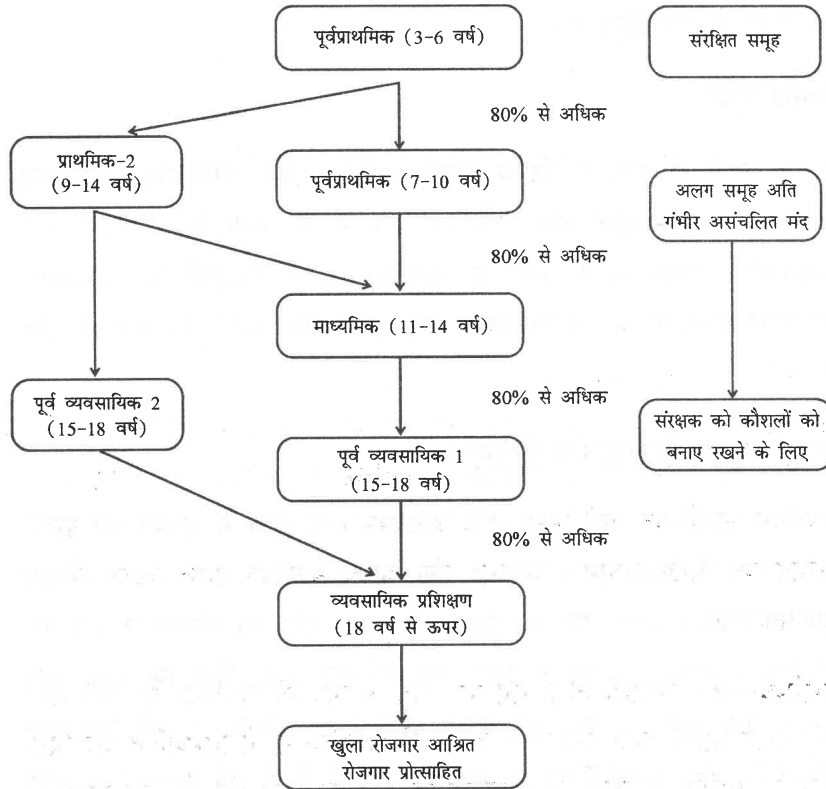
**प्राथमिक-2 :** विद्यार्थी जो 8 वर्ष की आयु के बाद भी प्राथमिक स्तर की जांच तालिका में 80% प्राप्त नहीं करते हैं उनको प्राथमिक-2 में विस्थापित कर दिया जाता है। संभवत ये बच्चे कम कार्यात्मक योग्यता वाले होते हैं। इस समूह में 8-14 आयु वर्ष के बच्चे आते हैं तथा इनको माध्यमिक स्तर में कक्षोन्नति दी जा सकती है। यदि वे 14 वर्ष से पहले 80% अंक हासिल कर पाते हैं। अगर 15 वर्ष की आयु में भी 80% से कम हासिल करते हैं तब उन्हें पहले व्यवसायिक-2 में स्थानांतरित किया जाता है।

**माध्यमिक समूह :** इस समूह में 11-14 आयु वर्ष के बालक आते हैं। यह मिश्रित समूह है (जिसमें प्राथमिक-1 तथा 2 दोनों से बच्चे आते हैं) कक्षा में 80% उपलब्धि प्राप्त करने पर विद्यार्थी को पूर्व व्यवसायिक-1 में कक्षोन्नति दी जाती है तथा जो बच्चे 80% कम हासिल करते हैं उन्हें पूर्व व्यवसायिक-2 में व्यवस्थित कर दिए जाते हैं।

**पूर्व व्यवसायिक-1 तथा 2** : दोनों ही समूहों में विद्यार्थी आयु 15-18 वर्ष के मध्य होती है। प्रशिक्षण केंद्र बिंदु विद्यार्थियों को मूलभूत कार्य कौशलों तथा घरेलू कार्यों में प्रशिक्षित करना है। इस प्रकार जांच तालिका में आने वाले प्रमुख विषय व्यवसायिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र हैं।

**FACP के अनुसार मानसिक मंद बालकों की पदोन्नति/कक्षोन्नति की विधि**

**NOTES**



18 वर्ष आयु के ऊपर के मानसिक मंदता युक्त व्यक्तियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण इकाइयों में उनकी संकलित मूल्यांकन रिपोर्टों के साथ आगे की कार्यक्रम योजना के लिए भेज दिया। इस पाठ्यक्रम में जांच तालिका में व्यवसायिक क्षेत्र शामिल नहीं है।

**संरक्षित समूह**

इस समूह में बहुत ही अल्प बौद्धिक क्षमता वाले वे बच्चे आते हैं (बिस्तर पर पड़े रहने वाले अति गंभीर विकलांग) और जांच तालिका के विषय, मूलभूत कौशल जैसे पानी पीना खाना खाना, शौच तथा मूलभूत गामक गतियां और संप्रेषण



## NOTES

में प्रशिक्षण आंशिक रूप से निष्पादन में ध्यान केंद्रित करते हैं अगर वे असंचरित बने रहते हैं तो उम्र बढ़ने के साथ-साथ अभिभावक/संरक्षक को बच्चे को स्कूल में लाना कठिन हो सकता है। ऐसे में साथ-सथ सीखे गए कौशलों को बनाए रखने के लिए संरक्षक को तैयार करना जरूरी हो जाता है। यह अच्छा है कि इस समूह के बच्चों को पूर्व व्यवसायिक कक्षा में आरम्भ करके प्रत्येक कक्षा में बांटा देना चाहिए इससे उनको उद्दीपित वातावरण मिलेगा। फिर भी इन्हें संरक्षित समूह की जांच तालिका द्वारा परीक्षण किया जाना चाहिए वह चाहे जिस भी समूह में विस्थापित हो।

### विषय सूची

प्रत्येक जांच तालिका में विषय प्रमुख क्षेत्रों से, जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक शैक्षणिक, व्यवसायिक और मनोरंजन क्षेत्र से हैं जैसा कि विभिन्न तथा पर्यावरणीय वातावरण से आते हैं। प्रत्येक क्षेत्र में विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को जोड़ने तथा हटाने का प्रावधान होता है।

### अंकन प्रारूप (Progress Record)

फंक्शनल असेसमेंट चेकलिस्ट फॉर प्रोग्रामिंग (FACP) में अंकन का प्रारूप इस प्रकार से तैयार किया गया है कि कार्यक्रम तैयार करने वाला परीक्षण सूचनाएं (प्रवेश स्तर) दर्ज कर सकता है तथा प्रगति का अंतरालिक (प्रत्येक त्रैमासिक) लगभग 3 वर्ष के लिए दर्ज कर सकता है। जैसा कि माना जाता है कि एक दिए गए स्तर पर बच्चा अधिक से अधिक 3 वर्ष तक ठहर सकता है। अंत में मूल्यांकन के बाद सभी क्षेत्रों में दी गई तालिका में बच्चे की प्रगति अंतरालिक रूप से दर्ज कर सकते हैं।

जांच तालिका में विद्यार्थी के निष्पादन को रिकॉर्ड करने का प्रावधान 3 वर्ष तक होता है। अगर एक विद्यार्थी एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उसे '+' अंकित किया जाता है अगर नहीं करता तो '-' अंकित किया जाता है। फिर विद्यार्थी के वर्तमान स्तर के परीक्षण में मदद के रूप में दी जाती है। प्रोत्साहन जैसे कि दृश्य प्रोत्साहन, संकेतिक प्रोत्साहन, मॉडलिंग, शारीरिक प्रोत्साहन, परीक्षण के तहत यह देखा जा सकता है कि बच्चा किस प्रोत्साहन से निष्पादन करता है। जैसे अगर वह सांकेतिक प्रोत्साहन से एक क्रिया का निष्पादन करता है तो उसे GP उस क्रिया के सम्मुख अंकित किया जाता है।

## NOTES

आइटम जो 'यस' या '+' होता है उन्हें एक अंक के रूप में गिना जाता है जबकि अन्य को जैसे- PP VP NE को चिन्हित तो किया जाता है पर अंक नहीं जोड़े जाते हैं। अन्तोगत्वा इसका उद्देश्य दिए गए क्रिया क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना होता है जिन क्रियाओं में बच्चा स्वतंत्र रूप से बच्चे निष्पादन करता है या कभी-कभी इशारे करने पर करता है। ऐसे आइटम्स को परिमाणित करने के लिए विचार किया जा सकता है। ऐसे विषय जिनमें AN अंकित होता है प्रशिक्षित का गणना करते समय सीख जाने वाले कुल विषयों से हटा दिए जाते हैं। उसी प्रकार अलावा विशिष्ट विषयों को प्रतिशत का गणना करने के लिए सम्मिलित होने चाहिए। जांच तालिका में 80% उपलब्धि एक स्तर से दूसरे स्तर में पदोन्नति के लिए विचारणीय होगी। जैसे बच्चे जो 80% पूर्व प्राथमिक जांच तालिका में प्राप्त करेंगे उन्हें प्राथमिक स्तर में पदोन्नति कर देंगे। यहाँ पर फिर भी सावधान किया जाता है कि खराब शिक्षण का कारण बच्चे में कमी अथवा सीखने की अयोग्यता नहीं होनी चाहिए।

मनोरंजन के अन्तर्गत दिए गए विषयों को परिणाम के लिए नहीं गिना जाना चाहिए क्योंकि यह विषय रुचिपरक है। दी जाने वाली श्रेणियों में A रुचि लेता है तथा प्रभावशाली तरीके से भाग लेता है। B भाग लेता है जब दूसरे प्रारंभ करते हैं। C स्वतः को सम्मिलित करता है, लेकिन नियम मालूम नहीं होते हैं। D रुचि से अवलोकन करता है। E उदासीन रहता है। NE कोई अवसर पहल नहीं मिला। जैसा नीचे बताया गया मनोरंजन क्रियाओं के बच्चे के साथ संलग्न होने का वर्णन करती है। ऐसे प्राप्तांक सामान्य स्कूलों के तंत्रों के समानांतर होता है। आखिरी पेज पर संकलित प्राप्तांक वह श्रेणी हो सकती है जिसे मनोरंजन विषयों के जांच सबसे अधिक श्रेणी मिलती है। अगर एक से ज्यादा श्रेणियों के बराबर प्राप्तांक मिलते हैं तो शिक्षक को अपने विवेक का प्रयोग करके निर्णय लेना पड़ता है।

## प्रगति रिपोर्ट लेखन

अंतरालिक मूल्यांकन आंकड़े तथा अंकित करने की सुविधा के प्रावधान के अलावा विद्यार्थी वर्ग द्वारा दी गयी प्रगति के अंकन का प्रावधान भी है। यह टूल व्यापक है तथा शिक्षकों का प्रयोग के लिए आसान है। जैसे इसमें अंतरालिक जांच सुविधा और संक्षिप्त कार्यक्रम तैयार करने के लिए लेखन हेतु आसान प्रारूप भी है।

## NOTES

### FACP की विशेषताएँ

- i. कार्यात्मक उपागम पर आधारित
- ii. नये व्यवहारों का अंकन का प्रावधान
- iii. सामान्यीकरण सिद्धांत पर आधारित
- iv. कक्षा नियोजन के स्पष्ट विकल्प का प्रावधान
- v. मानकीकृत (Standardized)
- vi. अंकन प्रारूप उपलब्ध

बच्चे का परीक्षण आसानी से किया जा सकता है।

### FACP की सीमायें

- i. नवीन आइटम जोड़ने की सुविधा फलतः परीक्षण विश्वसनीयता और वैधता प्रभावित हो सकती है।
- ii. छात्र की उन्नति का रिकॉर्ड रखने हेतु विशेषज्ञ की आवश्यकता अनावश्यक पेपर कार्य
- iii. विशेष शिक्षा का विकल्प, समावेशी शिक्षा का नहीं। लंबे समय से पुनरावृत्ति नहीं।
- iv. समस्यात्मक व्यवहार के लिए कोई क्षेत्र नहीं।

### बेसिक एम. आर.

बेसिक एम. आर. के दो भागों में विभाजित किया गया है : प्रथम भाग में कौशल व्यवहार और द्वितीय भाग में समस्यात्मक व्यवहारों के परीक्षण को प्रावधान है। प्रथम भाग में कुल 280 आइटम है जो सात विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित हैं, के सात क्षेत्र निम्नांकित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में 40 आइटम संकलित हैं। बेसिक एम. आर.

- i. गामक एवं सहन-सहन से संबंधित क्रियाएं
- ii. भाषा से संबद्ध व्यवहार

iii. शैक्षणिक/पठन-पाठन से संबद्ध क्रियाएं

iv. टंक एवं समय का ज्ञान

v. घरेलू सामाजिक व्यवहार

vi. पूर्व-व्यवसायिक ज्ञान

बेसिक एम. आर. के दूसरे भाग को 10 अलग-अलग खंडों में विभाजित किया गया है। जिनमें कुछ 75 आइटम हैं। समस्यात्मक व्यवहारों के आकलन हेतु निर्मित इस भाग के 10 क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

i. उग्र तथा विनाशक व्यवहार

ii. चिड़चिड़ापन तथा झल्लाहट

iii. दूसरों के लिए घातक व्यवहार

iv. स्वयं के लिए घातक व्यवहार

v. पुनरावृत्ति की आदत

vi. विचित्र व्यवहार

vii. अति चंचलता

viii. विद्रोही व्यवहार

ix. असामाजिक व्यवहार

x. डर

प्रत्येक भाग में आइटम की संख्या अलग-अलग है।

बेसिक एम. आर. की विशेषताएं

i. समस्यात्मक व्यवहारों के आकलन की सुविधा

ii. आवधिक आकलन की सुविधा

iii. मापनीय प्रत्यक्ष व्यवहारों पर आधारित

iv. विशेष रूप से भारतीय बच्चों के लिए निर्मित

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

## सामाजिक कौशल एवं शैक्षिक सम्बन्धी कार्यात्मक युक्तियाँ (Strategies for Functional academics and social skills)

### NOTES

व्यवहार लक्ष्य कितना भी विशिष्ट हो, प्रशिक्षण पद्धति कोई भी प्रयोग में लाई जाय, मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों के शिक्षा के लिए हमें लक्ष्यों का चयन करते समय निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान रखना चाहिए -

1. सरल से जटिल की ओर (Simple to Complex) - मानसिक मंद बच्चों को पढ़ाने की योजना में सदा सरल से जटिल की ओर बढ़ना चाहिए। जब सरल चरणों से आरम्भ करेंगे तो बच्चे को सफलता अवश्य मिलेगी। सफलता से बच्चा और कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित होगा। उदाहरण के लिए-रंगों के नाम बताने से रंगों को जोड़ना आसान होगा। उसी प्रकार पहले सार्थक रूप से गिनना आसान है और तत्पश्चात् जोड़ना और घटाना आदि जटिल है।
2. परिचित से अपरिचित की ओर (Known to unknown) - मानसिक मंद बच्चों को उनके परिचित कार्य सिखाना हमेशा सार्थक होगा। बाद में और धीरे-धीरे अपरिचित कार्यों को सिखाना उचित होगा। उदाहरण के लिए ये दो क्रियायें-कमीज पहनने और बटन लगाने में यदि बच्चा कमीज पहनना जानता है तो उसे वही क्रिया करवाएँ और पश्चात् बटन लगाना सिखाएँ।
3. मूर्त से अमूर्त की ओर (Concrete to abstract) - अधिकतर मानसिक मंद बच्चे अमूर्त प्रत्ययों को सीखने में कठिनाई का सामना करते हैं। उनको मूर्त वस्तुयें आसानी से समझ में आ जाती है। उदाहरण के लिए गणित में योग सिखाने के लिए प्रारम्भ में मानसिक मंद बच्चों को मूर्त पदार्थों के सहारे ही सिखाना होगा तथा बाद में 'मानसिक स्तर' पर गणित में योग सिखाया जा सकता है।
4. सम्पूर्ण से अंश ( सामान्य से विशेष ) की ओर (Whole to Part) - मानसिक मंद बच्चों के सम्मुख कोई भी कार्य उसके सम्पूर्ण रूप से बताये जाने चाहिए और बाद में धीरे-धीरे उनके भागों की अलग-अलग जानकारी देनी चाहिए। जैसे-बच्चों को शरीर के अंगों या अवयवों के बारे में बताने के लिए प्रारम्भ से शरीर के भागों जैसे आंख, कान, नाक, आदि का ज्ञान

कराये फिर उनको सूक्ष्म भागों की जानकारी दे सकते हैं। जैसे भौह पलक आदि।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

#### 5. मनोवैज्ञानिकता से तार्किकता की ओर (Psychological to logical)

– मानसिक मंदता युक्त बालकों को पहले कोई भी काम मनोवैज्ञानिक विकास के क्रम से सिखाया जाना चाहिए बाद में उसे अलग-अलग तार्किक चीजें सिखाई जा सकती हैं अर्थात् बच्चे को सिखाते समय उसके मनोवैज्ञानिक विकास के क्रम का ध्यान रखना चाहिए। उदाहरण के लिए बच्चा पहले नकल कर के बोलना सीखता है तत्पश्चात् में अक्षर ज्ञान और लिखना सीखता है। अतः कोई भी शब्द पहले बोलना और तब लिखित रूप में सिखाया जाना चाहिए।

### NOTES

पूरे शैक्षिक वर्ष में कार्यान्वित किए जाने वाले पूर्वनियोजित निर्देशों को दीर्घावधि लक्ष्य कहा जाता है। दूसरे शब्दों में लम्बी अवधि लक्ष्य बालक विशेष से अपेक्षित उपलब्धियाँ या सफल प्रयत्न को दर्शाते हैं। लम्बी अवधि को वार्षिक लक्ष्य भी कहते हैं। वर्ष के अंत में मूल्यांकन में यदि यह पाया जाता है कि बच्चे ने वे लक्ष्य प्राप्त कर लिये हैं तो उसके लिए फिर नवीन लक्ष्य निर्धारित किये जायेंगे। यदि बच्चे की प्रगति उपयुक्त नहीं पायी गयी तो, उसी लक्ष्य को अगली अवधि तक ले जाया जाता है जब तक बच्चा उस पर सफलता न प्राप्त कर ले।

#### दीर्घावधि लक्ष्यों का चयन

- i. लम्बी अवधि लक्ष्य के चयन के दौरान निम्नलिखित बातें ध्यान में चाहिए।
- ii. बच्चे द्वारा पिछली उपलब्धियों और सफलता की जानकारी।
- iii. बच्चे की वर्तमान योग्यता, अथवा कर पाने की क्षमता
- iv. चयन किये हुए लम्बी अवधि लक्ष्य को प्राप्त करने की व्यवहारिकता अथवा क्रियात्मकता जो कि, दैनिक जीवन में मदद करती है।
- v. बच्चे की आवश्यकतायें और लम्बी अवधि लक्ष्य से उनका साहचर्य।
- vi. आवश्यक समय और साधनों की उपलब्धता जिससे बच्चा लक्ष्य को एक वर्ष में हासिल कर पाए।

## NOTES

vii. बालक के सीखने की गति और निर्धारित लक्ष्यों में सामंजस्य

viii. बच्चे की मंदता का स्तर तथा उसके दीर्घावधि लक्ष्यों में सामंजस्य

### अल्पावधि लक्ष्य/व्यावहारिक उद्देश्य / विशिष्ट उद्देश्य (Specific/Behavioral Objectives)

अल्पावधि लक्ष्यों को व्यावहारिक उद्देश्य या विशिष्ट उद्देश्य भी कहते हैं। ये दीर्घावधि लक्ष्य के वे छोटे-छोटे भाग हैं जिन्हें अपेक्षाकृत लघु अवधि में प्राप्त किया जा सकता है। स्पष्ट रूप से समझने के लिए विशेष उद्देश्य, वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के रास्ते के 'मील के पत्थर' के समान हैं।

दीर्घावधि लक्ष्यों का प्रायः एक साल पश्चात् पुर्ननिरीक्षण किया जाता है और उस समय बच्चे की प्रगति का आकलन कर के तदनुसार उसमें परिवर्तन पर विचार किया जाता है। अल्प अवधि लक्ष्यों को आवश्यकता पड़ने पर या दो या तीन महीनों के अंतराल के बाद मूल्यांकन किया जाता है और यदि बच्चे की उन्नति संतोषजनक हो तो अगला विशिष्ट उद्देश्य बच्चे के लिए निर्धारित करते हैं।

### अल्प अवधि लक्ष्य/व्यवहार उद्देश्यों का चयन

अल्पावधि/विशिष्ट/व्यवहारिक उद्देश्यों का चयन करते समय निम्नलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए:

- i. व्यवहार उद्देश्य का चयन बच्चे की योग्यता, उम्र, उसकी विशेष आवश्यकताएँ, लिंग उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि और वर्तमान स्तर को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। उदाहरण के लिए-बच्चे को खरीददारी कर कौशल तभी सिखाना चाहिए, जब उसे अंकों का ज्ञान हो।
- ii. ऐसे व्यवहारिक उद्देश्यों का चयन किया जाना चाहिए जो कि, क्रियात्मक रूप से एक मानविक मंद बालक के दैनिक जीवन में प्रासंगिक और उपयोगी हो।
- iii. व्यावहारिक उद्देश्यों का चयन करते समय समयावधि का ध्यान जरूरी है। यदि आप ऐसे व्यावहारिक उद्देश्यों का चयन करेंगे जो तय समय सीमा में पूर्ण नहीं किये जा सके तो आपको एवं आपके साथ-साथ बच्चे को भी असफलता की वजह से मानसिक तनाव होगा।

iv. विकास के क्रम में पहले आने वाले व्यवहारों को पहले और बाद में आने वाले व्यवहारों को बाद में लेना चाहिए।

नीचे का उदाहरण लम्बी अवधि लक्ष्य और अल्प अवधि के मध्य के अंतर को स्पष्ट करता है-

सोहनलाल 16 साल बौद्धिक अक्षमता युक्त बालक है। कौन से व्यवहार वह कर पाता है और कौन से नहीं कर पाता, ये जानने के लिए शिक्षक ने बेसिक एम. आर. की मदद ली और उसके आधार पर उसने नीचे दिए गए वार्षिक उद्देश्य बनाए -

i. स्वयं सेवा कुशलताएँ

ii. पढ़ने-लिखने की कुशलताएँ

सोहनलाल के लिए उसकी लम्बी अवधि के लक्ष्यों में चुने गए कम अवधि लक्ष्य इस प्रकार थे-

i. स्वयं सेवा कुशलताएँ

(क) चप्पल पहनना

ii. पढ़ने-लिखने की कुशलताएँ

(क) वस्तुओं को चित्र के साथ मिलाना

(ख) चौकोन का चित्र बनाना

इन लम्बी अवधि अथवा अल्प अवधि लक्ष्यों की संख्या बालक की वर्तमान योग्यता और साथ ही साथ शिक्षक को उपलब्ध साधनों पर निर्भर करती है।

मानसिक मंदता युक्त बालकों को शिक्षण के लिए प्रायः स्किनर द्वारा प्रतिपादित क्रिया-प्रमुख अनुबंधनवाद में सुझाई गई विधियाँ यथा चौनिंग शॉपिंग, पुनर्बलन, विलोपन आदि प्रयुक्त किये जाते हैं लेखक उम्मीद करता है कि क्रिया प्रसृत अनुबंधन का स्किनर का सिद्धांत आप सीखने के सिद्धांत खंड में कर चुके हैं।

यहाँ पर हम इन विधियों का वर्णन मानसिक मंदता में विस्तृत रूप से करेंगे-

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

### कार्य विश्लेषण (Task Analysis)

कार्य विश्लेषण का सामान्य अर्थ है किसी बड़े, जटिल कार्य को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित तथा उसे एक तार्किक क्रम में जोड़ना। मैकार्थी (1987) के अनुसार कार्य-विश्लेषण शिक्षण की एक तकनीक है जिसमें किसी कार्य को शिक्षण योग्य खंडों में बांटकर उसे क्रमबद्ध किया जाता है। जैसे-जैसे बालक छोटे-छोटे खंडों को सीखना है, वह उस कार्य को स्वतंत्र रूप से कर पाने में सक्षम होता जाता है।

उदाहरण के लिए यदि किसी बौद्धिक असमता युक्त बालक को हमें ब्रश करना सिखाना हो तो उसके लिए 'ब्रश करना' कार्य को निम्नांकित छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर सकते हैं-

- i. टूथपेस्ट का ट्यूब बायें हाथ में लेना।
- ii. दायें हाथ से ढक्कन खोलना।
- iii. बायें हाथ से ब्रश पकड़ना।
- iv. टूथ पेस्ट ट्यूब को दबाना।
- v. टूथ पेस्ट ट्यूब से आवश्यकतानुसार पेस्ट निकालना।
- vi. टूथपेस्ट ब्रश पर लगाना।
- vii. ट्यूब बंद करना उसे यथा-स्थान रखना।
- viii. ब्रश दांतों पर बायें से दायें एवं दायें से बायें हल्के दबाव के साथ थोड़ी देर घुमाना।
- ix. नल के पास जाना।
- x. नल की टॉपी खोलना।
- xi. पानी मुँह में लेकर चार पाँच बार कुल्ला करना।
- xii. ब्रश को धोना।
- xiii. ब्रश को यथा स्थान रखना।

यहाँ पर यह ध्यान देने योग्य है कि किसी कार्य को कितने उपखंडों में बांटा जाये। यह बच्चे की क्षमता, कार्य की प्रकृति और बच्चे के सीखने की गति पर निर्भर करता है। किसी कार्य के उपखंड को भी बालक की जरूरत के अनुसार पुनः उपखंडों में बांटा जा सकता है-

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

### शृंखलाबद्धता (चेनिंग)

हमने देखा कि, कई जटिल व्यवहार मानसिक मंद बच्चों को सिखाए जा सकते हैं। यदि उन व्यवहारों के सरल और छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करके सिखाया जाए। शृंखलाबद्धता का सामान्य अर्थ है किसी बड़े, जटिल कार्य के छोटे-छोटे खंडों को एक तार्किक क्रम में जोड़ना। शृंखलाबद्धता पद्धति का प्रयोग दो प्रकार से किया जा सकता है। अग्र शृंखलाबद्धता (Forward Chaining) और पश्च शृंखलाबद्धता (Backward Chaining)। अग्र शृंखलाबद्धता (Forward Chaining) में पहला उपकार्य पहले और आखिर का सबसे आखिर में सिखाते हैं जबकि पश्च शृंखलाबद्धता (Backward Chaining) में सबसे आखिरी काम पहले और सबसे प्रथम कार्य अंत में सिखाते हैं। सामान्यतः पढ़ने सम्बन्धी कार्यों में अग्र शृंखलाबद्धता का प्रयोग करते हैं और स्वसहायता कौशल शिक्षण में पश्च शृंखलाबद्धता का। जैसे यदि कोई बच्चा पैट पहनना सीख रहा हो तो पहले हम उसे पैट की जिप बंद करना सिखायेंगे फिर उसे पैट को घुटनों के ऊपर करना सिखायेंगे और सबसे आखिर में पैट को पावों में डालना सिखायेंगे पश्च का लाभ यह है कि इससे बच्चे को खुशी मिलती है कि उसने कार्य करना सीख लिया।

### NOTES

#### शृंखलाबद्धता के प्रयोग के निर्देश

- i. लक्ष्य व्यवहार तक पहुँचने के लिए जिन छोटे-छोटे चरणों को सीखते हुए आगे बढ़ना है, उनका वर्णित करें।
- ii. यदि एक व्यवहार उद्देश्य पाँच क्रमबद्ध चरणों में विभाजित किया गया है तब इसके लिए आप पहले चरण को सिखायेंगे, फिर दूसरे को और तब दोनों चरणों में उचित सम्बन्ध भी दर्शायेंगे। इसी प्रकार जब तीसरा चरण सिखाएंगे तो दूसरे और तीसरे चरण में स्वाभाविक सम्बन्ध अवश्य दर्शाएँ। आगे इसी प्रकार प्रत्येक चरण को आपस में सम्बन्धित करते हुए दूसरे की कड़ी को मजबूत करते हुए व्यवहार लक्ष्य पूर्व किया जा सकता है।
- iii. प्रत्येक चरण पर उचित पुरस्कार दें।

## NOTES

- iv. मानसिक मंद बच्चों को खुद सेवा क्रियाओं को सिखाने के लिए बैकवर्ड चैनिंग का प्रयोग करें।
- v. शृंखला में जिस क्रम में चरण बनाए गए हों उन्हीं चरणों में बच्चों को सिखाएँ।
- vi. अगले चरण की ओर तभी बढ़ें जब उसने पूर्व चरण को सीा लिया हो।

### शेपिंग (Shaping)

शेपिंग का सामान्यतः अर्थ है आकार देना अर्थात् शेपिंग मानसिक मंदता युक्त बालकों के शिक्षा ग्रहण करने की वह विधि है जिसमें शिक्षक बालक के लक्ष्योन्मुख हर सफल प्रयास को तब तक प्रोत्साहित करता रहता है जब तक कि लक्ष्य व्यवहार हासिल न कर लिया जाये। शिक्षकों को मानसिक मंद बच्चों को ऐसे कुछ व्यवहार सिखाने पड़ते हैं जिसे बच्चे ने कभी न किये हों। ऐसे व्यवहारों को शिक्षण में शेपिंग की विधि अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकती है। शेपिंग में बच्चे द्वारा दिखाए गए थोड़े परिवर्तन पर भी ध्यान देना और पुरस्कृत करना होगा, जिससे लक्ष्य व्यवहार की ओर बढ़ने में बच्चे को उत्साह मिलता रहे। मानसिक मंद बच्चों के प्रशिक्षण हेतु शेपिंग के प्रयोग से बच्चे और शिक्षक दोनों की निराशा की भावना कम की जा सकती है। शिक्षण आनन्ददायक हो जाता है। क्योंकि, बच्चे अपने थोड़े से उन्नति के लिए भी प्रोत्साहन पाते हैं।

उदाहरण के लिए यदि एक बच्चा "पानी" नहीं बोल पाता है, किन्तु उसके निकट कुछ "पा पा" जैसा बोल लेता है तो शेपिंग पद्धति का प्रयोग कर कदम पर कदम उसे "पा पा" -- "पाई" कहलाने अथवा बुलाते हुए अन्ततः "पानी" बुलवा सकेंगे।

### शेपिंग पद्धति को प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाने के निर्देश

- i. व्यवहार प्रशिक्षण के लिए शेपिंग के साथ अन्य पद्धतियों, जैसे प्रोत्साहन, शृंखलाबद्ध, फेडिंग तथा मॉडलिंग के साथ करें।
- ii. शेपिंग के कदम या चरण इतने बड़े न हो कि बच्चा उसे पूर्ण नहीं कर सकें, और आगे वाले कदम पर न पहुँच पाए साथ ही इतना छोटा न हो कि, आवश्यक समय बरबाद हो।

- iii. शोपिंग पद्धति के किसी भी समय चरणों के आवश्यक प्रकार में परिवर्तन के लिए तैयार रहें। यह बच्चे की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## शोपिंग प्रक्रिया के लक्षण

- i. लक्ष्य व्यवहार चुनें।
- ii. बच्चे के उस आरम्भिक व्यवहार को चुनें जो लक्ष्य व्यवहार से किसी रूप से मिलता हो।
- iii. प्रभावकारी पुरस्कार का चयन करें।
- iv. प्रारम्भिक व्यवहार को पुरस्कृत तब तक करते रहें जब तक वह बार-बार न करने लगे।
- v. लक्ष्य व्यवहार से मिलती-जुलती कोई भी कोशिश पुरस्कृत करते रहें।
- vi. लक्ष्य व्यवहार जब-जब मिलता है, पुरस्कृत करते रहें।
- vii. लक्ष्य व्यवहार को कभी-कभी पुरस्कृत करें।

एक गोलाकार आकृति खींचना सिखाने के पद्धति या प्रक्रिया के प्रत्येक कदम को नीचे के उदाहरण में दिखाया गया है -

## शोपिंग प्रक्रिया का उदाहरण

- i. ऐसा व्यवहार चुनें जिसे बच्चा पहले से कर रहा हो, और जो लक्ष्य व्यवहार से मिलता हो। यदि आप को लक्ष्य है बच्चे को गोलाकार आकृति बनाना सिखाना, और बच्चा पेन्सिल पकड़ लेता है, कागज पर कुछ लकीरें बना लेता है, तब आप शोपिंग पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं।
- ii. बच्चे के साथ, उसके स्तर पर काम करना आरम्भ करें, और पुरस्कार दें। इससे बच्चे को मालूम हो जाएगा कि, उसके ऐसा करने से पुरस्कार मिलता है। प्रस्तुत उदाहरण में यदि बच्चा लकीरें घसीटता है तो उसे पुरस्कृत करें।
- iii. अब बच्चे को पहले से परिचित व्यवहार से थोड़ा आगे बढ़ाते हुए कुछ गोलाकार अथवा अर्ध गोलाकार रेखायें बनाना सिखायें, पुरस्कृत करते रहें।
- iv. अब बच्चे को लकीरें घसीटने पर कोई पुरस्कार न दें। पुरस्कृत तभी करें जब बच्चा गोलाकार जैसी आकृति बनाएँ।

## NOTES

## NOTES

### मॉडलिंग या अनुकरणात्मक सीखना

जाने अनजाने हम सभी, बहुत से अपने व्यवहार अनुकरण सीखते या अर्जित करते हैं। बच्चे भी अपने बहुत व्यवहार दूसरों को देख-देख कर सीखते रहते हैं। बच्चे उन लोगों को अनुकरण अधिक करते हैं जिन्हें वे अधिक महत्व देते हैं, जैसे- शिक्षक, माँ-बाप, दोस्त, फिल्म या टी.वी. सितार, आदि। सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अल्बर्ट बन्दूरा के सामाजिक अधिगम के सिद्धांत के अनुसार बच्चे अधिकतर सामाजिक व्यवहार अनुकरण करके सीख जाते हैं। इसी सिद्धांत का प्रयोग करके मॉडलिंग की विधि द्वारा भी कई व्यवहार मानसिक मंदता युक्त बालकों को सिखाये जा सकते हैं। यदि मॉडलिंग पद्धति का प्रयोग करें, तो यह प्रभावकारी व्यवहार परिवर्तन ला सकता है। इसका कक्षा तथा विद्यालय में बराबर प्रयोग किया जा सकता है।

बच्चों को नए व्यवहार सिखाने के लिए उन्हें दिखायें कि, वह व्यवहार कैसे होता है? कैसे किया जाता है? और यदि बच्चा उसका अनुकरण करे, तो ऐसी विधि को मॉडलिंग कहेंगे। इस विधि का प्रयोग नवीन व्यवहार को सिखाने और सीखे हुए व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है।

### सहायता करना अथवा प्रोम्प्टिंग (Prompting)

किसी भी क्रिया या व्यवहार कुशलता को सीखने के लिए प्रायः समस्त को निर्देश, सलाह, या मदद की आवश्यकता पड़ती है। मानसिक मंद बच्चे इस प्रकार की मदद अपने उमर के सामान्य लोगों से कहीं ज्यादा चाहते हैं। प्रांट का सामान्य अर्थ है सहायता करना। कई बार मानसिक मन्दता युक्त बालक किसी क्रिया को कर पाने में कठिनाई महसूस करते हैं, ऐसे में उन्हें जरूरत के मुताबिक विभिन्न प्रकार की सहायता उपलब्ध कराई जा सकती है और तत्पश्चात् जैसे-जैसे बालक उसे करने में आजाद हो वैसे-वैसे हम धीरे-धीरे सहायता को कम करते जा सकते हैं ताकि बच्चा उस कार्य को स्वतंत्र रूप से करने में सक्षम हो सके।

### सहायता करना अथवा प्रोम्प्टिंग (Prompting) के प्रकार

किसी भी व्यवहार के संदर्भ में प्रत्येक मानसिक मंद बालक की कार्य कुशलता का स्तर भिन्न-भिन्न होगा। कार्य कुशलता के वर्तमान स्तर के आधार पर हम प्रॉम्प्ट को तीन प्रमुख भागों में रख सकते हैं। बच्चे को क्रिया सिखाने के लिए इनमें से उपयुक्त प्रॉम्प्ट को चुन उसका प्रयोग किया जा सकता है।

i. **शारीरिक सहायता (Physical Prompt or PP)** – कुछ बच्चे किसी काम को पूर्ण कर पाने के लिए शारीरिक सहायता प्रॉम्प्ट चाहते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक को बालक का हाथ पकड़ उसे व्यवहार विशेष को किसी हद तक कर पाने में सहायता करनी पड़ती है। जैसे- बटन लगाना, पेन्सिल से लिख पाना या रस्सी से कूदना आदि के लिए बच्चों को हाथ का सहारा देना पड़ सकता है। किसी नवीन व्यवहार को सिखाने के प्रारम्भिक अवस्था से इस प्रकार के भौतिक प्रॉम्प्ट की अक्सर आवश्यकता होती है। इस पद्धति में शिक्षक बालक के बहुत पास रहता है जिससे उसे शारीरिक सहायता दे सके।

ii. **शाब्दिक सहायता (Verbal Prompt or VP)** – कुछ बच्चे, अपने व्यवहार को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए केवल शाब्दिक निर्देश ही चाहते हैं, जिसकी सहायता से कार्य पूरा कर पाते हैं। उदाहरण के लिए— यदि शिक्षक, बालक को बटन खोलना सिखाना चाहते हैं तो बच्चे से कहेंगे “बटन को अपनी ऊँगलियों से पकड़ो....दूसरे हाथ से कमीज के काज वाले सिरे को पकड़ो.... अब बटन को उसके नीचे वाले छेद से बाहर निकालो....” इस उदाहरण में शिक्षक प्रॉम्प्ट विधि का प्रयोग करते हुए बच्चे को क्रिया के प्रत्येक चरणों में निर्देश देते जा रहे हैं और यह तब तक होता रहेगा जब तक वह क्रिया लक्ष्य व्यवहार को पूर्ण न कर लें।

सहायता के अन्य प्रकारों में इशारे द्वारा सहायता (Gestural Prompt or GP) और संकेत (Occasional Clue or OC) भी सम्मिलित है परन्तु हम विभिन्न प्रॉम्प्ट के मिश्रित प्रयोग भी कर सकते हैं।

### प्रॉम्प्ट के चुनाव व प्रयोग

- i. प्रॉम्प्ट उसी हाल में देना है जब बच्चा लक्ष्य व्यवहार को अपेक्षित प्रकार से न कर पा रहा हो।
- ii. प्रॉम्प्ट जितना कम समय का हो उचित तथा प्रभावकारी होगा।
- iii. प्रॉम्प्ट जितना स्वाभाविक व बच्चे की भाषा में होना चाहिए जिसे वह समझ पाए। जब आप शाब्दिक और सांकेतिक प्रॉम्प्ट का प्रयोग कर रहे हैं तो इसका अधिक ध्यान रखें।

### NOTES

## NOTES

- iv. ऐसे, प्रॉम्प्ट का चयन करें जो जल्दी ही बच्चे को स्वावलम्बी बना पाए और बालक लक्ष्य व्यवहार अपने आप करने लगे।
- v. सीखने की क्रिया को प्रभावकारी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रॉम्प्ट का मिश्रित प्रयोग करें।
- vii. जितनी जल्दी हो प्रॉम्प्ट को हटाने की कोशिश करें। धीरे-धीरे भौतिक प्रॉम्प्ट को कम करें। जब बच्चा व्यवहार करने लगे, फिर शाब्दिक और फिर सांकेतिक प्रॉम्प्ट देना कम से कम कर दे।

### पुनर्बलन (Reinforcement)

पुनर्बलन का सामान्य अर्थ है किसी क्रिया के पश्चात् उस उद्दीपक को प्रस्तुत करना जो क्रिया की दर एवं उसकी आवृत्ति को बढ़ा दे। जो उद्दीपक क्रिया की दर को बढ़ाता है। उसे पुनर्बलक कहते हैं पुर्बलन का प्रयोग यू तो सभी बालकों के शिक्षण में किया जाना चाहिए परन्तु मानसिक मंदता बालकों के शिक्षण संदर्भ में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। चूंकि मानसिक मंदतायुक्त बालकों का अभिप्रेरणा स्तर कम हो है। अतः उनकी कार्य में रुचि बनाए रखने हेतु उपयुक्त पुनर्बलन के प्रमुख दो प्रकार हैं :

i. सकारात्मक पुनर्बलन (Positive Reinforcement)

ii. नकारात्मक पुनर्बलन (Negative Reinforcement)

सकारात्मक पुनर्बलन का अर्थ है किसी “वांछनीय व्यवहार” के तुरंत बाद कोई सकारात्मक उद्दीपक भेंट करना जिससे प्रतिक्रिया की दर और आवृत्ति बढ़े; जैसे-किसी बालक को वांछनीय व्यवहार के पश्चात् चॉकलेट/बिस्किट देना या “शाबास” आदि कहना।

नकारात्मक पुनर्बलन का तात्पर्य है किसी वांछनीय व्यवहार के तुरंत बाद कोई नकारात्मक उद्दीपक वातावरण से हटा लेना जिससे वांछनीय व्यवहार की दर और आवृत्ति बढ़े; जैसे- गृहकार्य पूरा कर लेने के पश्चात् किसी बालक को खेलने जाने की इजाजत देना।

अक्सर नकारात्मक पुर्बलन एवं दंड का समान होने का भ्रम होता है किन्तु नकारात्मक पुनर्बलन दंड से अलग। ‘दंड’ की स्थिति में, बच्चे के किसी अवांछनीय व्यवहार के बाद ‘नकारात्मक/दुखदायक (Aversive) उद्दीपक भेंट

किया जाता है ताकि अवांछनीय व्यवहार में कमी आए; जैसे-किसी बच्चे को देर से आने पर कक्षा से बाहर निकाल देना। पुनर्बलन सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक वांछनीय व्यवहार में वृद्धि करता है जबकि दंड अवांछनीय व्यवहार को कम करता है। एक उदाहरण के द्वारा तीनों का अंतर स्पष्ट किया जा सकता है। यदि शिक्षक गृहकार्य पूरा करने पर बालक को खेलने का अतिरिक्त समय देता है तो यह सकारात्मक पुनर्बलन होगा।

यदि गृहकार्य पूर्ण न करने की स्थिति में शिक्षक छात्र को कहता है कि तुम तभी खेलने जाओगे तब गृहकार्य पूर्ण कर लोगे। यह नकारात्मक पुनर्बलन है। यदि शिक्षक कहता है कि चूँकि तुमने गृहकार्य नहीं किया है इसलिए तुम आज खेलने नहीं जाओगे। यह सजा है।

ध्यान दें उपरोक्त उदाहरण में नकारात्मक पुनर्बलन में बच्चे के पास अपनी गलती सुधारने का अवसर है जबकि सजा में ऐसा नहीं है।

### बुद्धि मन्दिता की सहायक युक्तियाँ

विकलांग बालकों की कक्षा व्यवस्था और उसकी गुणवत्ता हेतु सहायक प्रविधियों का विशेष महत्त्व तथा योगदान होता है। अब तक के सभी अध्यायों में विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा प्रविधानों, विधियों तथा प्रविधियों का उल्लेख किया गया है। लेकिन विशिष्ट शिक्षा की कक्षागत समस्याओं, बालकों की व्यक्तिगत समस्याओं तथा सुधारात्मक शिक्षण की प्रविधियों का उल्लेख नहीं किया गया है। जबकि विशिष्ट बालकों की कक्षा में इस प्रकार की समस्याएँ अधिक होती हैं। इन समस्याओं के समाधान द्वारा विशिष्ट शिक्षण में गुणवत्ता लाई जा सकती है। इस अध्याय के अन्तर्गत तीन महत्त्वपूर्ण सहायक प्रविधियों का वर्णन किया गया है-

- (1) विभिन्न प्रकार के विकलांग बालकों की कक्षा शिक्षण की समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिक प्रविधि- क्रियात्मक अनुसंधान,
- (2) विकलांग बालकों हेतु सुधारात्मक अनुदेशन आव्यूह- अभिक्रमित अनुदेशन,
- (3) विकलांग बालक की व्यक्तिगत एवं सामूहिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रविधि- निर्देशन तथा परामर्श सेवाएँ।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

### (1) क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)

शिक्षण में साधारणतः समस्याएँ आती हैं। यदि इन समस्याओं का समाधान न हो तो उद्देश्य-प्राप्ति के लिये व्यवस्थित किये गये, सभी आव्यूह व्यर्थ हो जाते हैं। अतः शिक्षण में आने वाली समस्याओं का समाधान होना चाहिये। इसके लिए क्रियात्मक-अनुसंधान भी एक प्रविधि है, जिसके अन्तर्गत शिक्षण व्यवस्था की भाँति क्रियात्मक-अनुसंधान भी एक प्रक्रिया है जिनमें शिक्षण में आने वाली समस्याओं का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन किया जाता है और उनके लिये समाधान ज्ञान किया जाता है जिससे शिक्षण में सुधार एवं परिवर्तन लाया जाता है।

### क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ (Meaning of Action Research)

विद्यालयों की कार्यप्रणाली में सुधार एवं परिवर्तन लाने के लिये यह एक महत्वपूर्ण विधि है। इससे शिक्षक अपने शिक्षण की समस्याओं, प्रधानाचार्य विद्यालयों की समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन से उनमें सुधार एवं परिवर्तन लाते हैं। क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया समस्या-केन्द्रित होती है। इनका प्रमुख उद्देश्य न तो शोध-कार्य प्रणाली की समस्या का समाधान करके उसमें सुधार एवं परिवर्तन लाना होता है। क्रियात्मक-अनुसंधान को समझने के लिए 'अनुसंधान' के सम्बन्ध में सही जानकारी देना आवश्यक है।

### क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषाएँ (Definition of Action Research)

शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रयोग में लाने का श्रेय स्टीफेन एम. कोरी को है। उनके अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा इस प्रकार है—

“अभ्यासकर्ता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करता है। जिससे सही कार्य को दिशा मिल सके और निर्णयों का मूल्यांकन कर सके, इसे अनेक व्यक्ति क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।”

“The process by which practitioners attempt to study their problems scientifically in order to guide, correct and evaluate their decision and action in what, a number of people have called Action Research.”

मेक प्रैथटे के अनुसार— “क्रियात्मक अनुसंधान व्यवस्थित खोज की क्रिया है जिसका उद्देश्य व्यक्ति या समूह क्रियाओं में रचनात्मक सुधार तथा विकास लाना है।”

## NOTES

"Action Research is organized, investigate activity, aimed toward the study and constructive change of given endeavour by individual or group concerned with change and improvement."

क्रियात्मक अनुसंधान एक विधि है जिससे कार्य-प्रणाली की समस्याओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप में किया जाता है और उनमें सुधार लाया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सभी प्रकार की संस्थाओं में प्रयोग किया जाता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों अभ्यासकर्ता अपनी कार्य-प्रणाली की समस्याओं के अध्ययन के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करते हैं।

### क्रियात्मक अनुसंधान का आविर्भाव (Origin of Action Research)

इस प्रत्यय की उत्पत्ति का साधन “आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धान्त” ही है। यह व्यवस्था सिद्धान्त कार्य तथा सम्बन्ध केन्द्रित होता है। इस सिद्धान्त की प्रमुख धारणा यह है कि व्यवस्था के कार्यकर्ता में कार्यकुशलता के साथ-साथ समस्या समाधान की क्षमता भी होती है। उसके अपने कुछ मूल्य भी होते हैं। इसलिए कार्यकर्ता को उसकी कार्यप्रणाली की समस्याओं के समाधान का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। किसी भी व्यवस्था के भली प्रकार संचालन हेतु उसके सदस्य ही उत्तरदायी होते हैं। उनके समक्ष समस्याएँ आती हैं। उनकी गहनता को अभ्यासकर्ता की भली प्रकार समझ सकता है। अतः अभ्यासकर्ता को कार्य-प्रणाली की समस्या के चयन करने तथा उसके समाधान तलाशने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये। तभी वह अपने कार्य-कौशल का विकास कर सकता है।

इस प्रकार क्रियात्मक-अनुसंधान प्रजातंत्र युग की देन है। यह प्रत्यय सामाजिक मनोविज्ञान की देन है। कर्ट लिविन ने अपने ज्ञानात्मक-सिद्धान्त में इसका संकेत दिया है। व्यक्ति का अपना लक्ष्य होता है। उसके द्वारा उसकी समस्त अनुक्रियाएँ नियन्त्रित होती हैं। वह लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। परन्तु बाधाएँ व रुकावटें होती हैं। उन समस्याओं का हल पाने पर लक्ष्य की प्राप्ति में व्यक्ति सफल हो जाता है। यही स्थिति अभ्यासकर्ता की होती है।

## NOTES

शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक-अनुसंधान का विकास सन् (1926) माना जाता है। क्योंकि सर्वप्रथम बकिंघम ने अपनी पुस्तक 'रिसर्च फार टीचर्स' में इसका उल्लेख किया है। लेकिन स्टीफेन एम. कोरी ने क्रियात्मक-अनुसंधान का शिक्षा की समस्याओं हेतु सर्वप्रथम प्रयोग किया था।

### क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य (Objectives of Action Research)

क्रियात्मक-अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. विद्यालय की कार्यप्रणाली के अन्तर्गत सुधार तथा विकास करना।
2. छात्रों तथा शिक्षकों में सामाजिक व वास्तविक गुणों का विकास करना।
3. विद्यालय के कार्यकर्ताओं, शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक एवं निरीक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
4. विद्यालय के कार्यकर्ताओं में कार्य कौशल का विकास करना।
5. शैक्षिक प्रशासकों तथा प्रबन्धकों को विद्यालयों की कार्यप्रणाली में सुधार तथा परिवर्तन के लिये सुझाव प्रस्तुत करना।
6. विद्यालय की परम्परागत रूढ़िवादिता एवं यांत्रिक वातावरण को समाप्त करना।
7. विद्यालय की कार्यप्रणाली को प्रभवशाली बनाना।
8. छात्रों के निष्पत्ति स्तर को ऊँचा उठाना।

### क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र (Scopes of Action Research)

क्रियात्मक-अनुसंधान को विद्यालय की कार्यप्रणाली के अधोलिखित क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है-

1. कक्षा शिक्षण विधियों तथा युक्तियों में सुधार लाना है।
2. शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली सहायक सामग्री जिसकी उपयोगिता संबंधी निर्णय लेने के लिए इसका प्रयोग करते हैं।
3. छात्रों की अभिरूचि, ध्यान, तत्परता तथा जिज्ञासा में वृद्धि के लिए प्रयुक्त करते हैं।

4. शिक्षकों द्वारा विभिन्न विषयों में प्रस्तुत किये जाने वाले गृह-कार्यों की प्रणाली को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे प्रयोग करते हैं।
5. छात्रों की अनुसंधान सम्बन्धी समस्याओं के समाधान हेतु इसे प्रयुक्त करते हैं।
6. भाषा शिक्षण में बर्तनी तथा वाचन की समस्याओं के लिए भी क्रियात्मक अनुसंधान को प्रयुक्त किया जाता है।
7. छात्रों की अनुपस्थिति तथा विद्यालय देरी से आने की समस्याओं के समाधान में इसे प्रयोग करते हैं।
8. छात्रों एवं शिक्षक सम्बन्धी समस्याओं तथा छात्रों में परस्पर आदान-प्रदान की समस्याओं हेतु प्रयुक्त करते हैं।
9. परीक्षा में छात्रों के नकल करने की समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोग करते हैं।
10. विद्यालय के संगठन एवं प्रशासन संबंधी समस्याओं के समाधान के लिये प्रधानाचार्य क्रियात्मक अनुसंधान की सहायता लेते हैं।

## NOTES

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् क्रियात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील है। यह परिषद् अपने सेवा प्रसार विभाग द्वारा सेमीनार एवं कार्यशाला का आयोजन है। हिन्दी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को कम कर सकता है तथा ऐसी अशुद्धियाँ को कम करने के सुझाव प्रस्तुत कर सकता है जिनसे हिन्दी शिक्षण को उन्नत किया जा सकता है।

इसी प्रकार की प्रायोगिक-योजनाओं की रूपरेखाएँ अन्य विषयों की समस्याओं के समाधान के लिए बनाई जा सकती है।

### अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed Instruction)

अभिक्रमित-अनुदेशन का विकास बी.एफ. स्किनर ने (1954) के अन्तर्गत हारवर्ड विश्वविद्यालय की मनोविज्ञान की प्रयोगशाला में किया था। इनका शोध पत्र अधिगम का विज्ञान और शिक्षण कला (1954) में प्रकाशित हुआ था। इसका विका एक अधिगम प्रविधि के रूप में हुआ था। यह सक्रिय अनुबद्ध अधिगम सिद्धान्त पर आधारित है। यह स्किनर के शिक्षण प्रतिमान का एक

## NOTES

व्यावहारिक रूप है। इसको अधिकांश नामों से सम्बोधित किया जाता है। व्यक्तिगत-अनुदेशन तथा अभिक्रमित-अनुदेशन आदि। सुसन मारकल के अनुसार अभिक्रमित अनुदेशन की परिभाषा इस प्रकार है।

“अभिक्रमित अधिगम व्यक्तिगत-अनुदेशन का आव्यूह है जिसमें छात्र सक्रिय रहकर अपनी गति सीखता है और उसे तत्काल पुनर्बलन व ज्ञान मिलता है और शिक्षक की आवश्यकता नहीं होती है।”

"Programmed Learning is as method of designing a reproducible sequence of instructional evenets to produce a measurable and consistent effect on behaviour of each and every acceptable students."

### अभिक्रमित अनुदेशन के आधारभूत अधिनियम

#### (Fundamental Principles of Programmed Learning)

यह प्रत्यय कुछ मूल भूत अधिनियम पर आधारित है जिनका प्रतिपादन मनोविज्ञान के प्रयोग के आधार पर किया गया है। यह सक्रिय अनुबद्ध अनुक्रिया सिद्धान्त पर आधारित है। जिसके अन्तर्गत अधोलिखित पाँच सिद्धान्त हैं-

1. छोटे पदों का अधिनियम (Principles of Small steps) : इसमें पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे पदों में क्रमानुसार प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र अधिक सीखते हैं।
2. तत्पर अनुक्रिया का अधिनियम (Principles of Active Responding) : छोटे पदों में रिक्त स्थान छोड़ दिये जाते हैं, उनको पूरा करने के लिए छात्रों को तत्पर होकर अनुक्रिया करनी होती है तथा छात्रों को पढ़ना पड़ता है।
3. तत्कालीन जाँच का अधिनियम (Principle of Immediate Confirmation) : छात्रों की अनक्रियाओं के साथ-साथ छात्रों को पुष्टि करनी होती है जिससे पुनर्बलन प्राप्त होता है।
4. स्वतः अध्ययन गति का अधिनियम (Principle of Self-pacing) : प्रत्येक छात्र अपने अध्ययन गति एवं योग्यताओं के अनुसार पदों को पढ़ता और सीखता है।

5. छात्र आलेख का अधिनियम (Principle of Student Testing) : छात्र अध्ययन करते समय अपने सीखने का आलेख तैयार करता है। अनुक्रियाओं द्वारा बालक के अध्ययन की परीक्षा भी होती है।

### श्रृंखला अभिक्रमित अनुदेशन की अवधारणाएँ (Assumptions of Linear Programming)

इसकी मुख्य अवधारणाएँ निम्नलिखित हैं-

1. छात्र अध्ययन के समय अनुक्रिया करने से अधिक सीखता है।
2. अध्ययन की कमियाँ सीखने में बाधक होती हैं।
3. पाठ्य-वस्तु को छोटे पदों को क्रमबद्ध रूप में रखने से अधिगम होता है।
4. अध्ययन के समय लगातार पुनर्बलन देने से अधिगम प्रभावशाली होता है।
5. छात्रों को उनकी योग्यताओं के अनुसार अवसर देने पर अधिगम प्रभावशाली होता है। छात्रों को उनकी गति के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है।

### अभिक्रमित अनुदेशन पर दृष्टिपोषण प्रविधि

#### (Programmed Instruction as a Feedback Device)

अभिक्रमित-अनुदेशन का विकास मौलिक रूप में छात्रों के अधिगम में वृद्धि करने, उसे प्रभावशाली बनाने तथा व्यक्तिगत भिन्नताओं को सुविधा प्रदान करने के लिए किया गया है। लेकिन शिक्षक-व्यवहार के सुधार हेतु एक पृष्ठपोषण के रूप में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

अनुदेशन के अभ्यास द्वारा शिक्षण की पाठ्यपुस्तक के वास्तविक रूप का बोध होता है तथा अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यवस्था क्रम की जानकारी होती है। यह जानकारी छात्राध्यापकों के लिए पृष्ठपोषण का कार्य करती है और पाठ्य-वस्तु के प्रस्तुतीकरण एवं विकास में सुधार करती हैं।

प्रयोगों द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि छात्राध्यापकों को पाठ-योजना तैयार करके जिस पाठ्य-वस्तु को पढ़ाने के पश्चात् उनसे उसी पाठ्य-वस्तु पर अभिक्रमित-अनुदेशन की रचना की जाये और उसके अनुसार दूसरी कक्षा में उसी पाठ्य-वस्तु को पुनः पढ़ाया जाये तो उसकी दोनों कक्षाओं के शिक्षक में महत्वपूर्ण अन्तर पया जाता है।

## NOTES

अभिक्रमित-अनुदेशन द्वारा अध्यापकों में अधोलिखित गुणों का विकास किया जाता है। विशिष्ट बालकों हेतु सुधारात्मक अनुदेशन के रूप में प्रयुक्त करते हैं-

1. पाठ्य-पुस्तक का तत्वों में विश्लेषण करता और सीखने के क्रम में व्यवस्था करने की क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।
2. पाठ्य-वस्तु को छोटे-छोटे क्रमबद्ध पदों के रूप में प्रस्तुत करने को क्षमताओं को विकसित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुतीकरण से छात्रों की अनुक्रियाओं को अवसर देना तथा उनके सही उत्तर को पुनर्बलन प्रदान करने की क्षमताओं को विकास किया जा सकता है। इसका प्रयोग सुधारात्मक अनुदेशन में अधिक होता है।
4. अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु समुचित व्यक्तियों का चयन करके प्रयुक्त करने की योग्यताओं का विकास किया जा सकता है।
5. छात्रों को प्रस्तुतीकरण में तैयार रखने के लिए समुचित प्रविधियों को प्रयुक्त करने को विकसित किया जा सकता है।
6. शिक्षण में व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखकर छात्रों को अवसर प्रदान करने का क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।
7. अभिक्रमित-अनुदेशन की रचना के अभ्यास द्वारा अध्यापकों में उद्देश्यों को व्यापारिक रूप में लिखने एवं उनके लिये समुचित अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करने की योग्यता का विकास किया जा सकता है।

### निर्देशन तथा परामर्श सेवाएँ (Guidance and Counselling Services)

निर्देशन प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि निर्देशन सेवाओं को व्यवस्थित रूप प्रदान किया जाये कार्य नहीं तो किसी एक विशिष्ट क्षेत्र तक सीमित है और नहीं ही कुछ विशिष्ट मानवीय और भौतिक साधनों तक। प्रायः प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान में यह प्रक्रिया सहायक सिद्ध हो सकती है तथा उनके व्यक्तियों को इस प्रक्रिया के निरन्तर अपनी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। एक विद्यालय में गठित एवं संचालित निर्देशन प्रक्रिया के अन्तर्गत ही, प्रधानाचार्य परामर्शदाता, कक्षाध्यापक एवं विषय व्यापक जैसे कई मानवीय अंगों को अपनी उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका के प्रति सरल सचेष्ट रहना पड़ता है। जान्स के अनुसार- 'निर्देशन को

## NOTES

विद्यालय के किसी भी एक भाग में केन्द्रित किया जा सकता है, न इसको परामर्शदाता या प्रधानाचार्य के कार्यालय तक सीमित किया जा सकता है। क्योंकि निर्देशन सहायता प्रदान करने में विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक का कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व है।' इस प्रकार सभी का समन्वित सहयोग, समस्त विशेषताओं का विकास आदि बातों को ध्यान में रखकर ही निर्देशन कार्यविधि की व्यवस्था की जाती है।

### निर्देशन कार्यक्रम की विशेषताएँ

#### (Characteristics of the Guidance Programmes)

1. निर्देशन कार्यक्रम हेतु प्रशिक्षण प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक होना चाहिये। प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों को, व्यवस्थित निर्देशन कार्यक्रम का नेतृत्व करना चाहिये। निर्देशन कार्यक्रम किस प्रकार हो यह विद्यालयों के आधार पर निर्भर करता है। छोटे विद्यालयों में एक ही प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति निर्देशन एवं शिक्षण दोनों कार्यों को कर सकता है, जबकि बड़े विद्यालयों में निर्देशन करने के लिए निर्देशन प्रदाता अलग से होता है। इसका कार्य मात्र निर्देशन क्रियाओं तक ही सीमित होता है। विद्यालय में निर्देशन प्रदाता शिक्षण कार्य नहीं करते हैं।
2. निर्देशन कार्यक्रम में समस्त कार्य समन्वित रूप में किये जाने चाहिये। कार्यक्रम में सभी शिक्षकों को अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग प्रदान करना चाहिये। निर्देशन प्रदाता का यह कार्य है कि वह कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन करने के लिए अन्य शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करने हेतु प्रयास करे। इसके अलावा शिक्षकों को उनकी रुचि के अनुसार ही निर्देशन कार्य प्रदान किये जायें।
3. सभी के समन्वित प्रयास एवं सहयोग द्वारा ही निर्देशन-कार्यक्रम सफल हो सकता है। छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझने के लिए नैदानिक सेवाएँ, स्वास्थ्य सेवा, परिवार कल्याण इत्यादि की सहायता ली जा सकती है। इसके अतिरिक्त नियोक्ता एवं अभिभावकों को भी, निर्देशन कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाने में सहयोग प्रदान करना चाहिये। इन सभी विद्यार्थियों को जानने एवं समझने हेतु प्रयोग सूचनाएँ प्राप्त हो सकती हैं।



## NOTES

4. निर्देशन सेवाएँ निवारक होनी आवश्यक हैं। आरम्भ में विद्यार्थी के समुचित समायोजन के लिए प्रयास किया जाए। निर्देशन प्रदाता की इस प्रतीक्षा में नहीं रहना चाहिये कि विद्यार्थी के असमायोजन होने पर ही सहायता प्रदान की जाये।
5. निर्देशन क्रियाएँ सतत् रूप से चलती रहनी चाहिए अर्थात् विद्यार्थी के विद्यालयी जीवन में प्रवेश होने के समय से लेकर, विश्वविद्यालय स्तर तक, उसको निर्देशन सेवाएँ प्राप्त होनी चाहिए। मात्र विद्यालयों तक ही, निर्देशन सेवाओं का समय सीमित नहीं होता वरन् शिक्षण समाप्ति पर व्यवसायों में नियुक्त अथवा सामाजिक सेवाओं में लागू, व्यक्तियों को भी, निर्देशन सेवाएँ प्राप्त होती हैं।
6. निर्देशन कार्यक्रम, शिक्षकों की रुचियों, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं के ज्ञान पर ही आधारित होनी चाहिए।
7. निर्देशन का प्रमुख कार्य, शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करना है। शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षार्थी के विकास एवं समायोजन में सहायता करना होता है। शिक्षा-प्रक्रिया का शिक्षण एवं निर्देशन क्रियाएँ अन्तरंग भाग होती हैं, परन्तु इन दोनों की पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। निर्देशन की परामर्श-प्रक्रिया वैयक्तिक विभिन्नताओं पर आधारित होती है तथा इसमें एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से ही सम्बन्ध होता है।
8. निर्देशन कार्यक्रम के संगठन हेतु प्रथम महत्वपूर्ण कार्य है- कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों को निर्धारित करना, क्योंकि निर्देशन कार्यक्रम असफल ही होता है। निर्देशन सेवाओं का गठन छात्रों की आवश्यकताओं को समझने एवं उनकी सन्तुष्टि में सहायता करने के उद्देश्य से किया जाता है। अतः निर्देशन सेवाओं के कार्यक्षेत्र को भी निर्धारित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

### अनुकूलन

इसमें अध्यापक सामान्य तथा बाधित बालकों की शिक्षा में कठिन प्रत्ययों को कक्षा में पढ़ाने हेतु अधिगम अनुभवों का प्रयोग कर सकता है। जैसे अध्यापक श्रवण बाधित बालक की शिक्षण हेतु बालकों की वाणी समस्या को दूर करने के लिए ध्वनियुक्त टेप का प्रयोग कर सकता है। टेप में सुनने योग्य ध्वनि होनी चाहिए जिससे श्रवण बाधित बालकों द्वारा वाणी के प्रयोग का उचित विकास हो

सके। इसके अतिरिक्त टेप की हुई ध्वनि से संबंध रखती हुई पठन सामग्री ध्वनि पर आधारित बालकों को देनी चाहिए। इस प्रकार अध्यापक कम सुनने वाले बालक अथवा श्रवण बाधित बालकों हेतु अक्षरों के अधिगम में सहायता कर सकता है। इसी प्रकार दृष्टिहीन बालकों को कक्षा में अधिगम प्रत्ययों को सिखाने के लिए प्रविधियों की सामग्री को प्रदान किया जा सकता है। जैसे- यदि अध्यापक पहाड़ियों और चट्टानों के बारे में शिक्षण दृष्टि हीन बालकों को दे रहा है तो वहाँ समुचित प्रविधियों का प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार सामान्य बालक भी कक्षा में शिक्षा के समय पहाड़ी तथा चट्टान में अन्तर समझ सकते हैं। अस्थि बाधित बालकों को किसी भी प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है। सामान्य कक्षा में सामान्य बालकों के साथ अधिगम प्रत्ययों की अस्थि बाधित बालकों को शिक्षा प्रदान की जा सकती है। परन्तु ऊपर के हाथ-पैर से बाधित बालकों की प्रारम्भिक अधिगम शिक्षण निपुणताओं को प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। सहायक सामग्रियाँ ऐसे बालकों की शिक्षा में सहायक होती हैं तथा अधिगम शिक्षा को आसान बना देती हैं। जैसे- एक बालक जिसके भुजा (हाथ) नहीं है तो उसे लेखन में निपुणता प्राप्त करने में बालक की सहायता कर सकता है। अध्यापक बालकों को मोटे पेन अथवा पेन्सिल प्रदान कर सकता है जिसे बालक आसानी से पकड़ सके। इसी प्रकार मानसिक मन्दित एवं अधिगम असमर्थी शिक्षा के योग्य बालकों को अतिरिक्त अभ्यास पुस्तकें दी जा सकती हैं। जो शिक्षा संबंधी निपुणताओं का अभ्यास पर्याप्त रूप से बालकों को कराया जा सकता है।

### **व्यक्तिगत शैक्षिक प्लान की भूमिका (Role of Individualized Educational Plsn)**

1. विशिष्ट बालकों को उनकी क्षमतानुसार शिक्षा दी जाती है।
2. विकलांग बच्चों को भी व्यक्तिगत रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है।
3. व्यक्तिगत शैक्षिक प्लान का प्रयोग असामान्य बच्चों को साधारण रूप से ज्ञान प्रदान करना होता है।

### **निर्देशन का अर्थ (Meanign of Guidance)**

निर्देशन एक क्रिया है जिसके अनुसार एक व्यक्ति को सहायता प्रदान की जाती है जिससे वह अपने निर्णय प्राप्त कर निष्कर्ष निकाल सके और अपने उद्देश्यों

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## **NOTES**

## NOTES

को प्राप्त कर सके। निर्देशन के द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, क्षमता योगता तथा मानसिक स्तर का ज्ञान प्राप्त करता है।

निर्देशन किसी भी समस्या का समाधान नहीं करता है बल्कि व्यक्ति को ही समस्या का समाधान करने योग्य बनाता है। इस प्रकार निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य है कि व्यक्ति को उसकी शक्तियों का ज्ञान इस प्रकार करा दो कि वह अपनी शक्तियों की पहचान कर सकें।

व्यक्ति तथा समाज का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को प्रभावशाली बनाने हेतु यह आवश्यक है कि व्यक्ति तथा समाज दोनों का ही समान रूप से विकास होता रहे। यह तभी सम्भव है कि जब दोनों एक दूसरे के विकास में अपनी-अपनी भूमिका निभाते रहें। प्रत्येक व्यक्ति को अधिकांश समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति में इन समस्याओं का समाधान करने की क्षमता जितनी अधिक होगी उतना ही अधिक विकास, व्यक्ति तथा समाज का सम्भव हो सकेगा। इन समस्याओं के समाधान हेतु व्यक्ति को तत्पर तथा सक्षम बनाने में ही निर्देशन सहायक है। निर्देशन का अर्थ स्पष्ट करने हेतु अनेक विद्वान, निर्देशन को एक ऐसी विशिष्ट सेवा के रूप में परिभाषित करते हैं जिससे व्यक्ति जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु सहायता प्रदान की जाती है। व्यक्ति को आज अन्य अनुभवों एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा निर्देशन प्राप्त करना अथवा इस सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं से नवीनतम जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

लेस्टर डी. क्रो (Lester D. Crow and Alice Crow) ने अपनी पुस्तक 'एन इन्ट्रोडक्सन टू गाइडेन्स' में निर्देशन को परिभाषित करते हुए लिखा है- निर्देशन से तात्पर्य, निर्देशन के लिए स्वयं निर्णय लेने की अपेक्षा निर्णय कर देना नहीं है और न ही दूसरे के जीवन का बोझ ढोना है। इसके विपरीत, योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति, को वह किसी भी आयु वर्ग का हो, अपनी जीवन क्रियाओं को स्वयं गठित करने, अपने निजी दृष्टिकोण विकसित करने, अपने निर्णय स्वयं ले सकने तथा अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता करना ही वास्तविक निर्देशन है।

"Guidance is not givin directions. It is ont the impostion of one person's point of view upon another person. It in not making decisions for an individual which he should make for himself. It is not carrying the burdens of another's life. Rather, guidance is assistance made aviable

by personally qualified and adequately trained men or women to an individual of any age to help him manage his own life actively, develop his own point of view, make his own decisions, and carry out his own burden."

### —Crow and Crow

आर्थर जे. जॉन्स के शब्दों में- "निर्देशन एक प्रकार की सहायता है जिसके अन्तर्गत, एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को उसके समक्ष आए विकल्पों के चयन, समायोजन एवं समस्याओं की प्रवृत्ति एवं अपने उत्तरदायी बनने की योग्यता में वृद्धि लाती है। यह विद्यालय अथवा परिवार की परिधि में आबद्ध न रहकर एक सार्वभौम सेवा का रूप धारण कर लेती है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यथा- परिवार, व्यापार एवं उद्योग, सरकार, सामाजिक जीवन, अस्पताल व कारगृहों में व्यक्त होती है। वस्तुतः निर्देशन का क्षेत्र, प्रत्येक ऐसी परिस्थिति में विद्यमान होता है, जहाँ इस प्रकार के व्यक्ति हो, जिन्हें सहायता की आवश्यकता हो और जहाँ सहायता प्रदान करने की योग्यता रखने वाले व्यक्ति हों।"

"Guidance is the help given by one person to another in making choice and adjustments and in solving problems. Guidance aims at enabling the recipient to grow in his independence and ability to be responsible for himself. It is service that is universal not confined to the school or the family. It is found in all phases of life in the home, in business and industry, in government. In social life, in hospital and in prisons indeed it is present where there are people who need help and wherever there are people who can help."

### — Arthur J. Hones

गाइडेन्स कमेटी ऑफ सॉल्ट लेक सिटी स्कूल ने निर्देशन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि- "वास्तविक अर्थ में प्रत्येक प्रकार की शिक्षा के अन्तर्गत, किसी न किसी प्रकार का निर्देशन व्याप्त है। इसके द्वारा शिक्षा को वैयक्तिक बनाने की चेष्टा प्रकट होती है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने छात्र की रुचियों, योग्यताओं एवं भावनाओं को समझे वह उसकी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए, शैक्षिक कार्यक्रमों में अनुकूल परिवर्तन लायें। अन्य शब्दों में, निर्देशन को एक विशेष प्रकार की सेवाओं की श्रृंखला कहा जाता है। इसमें विद्यालयी कार्यक्रम को प्रभावी बनाने

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

## NOTES

के लिए वे क्रियाएँ सम्मिलित की जाती हैं जो छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। इसके अन्तर्गत, निम्नलिखित योजनाएँ उल्लेखनीय हैं- ”

1. छात्रों की वास्तविक आवश्यकताओं तथा समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।
2. छात्रों के सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर, उनकी वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुदेशन को अनुकूलित करने में सहायता प्राप्त करना है।
3. शिक्षकों में बालक की वृद्धि एवं विकास के सम्बन्ध में, अत्यधिक अवबोध की क्षमता का विकास करना।
4. विशिष्ट सेवाएँ; अभिविन्यास, वैयक्तिक तालिक, उपबोधन, व्यावसायिक सूचना, समूह निर्देशन, स्नातकों व शिक्षा वंचित छात्रों के अनुवर्तन इत्यादि का प्रावधान करना।
5. कार्यक्रम की सफलता ज्ञान करने वाले शोधों का संचालन।

डब्ल्यू. एल. रिन्कल व आर. एल. गिलक्रस्ट के अनुसार- “निर्देशन का आशय है- छात्रों में उपयुक्त एवं प्राप्त हो सकने योग्य उद्देश्यों के निर्धारण कर सकने तथा उन्हें प्राप्त करने हेतु वांछित योग्यताओं का विकास कर सकने में सहायता प्रदान करना व प्रेरित करना। इसके आवश्यक अंग इस प्रकार हैं- उद्देश्यों का निरूपण, अनुकूल अनुभवों का प्रावधान करना, योग्यताओं का विकास करना तथा उद्देश्यों की प्राप्ति करना। बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन के अभाव में शिक्षण को उत्तम शिक्षा की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। तथा अच्छे शिक्षण के अभाव में दिया गया निर्देशन भी अपूर्ण होता है। इस प्रकार शिक्षण एवं निर्देशन एक-दूसरे के पूरक हैं।”

"Guidance means to stimulate and helps the students to set up worthwhile; Achievable purpose and develop abilities. Which will make it possible from to achieve his purposes. The essentials elements are the setting up of purpose the provision of experiences, the development of abilities, and the achievement of purposes. Teaching without intelligent guidance can not be good teaching is incomplete. Teaching and guidance are inseparable."

— Rinkal & Guilcrust

अमेरिका की नेशनल चोकेशनल गाइडेन्स एसोसिएशन ने निर्देशन को परिभाषित करते हुए लिखा है- “निर्देशन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को विकसित करने, अपने सम्बन्ध में पर्याप्त व समन्वित करने तथा कार्य क्षेत्र में अपनी भूमिका को समझने में सहायता प्राप्त होती है। साथ ही इसके द्वारा व्यक्ति अपनी इस धारणा को यथार्थ में परिवर्तित कर देता है।”

## NOTES

"Guidance is the process of helping persons to develop and accept and integrated and adequate picture of himself and of his role in the world of work, to test this concept against reality and to convert it into reality with satisfaction to himself and benefit to society."

— A. N. V. G. Association

मायर्स के अनुसार- “निर्देशन वह प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यताओं एवं रुचियों को समझने, उन्हें यथासम्भव विकसित करने, उन्हें जीवन लक्ष्यों से संयुक्त करने तथा अन्ततः अपनी सामाजिक व्यवस्था के वांछनीय सदस्य की दृष्टि से एक पूर्ण एवं परिपक्व आत्म निर्देशन की स्थिति तक पहुँचने में सहायक होता है।”

लफेवर की दृष्टि में- “निर्देशन, शैक्षिक प्रक्रिया की उस व्यस्थित एवं गठित अवस्था को कहा जाता है जो युवा वर्ग को अपने जीवन में ठोस बिन्दु व दिशा प्रदान करने की क्षमता को बढ़ाने में सहायता प्रदान करता है, जिससे उसकी व्यक्तिगत अनुभव राशि में समृद्धि के साथ-साथ अपने प्रजातांत्रिक समाज में अपना निजी योगदान सम्भव हो सके।”

स्ट्रप्स एवं लिण्डक्विस्ट के अनुसार- “निर्देशन व्यक्ति के अपने लिये एवं समाज के लिये अधिकतम लाभदायक दिशा में उसकी सम्भावित, अधिकतम क्षमता तक विकास में सहायक तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।”

### निर्देशन की विशेषताएँ (Characteristics of Guidance)

उपरोक्त परिभाषाओं के निर्देशन की विशेषताओं, कार्यों एवं उद्देश्यों का उल्लेख किया गया है। निर्देशन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. निर्देशन जीवन में आगे बढ़ने में सहायक होती है। शिक्षण की तरह भी विकास की प्रक्रिया है।

## NOTES

2. निर्देशन द्वारा व्यक्ति अपने निर्णय स्वयं ले सकने में सक्षम बनाना है। एवं अपना भार स्वयं वहन करने में सहायता करना है।
3. इसमें एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को उसकी समस्याओं एवं समायोजन के उपायों के चयन में सहायक होता है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की समस्याओं के समाधान में सहायता प्रदान करती है।
4. निर्देशन शिक्षा की प्रक्रिया में व्याप्त होता है। प्रत्येक शिक्षक को अपने छात्र की रूचियों, योग्यताओं एवं क्षमताओं को समझकर उनके अनुकूल सीखने की परिस्थितियों को प्रस्तुत करे जिससे उनकी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि की जा सके।
5. निर्देशन के अन्तर्गत छात्रों की वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुरूप अनुदेशन को अनुकूलित करने में सहायता प्रदान करती है।
6. प्रभावशाली शिक्षण एवं अनुदेशन में निर्देशन प्रक्रिया निहित होती है। बुद्धिमत्तापूर्ण निर्देशन के अभाव में शिक्षण प्रक्रिया अपूर्ण होती है।
7. निर्देशन द्वारा व्यक्ति को विकसित करने, अपने सम्बन्ध में पर्याप्त वह समन्वित जानकारी कराने एवं व्यावसायिक जीवन में अपनी भूमिका को समझने में सहायता करता है।
8. निर्देशन व्यक्ति की जन्मजात योग्यताओं व शक्तियों तथा प्रशिक्षण द्वारा कौशलों को संरक्षित रखने का मूल प्रयास है।
9. निर्देशन व्यक्ति के स्वयं के लिए एवं समाज के लिए अधिक लाभदायक दिशा में उसकी अधिकतम क्षमता के विकास में निरन्तर सहायक होता है।
10. निर्देशन, शिक्षा प्रक्रिया की वह अवस्था है जिसके छात्र को उसकी योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप अध्ययन पाठ्यक्रमों के चयन तथा रोजगार के चयन में सहायता प्रदान करता है।

निर्देशन की विशेषताओं से ज्ञात होता है कि निर्देशन मानव जीवन के विकास एवं समायोजन की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो जीवनपर्यन्त चलती है। निर्देशन शिक्षा का अभिन्न अंग है जो व्यक्ति की सभी प्रकार की समस्याओं तथा समायोजन तथा के समाधान में सहायक होती है। निर्देशन शिक्षा की सहायक प्रविधि है।

## निर्देशन के अधिनियम (Principles of Guidance)

निर्देशन का अर्थ स्पष्ट होने के पश्चात् निर्देशन के अधिनियमों को समझ लेना निर्देशन कर्मचारियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इन अधिनियमों का ज्ञान निर्देशन के क्रियात्मक या व्यावहारिक कार्य में अधिक सहायक होता है। निर्देशन कार्यक्रम का संगठन यदि इन अधिनियमों को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो ऐसा संगठन अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध होगा। किन्तु यहाँ यह स्पष्टीकरण करना उपयुक्त होगा कि निर्देशन के अधिनियमों के बारे में विभिन्न विद्वान एकमत नहीं हैं। जोन्स ने निर्देशन के पाँच अधिनियम, क्रो एण्ड क्रो ने चौदह तथा हम्फ्रीज और ट्रेक्सलर ने सात अधिनियमों का उल्लेख किया है। लेकिन यहाँ ऐसे सिद्धान्तों पर विचार करना उपयुक्त होगा जिनके बारे में सभी विद्वान एकमत हैं-

1. निर्देशन आत्म-बोध तथा आत्म-विकास को विकसित करता है।
2. निर्देशन जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
3. निर्देशन छात्र अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक एवं परामर्शदाता का सहकारी कार्य होना चाहिए।
4. निर्देशन को सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग समझना चाहिए।
5. निर्देशन को सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।
6. निर्देशन कार्यक्रम में अधिकांश व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति समझना चाहिए।
7. निर्देशन समस्त छात्रों के लिए होना चाहिए।
8. निर्देशन छात्र-विकास के सभी क्षेत्रों द्वारा सम्बन्धित होना चाहिए।

इन प्रमुख अधिनियमों का विवरण यहाँ दिया गया है-

1. निर्देशन आत्म-बोध और आत्म-विकास को विकसित करता है  
(Guidance encourages self-discover and self-development)  
: गार्डनर व मर्फी के अनुसार सलाह या उपदेश देना मानव जाति की

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

कमजोरी होती है। इसके विपरीत छात्र भी परामर्शदाता से निष्क्रिय रूप में परामर्श प्राप्त करना पसन्द नहीं करते हैं। जो परामर्शदाता छात्रों पर अपना प्रभाव डालते हैं या प्रेरित करते हैं, वे दो प्रकार से त्रुटियाँ करते हैं-

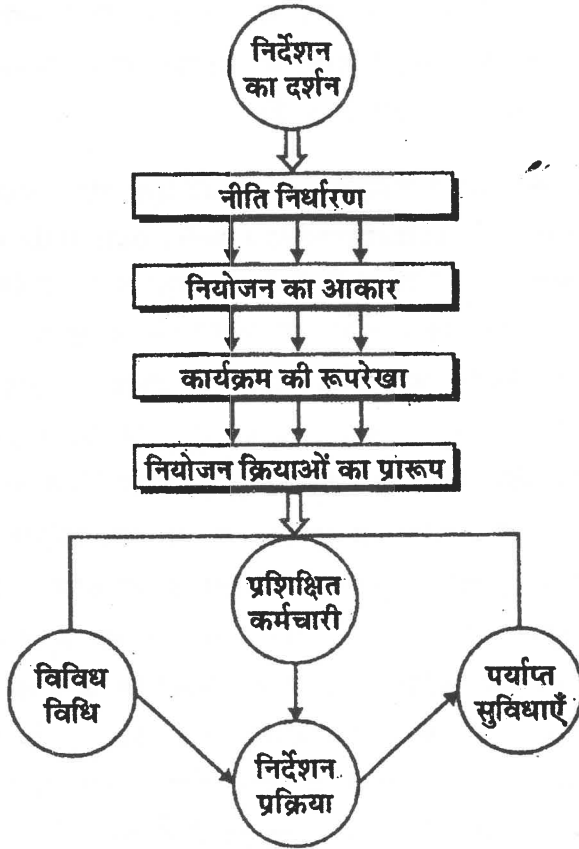
अ) परामर्शदाता व्यक्ति के व्यक्तित्व को कम सम्मान देता है।

ब) वह छात्रों को समस्या-समाधान के लिए दूसरों की सहायता प्राप्त करने के लिए अधिक आश्रित बना देता है।

उत्तम निर्देशन के अन्तर्गत व्यक्ति के आत्म-बोध, आत्म-निर्देशन और स्व:विकास का लक्ष्य रखा जाता है। अतः निर्देशन को छात्र की अपना व्यवहार समझने और सुविधानुसार परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करनी चाहिए। परामर्शदाता को अपने निर्णय छात्र पर थोपने नहीं चाहिए बल्कि छात्र को स्वयं को समझने एवं आत्म-निर्देशन होने के लिए परामर्शदाता द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वह स्वयं निर्णय ले सके और उस निर्णय के अनुसार अपना कार्य प्रारम्भ कर सके।

2. निर्देशन जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है (**Guidance is a life one process**) : जिस प्रकार निर्देशन सहायता प्रत्येक छात्रों के लिए सुलभ होनी चाहिए उसी प्रकार निर्देशन प्रक्रिया किसी विशेष आयु के लोगों तक सीमित नहीं की जा सकती है। यह जीवन पर्यन्त चलती रहनी चाहिए। युवक को निर्देशन सहायता की आवश्यकता अपने समस्त जीवन-स्तरों पर अनुभव होती है। छात्र जीवन के पश्चात् अब युवक किसी व्यवसाय में नियुक्ति पाता है तो उस व्यवसाय में उच्च समायोजन एवं प्रगति के लिए उचित परामर्श समायोजन एवं वैवाहिक जीवन को सफल एवं सुखद बनाने के लिए निर्देशन सहायता प्रदान की जानी चाहिए। वृद्धावस्था में जब व्यक्ति पास समय की अधिकता होती है तो उस समय का सुदुपयोग करने के लिए निर्देशन सहायता चाहिए। छात्र जीवन में भी किसी एक समस्या का समाधान प्राप्त हो जाने के बाद पुनः अनेक नई समस्याएँ आती रहती हैं और निर्देशन की आवश्यकता लगातार विद्यमान रहती है। निर्देशन की प्रक्रिया के प्रारूप को अग्र प्रकार प्रदर्शित किया गया है-

NOTES



(3) निर्देशन छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सहकारी कार्य होना चाहिए (Guidance must be a co-operative enterprise involving pupil, parent, teacher, administration and counsellor) – निर्देशन किसी विशेष मंचारी का ही कार्य नहीं समझना चाहिए बल्कि यह तो छात्र, अभिभावक, अध्यापक, प्रशासक और परामर्शदाता का सामूहिक कार्य होता है। स्पष्ट है कि निर्देशन सेवाओं के कुशल संचालन एवं व्यावसायिक नेतृत्व हेतु परामर्शदाता पर निर्भर रहना पड़ता है किन्तु वह छात्रों की समस्याओं पर विचार करने से अभिभावक, अध्यापक एवं प्रधानाचार्य को मुक्त नहीं करता है। माता-पिता ही बालक के प्राथमिक शिक्षक होते हैं, जो उसके व्यवहार और अभिवृत्तियों को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार अध्यापक भी छात्रों के शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत अभिवृत्तियों एवं चयन को प्रभावित करते हैं। अतः यह प्रभाव चेतनापूर्ण एवं पूर्ण-नियोजित होना चाहिए। प्रधानाचार्य विद्यालय एवं समाज को सम्मिलित करने वाली कड़ी के रूप में होता है। यह विद्यालय एवं बाहर के कर्मचारियों को छात्रों की समस्याओं का निदान करने एवं उनका उपचार करने के लिए प्रोत्साहित कर

## NOTES

सकता है। और अन्त में, छात्र स्वयं अपने विकास हेतु उत्तरदायी होता है। यद्यपि निर्णय लेने के लिए उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है, अन्तिम निर्णय उसी पर निर्भर रहता है।

**(4) निर्देशन को सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग समझना चाहिए (Guidance must be considered as a major part of the total education process)** – ट्रैक्सलर ने ठीक ही लिखा है कि निर्देशन स्वयं में पूर्ण प्रक्रिया है। जिस प्रकार व्यक्ति का जीवन एक इकाई के रूप में होता है उसी प्रकार निर्देशन का प्रत्येक कार्य एक इकाई के समान है। कोई विद्यालय निर्देशन के कुछ चयनित अंगों को ही अपने यहाँ प्रारम्भ नहीं कर सकता, क्योंकि जैसे व्यक्ति के व्यक्तित्व के टुकड़े नहीं किये जा सकते वैसे ही निर्देशन के टुकड़े करना भी सम्भव नहीं है। अतः निर्देशन का केवल शिक्षण-कार्य से ही नहीं जोड़ना चाहिए बल्कि इसका सम्बन्ध तो विद्यालय की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं, अनुशासन, उपस्थिति और मूल्यांकन समीक्षा आदि सभी पक्षों द्वारा स्थापित करना चाहिए। सामाजिक स्रोतों का अधिकतम लाभ उठाना निर्देशन का लक्ष्य होना चाहिए। सामान्यतः विद्यालय में अध्यापकगण निर्देशन को शिक्षण या अन्य कार्यों से अलग मानते हैं। इस प्रकार की धारणा में सुधार करना चाहिए और शिक्षण-प्रशिक्षण में ही ऐसा प्रावधान है कि वे निर्देशन को शिक्षा-प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग समझें।

**(5) निर्देशन को सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए (Guidance must be responsible both to the individual and to society)** – मानव एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए शिक्षाविदों ने शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य छात्र में सामाजिकता की भावना का विकास करना माना है। निर्देशक को अपना ध्यान केवल व्यक्ति पर ही केन्द्रित नहीं करना चाहिए बल्कि उसे समाज के प्रति भी उत्तरदायी होना चाहिए। जनतंत्रात्मक समाज में व्यक्तियों को एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्वों को समझना चाहिए। तभी इस प्रकार का समाज अपने अस्तित्व को सुरक्षित बनाये रख सकता है। इस विवरण से स्पष्ट होता है कि निर्देशन द्वारा नवयुवकों में ऐसी आत्म-निर्भरता विकास करने में सहायता करनी चाहिए जो छात्रों को एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायित्वों का ज्ञान लिये।

(6) निर्देशन कार्यक्रम में अधिकांश व्यक्तियों को सामान्य व्यक्ति मानना चाहिए (**Considering most individuals as average, normal persons**) – निर्देशन कार्यक्रम के संचालकों में मिथ्या धारणा पायी जाती है कि निर्देशन सहायता की आवश्यकता केवल ऐसे व्यक्तियों को होती है जो बौद्धिक या शारीरिक रूप से पिछड़े हों या संवेगात्मक विकास कम हुआ हो। स्पष्ट है कि ऐसे छात्रों को निर्देशन की विशिष्ट सुविधाएँ प्रदान की जायें। किन्तु सामान्य छात्र निर्देशन सहायता प्राप्त करने से वंचित नहीं रहने चाहिए। उन पर यह प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए कि निर्देशन केवल समस्यात्मक बालकों हेतु है। निर्देशन कर्मचारियों को समस्त छात्रों के प्रति समता का दृष्टिकोण रखना चाहिए।

## NOTES

(7) निर्देशन समस्त छात्रों के लिए होना चाहिए (**Guidance for all pupils**) – सभी नवयुवकों को निर्देशन सहायता की आवश्यकता होती है, लेकिन इस सम्बन्ध में एक गलत धारणा प्रचलित है कि निर्देशन सहायता केवल उनको चाहिए जो कुसमायोजित होते हैं। विद्यालयों में समय, स्थान, कर्मचारी एवं बजट आदि की व्यावसायिक समस्याओं के कारण अधिकांश विद्यालय निर्देशन सेवा को उन छात्रों के लिए सीमित कर देते हैं जो बीच में अध्ययन छोड़ देते हैं, जो कक्षा में उत्पात मचाते हैं या जो परामर्श प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान रमें रखते हुए समस्त छात्रों को परामर्श देने के लिए सामूहिक विधियों का प्रयोग तर्कसंगत प्रतीत होता है। वैसे भी जनतंत्रात्मक शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक छात्र को निर्देशन सहायता प्राप्त करने का अधिकार समान रूप से प्राप्त होना चाहिए।

(8) निर्देशन छात्र-विकास के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित होना चाहिए (**Guidance must be concerned with all areas of pupils growth**) – निर्देशन छात्र के सर्वांगीण विकास द्वारा सम्बन्धित होता है। अतः इसको छात्र के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक वृद्धि पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। अब तक निर्देशन के सम्बन्ध में विद्वानों में मिथ्या धारणा उत्पन्न रही है कि निर्देशन केवल व्यक्ति को व्यावसायिक ज्ञान देने तक ही सीमित है। यद्यपि व्यावसायिक सूचना, योजनाओं और नियुक्ति निर्देशन कार्यक्रम के अन्तर्गत महत्वपूर्ण सेवा के रूप में रहे हैं और भविष्य में भी रहेंगे किन्तु अन्य सेवाएँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

## NOTES

### परामर्श का अर्थ (Meaning of Counselling)

परामर्श एक प्राचीन शब्द है और इसे परिभाषित करने के प्रयास प्रारम्भ से ही किए गए हैं। वैबस्टर शब्दकोश के अनुसार— “परामर्श का आशय पूछताछ, पारस्परिक तर्क-वितर्क अथवा विचारों का पारस्परिक विनियम है।” इस शाब्दिक आशय के अतिरिक्त परामर्श के अन्य पक्ष भी होते हैं जिनके आधार पर परामर्श का अर्थ स्पष्ट हो सकता है। उनके विद्वानों ने इन पक्षों पर प्रकाश डालकर परामर्श का अर्थ स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

परामर्श के सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सेवार्थी की वैयक्तिक दृष्टि से ही सहायता प्रदान की जाती है। गिलबर्ट रेन के अनुसार भी— “परामर्श सर्वप्रथम एक व्यक्तिगत सन्दर्भ, का सूचक। इसे सामूहिक रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। सामूहिक परामर्श-सा शब्द असंगत है तथा व्यक्तिगत परामर्श जैसा शब्द भी संगत नहीं है, क्योंकि परामर्श हमेशा व्यक्तिगत रूप से ही सम्पन्न हो सकता है।”

"First of all counselling is personal. It can be performed with a group. Group counselling is an anomaly : The terms are not in harmony. Personal counselling is a tautology, counselling is always personal."

— C. Gilbert Wrenn

परामर्श के आशय के सन्दर्भ में एक विशिष्ट पक्ष यह भी है कि परामर्श की प्रक्रिया के द्वारा परामर्श प्राप्तकर्ता अथवा सेवार्थी पर किसी निर्णय को थोपा नहीं जाता है, बल्कि उसकी सहायता इस प्रकार की जाती है कि वह स्वयं-निर्णय लेने में सक्षम हो सके। जॉर्ज ई. मायर्स के अनुसार— “परामर्श का कार्य तब सम्पन्न होता है जब यह स्वार्थी को अपने निर्णय स्वयं लेने के लिये बुद्धिमत्तापूर्ण विधियों का उपयोग करके सहायता प्रदान करता है। परामर्श स्वयं उसके लिये निर्णय नहीं लेता है। वस्तुतः इस प्रक्रिया में सेवार्थी हेतु स्वयं निर्णय लेना उतना ही असंगत है जितना कि बीज गणित के शिक्षण में शिक्षार्थी के लिये प्रदत्त समस्या का समाधान शिक्षक के द्वारा स्वयं करना है।”

"Its duty is performed when it helps the individual to follow a wire procedure in arriving at his own decisions, not when it tries to make



## NOTES

हम्फ्री एवं ट्रैक्सलर ने परामर्श को समस्या-समाधान में सहायक बताया है, परन्तु उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया है कि किस प्रकार की समस्याओं के समाधान में परामर्श की प्रक्रिया सहायक है। उनके शब्दों में...“परामर्श व्यक्ति की समस्या समाधान हेतु विद्यालय या अन्य संस्थानों के कर्मचारियों का उत्सवों का प्रयोग है।”

जोन्स (Jones) ने परामर्श को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है जिसके अन्तर्गत परामर्शप्राथी को प्रत्यक्ष एवं व्यक्तिगत रूप में सहायता प्रदान की जाती है। उनके अनुसार परामर्श की प्रक्रिया निर्देशीय अधिक है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी से सम्बन्धित समस्त तथ्यों के संकलन एवं विद्यार्थी से सम्बन्धित अनुभवों के अध्ययन पर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों की योग्यताओं का अध्ययन किसी विशिष्ट परिस्थिति के सन्दर्भ में किया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि परामर्श के आधार पर परामर्शप्राथी की समस्याओं का समाधान नहीं किया जाता है वरन् उसे स्वयं ही इस योग्य बना दिया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके।

कॉम्बस ने परामर्श की प्रक्रिया में परामर्शदाता के स्थान पर परामर्शप्राथी को अधिक महत्त्व प्रदान किया है। इस प्रकार उनके अनुसार यह एक परामर्शप्राथी केन्द्रित प्रक्रिया है।

कॉम्बस के अनुसार, ब्रोवर ने भी इस प्रक्रिया को परामर्शप्राथी-केन्द्रित ही स्वीकार किया है। उनके अनुसार इस प्रक्रिया के अन्तर्गत पारस्परिक विचार-विमर्श, बातचीत एवं सौहार्द्रपूर्ण, तर्क-वितर्क के आधार पर व्यक्ति को इस प्रकार सहायता प्रदान की जाती है कि वह अपनी समस्याओं से सम्बन्धित निर्णय स्वयं ले सके। पारस्परिक विचार विनिमय के लिए सौहार्द्रपूर्ण वातावरण का सर्जन एवं समानता के धरातल पर बातचीत करना आवश्यक होता है। इस विचार विनिमय का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में निहित योग्यताओं की जानकारी एवं उनका अधिकतम विकास होता है। इस प्रकार विचार-विनिमय के निरन्तर दोनों ही एक-दूसरे पर अपने विचार आरोपित करने का प्रयास नहीं करते हैं।

रूथ स्ट्रॉंग के शब्दों में परामर्श प्राथी में आत्म-बोध की योग्यता का विकास किया जाता है। इसके आधार पर ही व्यक्ति को यह ज्ञात हो पाता है कि वह अपनी समस्या का समाधान किस प्रकार कर सकता है? उसकी समस्या

## NOTES

कास्वरूप क्या है? तथा समस्या के समाधान हेतु कौन-सी योग्यताएँ उसमें विद्यमान हैं। स्ट्रॉंग के अनुसार— “परामर्श प्रक्रिया एक संयुक्त प्रयास है। विद्यार्थी का उत्तरदायित्व स्वयं को समझाने की चेष्टा करना तथा उस मार्ग का पता लगाना है जिस पर उसे जाना है तथा जैसे ही समस्या उत्पन्न हो, उसके समाधान के लिए आत्मविश्वास का विकास होना है। परामर्शदाता का उत्तरदायित्व इस प्रक्रिया में जब कभी छात्र को आवश्यकता हो, सहायता प्रदान करना है।”

"Counselling process is a joint quest. The student's responsibility is to try to understand himself and the direction in which he should go on to gain self-confidence in handling problems as they arise. The counsellor's responsibility is to assist in this process whenever the student needs and is ready for help."

—*Ruth Strong*

रोलो मे (Rollo May) के अनुसार, परामर्श की प्रक्रिया में परामर्शार्थी के स्थान पर परामर्शदाता की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार वे परामर्श की प्रक्रिया को परामर्शदाता-केन्द्रित मानते हैं। उनके शब्दों में— “परामर्शार्थी को सामाजिक दायित्वों को सहर्ष स्वीकार कराने में सहायता करना, उसे साहस देना, जिससे उसमें हीन भावना उत्पन्न न हो तथा सामाजिक एवं व्यावहारिक उद्देश्य की प्राप्ति में उसकी सहायता करना है।”

"His function is to assist the counsellee to a clearful acceptances of his social responsibility to give him courage which all release him from the compulsion of his inferiority feelings and to help him to direct his striving towards socially constructive ends."

— *Rollo May*

रोलो मे के विपरीत इरिकसन (Erickson) — ने परामर्श को परामर्शार्थी केन्द्रित मानते हुए लिखा है कि— “एक परामर्श साक्षात्कार व्यक्ति से व्यक्ति का सम्बन्ध है जिसमें एक व्यक्ति अपनी समस्याओं तथा आवश्यकताओं के साथ, दूसरे व्यक्ति के पास सहायता हेतु जाता है।”

"A counselling interview is a person to person relationship in which one individual with problems and needs turns to another person for assistance." — *Erickson*



## NOTES

### परामर्श की विशेषताएँ (Characteristics of Counselling)

इन परिभाषाओं के अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने परामर्श के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए परामर्श से सम्बन्धित विभिन्न तत्त्वों का निर्धारण भी किया है। उनके अनुसार इन तत्त्वों अथवा विशेषताओं के आधार पर परामर्श को परिभाषित किया जा सकता है। जैसे- आर्बकाल (Arbuckle) के अनुसार परामर्श की प्रमुख विशेषताएँ हैं-

- (1) परामर्श की प्रक्रिया दो व्यक्तियों के आपसी सम्बन्ध पर आधारित है।
- (2) दोनों के बीच विचार-विमर्श के अनेक साधन हो सकते हैं।
- (3) प्रत्येक परामर्शदाता को अपनी प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।
- (4) प्रत्येक परामर्श साक्षात्कार पर आधारित होता है।
- (5) परामर्श के कारण, परामर्शप्रार्थी की भावनाओं में परिवर्तन होता है।

उपरोक्त परिभाषाओं में परामर्श की विशेषताओं, उद्देश्यों तथा कार्यों का उल्लेख किया गया है। परामर्श की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (1) परामर्श वैयक्तिक सहायता प्रदान की प्रक्रिया है इसे सामूहिक रूप से सम्पादित नहीं किया जाता है।
- (2) परामर्श में शिक्षण की भाँति निर्णय नहीं लिया जाता है, अपितु परामर्शप्रार्थी स्वयं निर्णय लेता है।
- (3) परामर्शदाता सम्पूर्ण परिस्थितियों के आधार पर समायोजन हेतु प्रार्थी को जानकारी देता है और उसकी सहायता भी करता है।
- (4) परामर्शप्रार्थी अपनी समस्याओं का समाधान बिना किसी सुझाव व सहायता के स्वयं ही करने में समर्थ नहीं होता है। समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिक सुझाव की आवश्यकता होती है। वैज्ञानिक सुझाव को ही परामर्श कहते हैं।
- (5) परामर्श प्रार्थी को समझने में पर्याप्त सहायता देता है जिससे वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिये निर्णय लेता है।

- (6) परामर्श द्वारा प्रार्थी को अपनी सेवाओं को प्राप्त करने की दिशा में प्रोत्साहित कर सके तथा जिसके फलस्वरूप उसे सफलता एवं सन्तोष प्राप्त हो सके।
- (7) परामर्श में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की समस्याओं के समाधान हेतु सहायता इस प्रकार करता है जिससे स्वयं निर्णय लेकर सीखता है।
- (8) परामर्श की प्रक्रिया निर्देशीय अधिक होती है। इसमें प्रार्थी के सम्बन्ध में सम्पूर्ण तथ्यों का संकलन करके सम्बन्धित अनुभवों पर बल दिया जाता है।
- (9) परामर्श में प्रार्थी की समस्याओं का समाधान नहीं किया जाता है, अपितु इस प्रक्रिया से उसे स्वयं ही इस योग्य बना दिया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सकें।
- (10) परामर्श की प्रक्रिया प्रार्थी-केन्द्रित होती है जिसमें पारस्परिक, विचार-विमर्श, वार्तालाप, तथा सौहार्दपूर्ण तर्क-वितर्क के आधार पर प्रार्थी को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं निर्णय ले सके।
- (11) परामर्श की प्रक्रिया में प्रार्थी का उत्तरदायित्व स्वयं को समझना तथा उस मार्ग को सुनिश्चित करना है जिस ओर उसे अग्रसर होना है। परामर्श से समाधान के लिए आत्म-विश्वास का विकास होता है।
- (12) परामर्श प्रार्थी को सामाजिक उत्तरदायित्वों को सहर्ष स्वीकार करने में सहायता करना, उसे साहस देना जिससे उसमें हीन भावना न विकसित हो।

### मानसिक मंदता वाले बच्चों के लिए शिक्षण एवं प्रशिक्षण

#### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों का शिक्षण एवं प्रशिक्षण (Education and training of Children with Mental Retardation/Intellectual Disability)

मानसिक मंदता युक्त बालकों के प्रशिक्षण में गामक क्रियाओं, सम्प्रेषण कौशलों एवं दैनिक कार्य कलापों में अक्षमता की प्रकृति द्वारा स्व सहायता प्रशिक्षण भी सम्मिलित है जिसके लिए विशिष्ट शिक्षण तकनीकों की

## NOTES

## NOTES

आवश्यकता होती है। मानसिक मंदता युक्त बालकों का शिक्षण एवं प्रशिक्षण उनके पुनर्वास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह शिक्षण और प्रशिक्षण ही उन्हें बाद के जीवन हेतु तैयार करता है और व्यावसायिक पुनर्वास का पूर्ववर्ती भी है। मानसिक मंदता युक्त बालकों हेतु शिक्षण के प्रायः तीन मॉडल विशेष शिक्षा, समेकित शिक्षा, एवं समावेशी शिक्षा प्रचलित हैं जिन में से सभी की अपनी अपनी विशेषताएँ और सीमायें हैं साथ ही सभी की विशिष्ट उपयोगिता भी है जिसका वर्णन निम्नांकित है :

### **मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की विशेष शिक्षा (Special Education for Children with Mental Retardation/Intellectual Disability)**

प्रायः व्यक्तिगत अनुदेशनात्मक कार्यक्रम है। इसका मुख्य आधार है बच्चे की वर्तमान क्रियाशीलता जिसके द्वारा शिक्षण के लक्ष्य, शिक्षण सामग्री शिक्षण विधि, शिक्षण की तकनीक आदि निर्धारित होती है। विशिष्ट शिक्षा में इस बात पर जोर दिया जाता है कि बच्चे को व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उन्हें उनके उच्च स्तर तक पहुँचाना है।

विशेष शिक्षा का तात्पर्य है विशेष आवश्यकता युक्त बालक को (सामान्य से अलग) विशेष वातावरण में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा, विशेष संरचित पाठ्यक्रम, विशिष्ट तकनीकों एवं विधियों तथा विशेष रूप से निर्मित शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करके पढ़ाना। यह हालांकि गंभीर अक्षमता युक्त बालकों के लिए प्रभावी और लाभकारी सिद्ध हो सकता है लेकिन अपनी भेदभावपूर्ण प्रकृति जो अक्षमतायुक्त बालकों को समाज एवं समुदाय से अलग करती है, के कारण वर्तमान समय में उपयुक्त नहीं है।

विशेष शिक्षा के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं :

- सभी बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान।
- यह आधारभूत जीवनयापन कौशल सिखाता है ताकि व्यक्ति/बालक स्वावलंबी हो सके।
- यह बालकों को एक सुरक्षित एवं सुरचित अधिगम कार्यक्रम का आधार देता है।
- बच्चे के बौद्धिक विकास में सहायक

- बच्चे के माता-पिता को उपयुक्त सेवाएं प्राप्त करने में मददगार

### विशेष शिक्षा की कमियां :

- विशेष शिक्षा की उच्च लागत, जो गरीब बालक सहन नहीं कर सकते।
- सामान्यतः शहरी क्षेत्रों में विशेष शिक्षा की उपलब्धता जो सिर्फ उच्च आयु वर्ग से आने वाले बालकों को उलब्ध थी।
- विशेषज्ञ शिक्षक और सामान्य शिक्षकों के मध्य 'विशेषज्ञता' के आदान-प्रदान का अभाव।

### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की समेकित शिक्षा (Integrated Education for Children with Mental Retardation / Intellectual Disability)

समेकित शिक्षा का तात्पर्य है अक्षमताग्रस्त बालकों को कुछ समय के लिए सामान्य बालकों के साथ अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करना जैसे लंच टाइम में, खेल के समय, विभिन्न सामाजिक अवसरों पर उनका संपूर्ण शिक्षण का कार्य अलग-अलग होता है चाहे दोनों विद्यालय भिन्न-भिन्न हों या विशेष बालक की एक ही कैंपस में अलग कक्षा हो। यह इस मान्यता पर आधारित है कि यदि अक्षमता युक्त बालक कुछ उपयुक्त सामाजिक व्यवहार सीख ले तब, उसे सामान्य कक्षा में भेजा जा सकता है। यह विशेष शिक्षा से बेहतर विकल्प है लेकिन वर्तमान मानवाधिकारों के दौर में प्रासंगिक नहीं है क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी बालक का अधिकार है। समेकित शिक्षा का तात्पर्य सामान्य अर्थों में 'बच्चे के सामान्य स्कूल में जाने' से है। जबकि समावेशी शिक्षा का अर्थ विद्यालय में बच्चे की पूर्ण भागीदारी से है।

### समेकित शिक्षा के लाभ :

- बच्चे को बेहतर समाजीकरण
- बच्चे के सामाजिक एकीकरण को प्रोत्साहन देना।
- बच्चे के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति सकारात्मक
- अभिभावकों की बालक की शिक्षा में अधिक भागीदारी

### NOTES

- कम विशेष शिक्षा की तुलना में व्यय
- कुछ शोधों के अनुसार छात्रों की बेहतर उपलब्धि
- संस्थानीकरण तथा आवागम के खर्च में बचत

## NOTES

### समेकित शिक्षा की सीमायें :

- सभी बालकों की आवश्यकता पूरी करने में असमर्थ।
- सीमित संसाधन पर अधिक दबाव।
- अभिभावकों, स्वयंसेवकों तथा अन्य बालकों द्वारा सहयोग की आवश्यकता।

### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा (Inclusive Education for Children with Mental Retardation/Intellectual Disability)

समेकित शिक्षा का तात्पर्य है अक्षमताग्रस्त बालकों को कुछ समय के लिए सामान्य बालकों के साथ अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करना जैसे लंच टाइम में, खेल के समय, विभिन्न सामाजिक अवसरों पर उनका संपूर्ण शिक्षण का कार्य अलग-अलग होता है चाहे दोनों विद्यालय भिन्न-भिन्न हों या विशेष बालक की एक ही कैम्पस में अलग कक्षा हो। यह इस मान्यता पर आधारित है कि यदि अक्षमता युक्त बालक कुछ उपयुक्त सामाजिक व्यवहार सीख ले तब, उसे सामान्य कक्षा में भेजा जा सकता है। यह विशेष शिक्षा से बेहतर विकल्प है लेकिन वर्तमान मानवाधिकारों के दौर में प्रासंगिक नहीं है क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी बालक का अधिकार है। समेकित शिक्षा का तात्पर्य सामान्य अर्थों में 'बच्चे के सामान्य स्कूल में जाने' से है। जबकि समावेशी शिक्षा का अर्थ विद्यालय में बच्चे की पूर्ण भागीदारी से है।

### समेकित शिक्षा के लाभ :

- बच्चे को बेहतर समाजीकरण
- बच्चे के सामाजिक एकीकरण को प्रोत्साहन देना।
- बच्चे के प्रति सामाजिक अभिवृत्ति सकारात्मक
- अभिभावकों की बालक की शिक्षा में अधिक भागीदारी।

- कम विशेष शिक्षा की तुलना में व्यय
- कुछ शोधों के अनुसार छात्रों की बेहतर उपलब्धि
- संस्थानीकरण तथा आवागमन के खर्च में बचत

समेकित शिक्षा की सीमायें :

- सभी बालकों की आवश्यकता पूरी करने में असमर्था।
- सीमित संसाधन पर अधिक दबाव।
- अभिभावकों, स्वयंसेवकों तथा अन्य बालकों द्वारा सहयोग की आवश्यकता

### मानसिक मंदता/बौद्धिक अक्षमता युक्त बालकों की समावेशी शिक्षा (Inclusive Education for Children with Mental Retardation / Intellectual Disability)

शिक्षा के क्षेत्र में समावेश (समोवशी शिक्षा) का तात्पर्य है विद्यालय के पुनर्निर्माण की वह प्रक्रिया जिसके लक्ष्य सभी बच्चों को शैक्षणिक तथा सामाजिक अवसरों की उपलब्धता है। इस प्रक्रिया में पाठ्यक्रम, परीक्षण, छात्र की उपलब्धियों का रिकॉर्ड, विभिन्न योग्यताओं के आधार पर छात्रों के समूहन, शिक्षण तकनीक, कक्षा के अंदर के क्रिया-कलाप आदि के साथ ही खेल तथा मनोरंजनात्मक क्रियाओं भी सम्मिलित हैं।

यूनेस्को के अनुसार, समावेशी शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जो;

- यह विश्वास करती है कि सभी बच्चे सीख सकते हैं तथा सभी बच्चे की अलग-अलग प्रकार की विशेष आवश्यकता होती है।
- जिसका लक्ष्य सीखने की कठिनाइयों की पहचान एवं उनका प्रभाव न्यूनतम करना है।
- जो औपचारिक शिक्षा में वृहत् अर्थ रखता है और घर समुदाय एवं घर से बाहर शिक्षा के अन्य अवसरों पर भी जोर देता है।
- अभिवृत्तियों, व्यवहारों, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम तथा वातावरण को परिवर्तित करने की वकालत करता है ताकि सभी बालकों की विशेष आवश्यकतायें पूरी हो सकें।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES

## NOTES

- एक स्थिर गति से, चलने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है और समावेशी समुदाय को प्रोन्नत करने के लिए प्रयुक्त विभिन्न तरीकों का एक भाग है।

### समावेशी शिक्षा की विशेषतायें :

- विद्यालय व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए सभी बालकों के लाभ के सिद्धांत पर काम करते हैं।
- विद्यालय की अभिवृत्ति में अक्षमतायुक्त बालकों के प्रति सकारात्मक परिवर्तन।
- विशेष विद्यालयों की तुलना में कम खर्च का विकल्प।
- माता-पिता पर कोई अतिरिक्त व्यय नहीं।
- अक्षमता युक्त बालकों के सामाजिक कल्याण पर व्यय में कमी।
- अक्षमता युक्त बालकों सहित अन्य सभी बालकों की उपलब्धियों में वृद्धि
- विशेष बालक का उन्नत सामाजिक समायोजन
- समावेशी शिक्षा का किफायती (Cost Effective) होना।
- स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करके व्यय में कमी संभव।
- अक्षमता युक्त बालकों को अपेक्षाकृत वृहत पाठ्यक्रम उपलब्ध।

### समावेशी शिक्षा की सीमायें

- पाठ्यक्रम अनुकूलन का अतिरिक्त व्यय
- शिक्षण सामग्री का अतिरिक्त व्यय
- शिक्षक में समावेशी शिक्षा के लिए उपयुक्त कौशल विकास पर खर्च
- सामान्य एवं विशेषज्ञ शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या
- अभिभावक एवं समुदाय की अधिक भागीदारी की आवश्यकता

## समावेशी शिक्षा के लाभ

भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अनुसार, समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को निम्नलिखित लाभ होते हैं :

- समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बालकों को अपने हम उम्र तथा विकलांग बच्चों के साथ अंतःक्रिया का अवसर मिलता है, जो विशेषविद्यालयों में उपलब्ध नहीं है।
- विशेष आवश्यकता वाले बालक अपने अविकलांग सहपाठियों से सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार, सीखते हैं।
- शिक्षक प्रायः विशेष आवश्यकता वाले बालकों से भी ऊँची अपेक्षा रखते हैं।
- सामान्य एवं विशेष शिक्षक बिना किसी भेदभाव के सभी छात्रों से समान उम्मीद रखते हैं।
- विशेष आवश्यकता वाले बालकों को भी उनकी उम्र के उपयुक्त, शैक्षणिक विषयों के कार्यात्मक/प्रायोगिक भाग को सीखने का अवसर मिलता है जो विशेष विद्यालयों में प्रायः अनुपलब्ध है।
- समावेशी शिक्षा के कारण यह संभावना बढ़ जाती है कि विशेष बालकों की सामाजिक भागीदारी बढ़ेगी तथा जीवन पर्यन्त रहेगी।
- इसके अतिरिक्त, समावेशी वातावरण में अध्ययन करने से, विशेष बालकों को निम्नांकित लाभ होते हैं :
- विशेष बालकों के सहपाठियों के परिणामस्वरूप समाज में उनके प्रति एक सकारात्मक और स्वीकार्यात्मक अभिवृत्ति का हिस्सा।
- विशेष बालकों में एक स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास।
- विशेष बालकों के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति में परिवर्तन।
- विशेष बालक को 'लघु समाज' का अनुभव।
- विशेष बालक को 'लघु समाज' का अनुभव।
- विशेष बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

समावेशी शिक्षा से न केवल विशेष आवश्यकता वाले बालकों को लाभ प्राप्त होता है, बल्कि इससे गैर विकलांग बालकों को भी लाभ होता है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं।

भारतीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अनुसार, गैर विकलांग बालकों के लिए समावेशी शिक्षा के लाभ :

- विभिन्न अनुदेशनात्मक गतिविधियों में सहपाठी-शिक्षक (Peer Tutor) के रूप में काम करने का अवसर।
- विशेष बालकों के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं के दौरान विशेष बालकों का सहयोग करने का अवसर सामान्य बालकों में।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करने, सहनशक्ति आदि का विकास करने में मदद मिलती है।
- सामान्य बालक कई सकारात्मक व्यवहार विशेष बालकों से सीख सकते हैं।
- सामान्य बालकों को कई मानवता से जुड़े व्यवसय तथा उनमें कैरियर की संभावनाओं यथा विशेषशिक्षा, फिजियोथेरापी, अंकुपेशनल थेरापी आदि की जानकारी मिलती है।
- सामान्य बालकों में भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यक्तियों से प्रभावी संप्रेषण कौशल का विकास होता है।

**मानसिक मंदता/बौद्धिक युक्त बालकों के प्रशिक्षण की विशिष्ट तकनीकें (Special of Training of Children with Mental Retardation / Intellectual Disability)**

**कार्य विश्लेषण (Task Analysis)**

ऑपरेंट कंडीशनिंग के प्रयोगों के आधार पर यह बात भी सामने आई कि जटिल से जटिल कार्य को छोटे-छोटे आसान उपखण्डों में बाँट कर, चरणबद्ध तरीके से एक के बाद एक सफलतापूर्वक सिखाया जा सकता है और अंततः वह पूरा कार्य व्यक्ति सफलतापूर्वक कर सकता है। किसी जटिल कार्य को

छोटे छोटे उपखंडों में बाँटना तथा उसे एक तार्किक क्रम में जोड़ना कार्य विश्लेषण कहलाता है।

### शेपिंग (Shaping)

जैसा कि आपने पहले देखा शेपिंग शिक्षण/प्रशिक्षण/परामर्श की वह विधि है जिसमें शिक्षक बाक के लक्ष्योन्मुख हर सफल प्रयास को तब तक प्रोत्साहित करता रहता है जब तक कि लक्ष्य व्यवहार प्राप्त न कर लिया जाये। उदाहरण के लिए यदि एक बच्चा “पानी” नहीं बोल पाता है, परन्तु उसके निकट कुछ “पा पा” जैसा बोल लेता है तो शेपिंग पद्धति का प्रयोग कर कदम पर कदम उसे “पा पा” ..... पाई” कहलाते या बुलाते हुए अन्ततः “पानी” बुलवा सकेंगे।

### शेपिंग पद्धति को प्रभावी बनाने के तरीके :

- व्यवहार प्रशिक्षण के लिए शेपिंग के साथ अन्य पद्धतियों, जैसे प्रोत्साहन, शृंखलाबद्धता, फेडिंग और मॉडलिंग के साथ करें।
- शेपिंग के कदम या चरण इतने बड़े हो कि बच्चा उसे पूरा ही न कर सके, और आगे वाले कदम पर न पहुँच पाए साथ ही इतना छोटा न हो कि, अनावश्यक समय बरबाद हो।
- शेपिंग पद्धति के किसी भी समय चरणों के आकार में परिवर्तन के लिए तैयार रहे। यह बच्चे की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा।

### शेपिंग प्रक्रिया के चरण (Steps involved in Shaping)

1. लक्ष्य व्यवहार चुनें।
2. बच्चे के उस प्रारम्भिक व्यवहार को चुनें जो लक्ष्य व्यवहार से किसी रूप से मिलता हो।
3. प्रभावकारी पुरस्कार का चयन करें।
4. प्रारम्भिक व्यवहार को पुरस्कृत तब तक करते रहें, जब तक वह बार-बार न आने लगे।
5. लक्ष्य व्यवहार से मिलता जुलता कोई भी प्रयास पुरस्कृत करते रहे।

बौद्धिक अक्षमता :  
प्रकृति, आवश्यकता एवं  
हस्तक्षेप

### NOTES

## NOTES

6. लक्ष्य व्यवहार जब जब आता है, पुरस्कृत करते रहें।
7. लक्ष्य व्यवहार को कभी-कभी पुरस्कृत करें।

### परीक्षापयोगी प्रश्न

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानसिक मंदता के संक्षिप्त पाश्चात्य इतिहास का उल्लेख कीजिए।
2. मानसिक मंदता के भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालें।
3. मानसिक मंदता परिभाषित करने वाली अग्रणी संस्थाओं AAIDD, DSM और WHO-ICD का परिचय प्रस्तुत करें।
4. मानसिक मंदता की 1983 और 1992 की AAMR की परिभाषा का तुलनात्मक विवरण दें।
5. मानसिक मंदता की 2012 और 2002 की AAMR की परिभाषा की व्याख्या प्रस्तुत करें, साथ ही इसके पीछे ली गई मान्यताओं का वर्णन कीजिए।
6. मानसिक मंदता और मानसिक रोग में अंतर स्पष्ट करें साथ ही मानसिक मंदता के प्रति भारतीय समाज में व्याप्त भ्रांतियों की चर्चा करें।
7. मानसिक मंदता का 'आवश्यक सहायता पर आधारित' वर्गीकरण प्रस्तुत करें। आवश्यक सहायता पर आधारित वर्गीकरण की मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण से तुलना करें।
8. मानसिक मंदता को परिभाषित करें एवं मानसिक मंदता युक्त बालकों की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
9. मानसिक मंदता के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक वर्गीकरण का विवरण दें एवं दोनों की तुलना करें।
10. मानसिक मंदता के विभिन्न वर्गीकरणों की चर्चा करें और उनकी समतुल्यता पर प्रकाश डालें।
11. मानसिक मंदता की स्क्रीनिंग एवं पहचान आप कैसे करेंगे?

12. मानसिक मंदता के परीक्षण एवं कार्य योजना के लिए भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत दो दूलों का संक्षिप्त विवरण दें।
13. परीक्षण (Assessment) से आप क्या समझते हैं? इसके उद्देश्य एवं विभिन्न प्रकार बताइए।
14. व्यक्तिगत शिक्षण योजना क्या है? इसके विभिन्न अवयवों की विस्तृत उल्लेख कीजिए।
15. मानसिक मंद बालकों के शिक्षण विभिन्न तकनीकों की संक्षिप्त चर्चा करें।
16. कार्य विश्लेषण क्या है? एक मानसिक मंदता युक्त बालका को 'नहाना' सिखाने के लिये कार्य विश्लेषण कीजिए।
17. 'प्रॉम्प्टिंग' (Prompting) क्या है ? मानसिक मंदता युक्त बालकों के शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न प्रॉम्प्ट्स का विवरण दें।
18. मानसिक मंदता युक्त बालकों के विभिन्न शिक्षण सिद्धांतों की चर्चा करें।
19. चेंनिंग क्या है? और मानसिक मंद बालकों के शिक्षण में इसका क्या महत्व है? चेंनिंग के विभिन्न प्रकारों का विवरण दें।
20. बच्चे के विकास के विभिन्न मील के पत्थरों को लिखें।
21. परामर्श की व्यापक परिभाषा दीजिए तथा उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।
22. परामर्श की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए निर्देशन एवं परामर्श में अन्तर बताइए तथा उदाहरण से स्पष्ट कीजिए।
23. परामर्श की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। विद्यार्थी के लिए परामर्श की उपयोगिता का उल्लेख कीजिए।
24. परामर्शदाता एवं परामर्शप्रार्थी के सम्बन्धों को स्पष्ट कीजिए तथा परामर्शदाता की प्रमुख भूमिका का उल्लेख कीजिए।
25. मनोवैज्ञानिक एवं मनोचिकित्सात्मक परामर्श की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

## NOTES

## NOTES

26. परामर्श के प्रकारों के सम्बन्ध में रोजर्स तथा बैलन के विचारों का विवेचन कीजिए।

27. निदेशात्मक एवं अनिदेशात्मक परामर्श की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आंकलन के उपकरण तथा क्षेत्रों का वर्गीकरण कीजिए।
2. परीक्षण के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।
3. कौशल एवं शैक्षिक संबंधी कार्यात्मक युक्तियों का उल्लेख कीजिए।
4. क्रियात्मक अनुसंधान से आप क्या समझते हैं ?
5. क्रियात्मक अनुसंधान के क्षेत्र समझाइये।
6. क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य समझाइये।
7. अभिक्रमित अनुदेशन किसे कहते हैं? इसके आधारभूत अधिनियम समझाइये।
8. परामर्श एक त्रिपदी प्रक्रिया का अर्थ बताइए।
9. परामर्श के मुख तीन उद्देश्य बताइए।
10. समाहारक परामर्श का अर्थ एवं स्वरूप बताइए।

# 3

## स्वलीनता आत्मकेन्द्रित बाधिताः प्रकृति, आवश्यकता तथा हस्तक्षेप

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिताः प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

अध्याय में सम्मिलित विषय-सामग्री :

- उद्देश्य
- प्राक्कथन
- स्वलीनता
- स्वलीनता का अर्थ
- स्वलीनता के कारण
- पहचान एवं विशेषताएँ
- स्वलीनता के उपचार
- स्वलीनता के प्रभाव
- स्वलीनता आत्मकेन्द्रित बाधिता
- व्यवसायिक प्रशिक्षण
- परीक्षापयोगी प्रश्न

NOTES

उद्देश्य—

इस अध्याय अध्ययन के पश्चात् आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे—

- स्वलीनता
- स्वलीनता का अर्थ
- स्वलीनता के कारण
- पहचान एवं विशेषताएँ
- स्वलीनता के उपचार
- स्वलीनता के प्रभाव
- स्वलीनता आत्मकेन्द्रित बाधिता
- व्यवसायिक प्रशिक्षण

## NOTES

### प्राक्कथन

स्वलीनता एक विकासात्मक विकृति (Pervasive Development Disorder) का एक समूह है जिससे सामाजिक कौशलों, भाषा कौशलों तथा व्यवहार क्षमताओं इत्यादि में अंधविश्वास की अवस्था दिखाई देती है। यह ऐसी विकृतियों का समूह है, जिसमें विकास के एक से अधिक (भाषा विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास) क्षेत्र प्रभावित होते हैं तथा जिसका प्रारंभ जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में होती है। स्वलीनता एक ऐसी विकृति है, जिससे पीड़ित व्यक्ति में दूसरों से सम्बन्ध स्थापित करने या क्रिया करने में कमी, भाषा कौशल में असामान्यता या कमी तथा सीमित एवं पुनरावृत्ति व्यवहार प्रतिरूप के लक्षण मुख्य रूप से दिखाई देते हैं।

### स्वलीनता (AUTISM)

स्वलीनता एक विकासात्मक विकृति (Pervasive Development Disorder) का एक समूह है जिससे स्वलीनता सामाजिक कौशलों, भाषा कौशलों तथा व्यवहार क्षमताओं आदि में अंधविश्वास की अवस्था दिखाई देती है। यह एक ऐसी विकृतियों का समूह है, जिसमें विकास के एक या एक से अधिक (भाषा विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास) क्षेत्र प्रभावित होते हैं तथा जिसका प्रारंभ जीवन के प्रारंभिक वर्षों से होती है। स्वलीनता एक ऐसी विकृति है जिससे पीड़ित व्यक्ति में दूसरों से संबंध स्थापित करने या अन्तः क्रिया करने में कमी, भाषा कौशल में असमानता या कमी तथा सीमित एवं पुनरावृत्ति व्यवहार प्रतिरूप के लक्षण मुख्य रूप से दिखाई देते हैं।

### स्वलीनता का अर्थ

स्वलीनता (Autism) शब्द ग्रीक भाषा के "आटस" (Autus) शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है - "स्व" (Self) इसका उपयोग सर्वप्रथम यूरोन ब्ल्यूयलर (Eugen Bleuler) ने 1911 ई. के अन्तर्गत मानसिक विकृति स्कीजोफ्रीनिया के रोगियों में पाये जाने वाले सामाजिक संबंधों के अन्तर्गत उपस्थित कमी के लक्षण को सम्बोधित करने के लिए किया। परन्तु वर्तमान

## NOTES

समय में इस शब्द का प्रयोग बच्चों में पाये जाने वाले व्यापक विकासात्मक विकृति के लिए किया जाता है।

सम्भवतः स्वलीनता मनुष्य में सदैव व्याप्त रही है, लेकिन इसका वर्णन 20 वीं शताब्दी तक पूर्ण रूप से नहीं हुआ। स्वलीनता के लक्षणों की पहचान या विभेद न कर पाने के कारण इसका निदान मानसिक रूग्णता की भाँति किया जाता है। फिर भी लम्बे समय से स्वलीनता पर अध्ययन करने वालों का ध्यान स्वलीनता के विशिष्ट लक्षणों की ओर आकृष्ट हुआ और उसका सही निदान हो सका। आटिज्म, शब्द का प्रयोग स्विस मनोचिकित्सक ब्लूभलन ने वर्ष 1911 के अन्तर्गत किया। स्वलीनता का वैज्ञानिक अध्ययन लियो कैनर (Leo Kanner) ने 1943 में तथा हंस एस्पेर्गर (Hans Asperger) ने 1944 के वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा प्रारंभ हुआ।

स्वधीनता का प्रथम उदाहरण 1699 ई. में बेथलेहम हॉस्पिटल (Bethlehem Hospital) लंदन में वर्णित है।

**परिभाषा (Definition)** – अमेरिकन विकलांगता अधिनियम, 1990 के अनुसार, “स्वलीनता एक विकासात्मक अक्षमता है, जो मुख्य रूप से शाब्दिक-अशाब्दिक सम्प्रेषण तथा सामाजिक अन्तःक्रिया को प्रभावित करती है। सामान्य रूप से यह घटना 3 वर्ष की उम्र के पूर्व प्रारंभ होती है, जो बच्चे के शैक्षिक निष्पादन को प्रभावित करती है। प्रायः इसके साथ कुछ अन्य लक्षण भी होते हैं। जैसे- एक ही क्रिया को निरन्तर दोहराना, पुनरावृत्ति क्रियायें, अनावश्यक अनुक्रिया एवं संवेदी अनुभूतियाँ इत्यादि। चूँकि इस प्रकार के बच्चों में गंभीर रूप से भावनात्मक कमी पायी जाती है, इसलिए बच्चे का शैक्षिक निष्पादन विपरीत होता है।

**स्वलीनता के कारण (Causes of Autism)** – अधिकांश अध्ययनों के उपरान्त अभी तक स्वलीनता का कोई स्पष्ट एवं निश्चित कारणों का पता नहीं चला है। उन अध्ययनों के आधार पर निम्नलिखित कारणों को इस विकृति की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान माना गया है।

1. **वंशानुगत स्थिति** – जुड़वा युग्मज अध्ययन विधि तथा परिवार अध्ययन विधि से प्राप्त आँकड़े इस मत का समर्थन करते हैं, कि इस विकृति की उत्पत्ति में आनुवंशिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। अध्ययनों के अनुसार



## NOTES

- पाया गया है कि इस विकृति के होने की संभावना उस परिवार के बच्चों में अधिक होती है, जिसके परिवार में इसका इतिहास देखने को मिलता है। इस विकृति की दर समजातीय युग्मज में विषमजातीय युग्मज की तुलना में अधिक होती है। एक अध्ययन के अनुसार लगभग 2 प्रतिशत स्वलीन बच्चों के भाई-बहनों में यह विकृति देखने को मिलती है, जो सामान्य जनसंख्या 50-100 गुना अधिक है।
- 2. मस्तिष्कीय संरचना में दोष** – अध्ययनों के अनुसार यह पाया गया है कि ऐसे बच्चों की मस्तिष्कीय संरचना विशेषकर, अग्रपालि (Frontal Cerebrum), पैराइटल (Parietal Lobe), शंखपालि (Temporal Lobe) एवं मध्य मस्तिष्क (Midbrain) की संरचना में दोष, प्रमुख रूप से देखने को मिलते हैं। इन संरचनाओं में दोष के कारण ऐसे बच्चों के व्यवहार, संवेग तथा संज्ञानात्मक क्षमताओं की कमी पायी जाती है।
  - 3. विषाणु का संक्रमण** – यदि जन्म के समय बच्चा, स्वेल साइटोमेगैलोबाइरस, हरपिस, इन्सेफलाइटिस, इत्यादि से संक्रमित हो जाता है, तो ऐसे बच्चों में मानसिक मन्दता और स्वलीनता के लक्षण उत्पन्न होने की संभावना होती है।
  - 4. उपापचय संबंधी विकृतियाँ** – अध्ययनों के अनुसार पाया गया है कि उपापचय सम्बन्धी विकृतियाँ, विशेषकर यूरिन, सिन्थेसिस, कार्बोहाइड्रेट आदि से संबंधित असामान्यता बच्चों में स्वलीनता के लक्षण उत्पन्न करती है।
  - 5. मानसिक मन्दता से संबंधित कारक** – अधिकांशतः यह विकृति मानसिक मन्दता के साथ सम्बन्धित होती है। अतः विद्वानों का यह मानना है कि मानसिक मन्दता से जुड़ कुछ ऐसे कारण हैं जो बच्चों में स्वालीनता को पैदा करते हैं। इन कारण में डाउन सिन्ड्रोम (Downsyndrome) फ्रैजाइल-एक्स-सिन्ड्रोम (Fragile-x-syndrome) प्राडर-विलि-सिन्ड्रोम (Prader-wille syndrome) और फिनाइल कीटोन्यूरि (Phenyl Ketonuria) आदि प्रमुख सहायक होती है। फिगर एवं सहयोगियों (1986) के अनुसार 10 से 20 प्रतिशत स्वलीन बच्चों में गुणसूत्रीय विकृति पायी जाती है।

6. **मस्तिष्कीय चोट** – स्वलीनता का कारण अधिकांश अध्ययन इस कथन का समर्थन करते हैं कि जन्म के पूर्व या जन्म के समय मस्तिष्कीय चोट इसका इस प्रमुख कारण है जैसे- जन्म के समय देर से चिल्लाना, जन्मजात ऐंठन या दौरा, एनाक्सिया आदि। यह बात विस्तृत रूप से उभर कर आयी है कि ऐसे कारण जैसे-माता शिशु के संबंध या शिक्षा स्वलीनता के कारण नहीं है। स्वलीनता के सही कारकों की जानकारीयों के अभाव में अधिकांश पीढ़ियों में माताएँ अनुसूचित रूप से दोषी ठहरायी जाती है। उन्हें गंभीर अक्षमताग्रस्त बच्चे के दायित्वों का भार सहन करते हुए दोषी ठहराया जाता रहा है। अनेक शोधों के द्वारा 1960-70 के दशक के स्वलीनता के जैविक उत्पत्ति के कारण का पता चला, जिसका नैदानिक अध्ययन रिमलैण्ड” ने 1964 में किया।

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिता: प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

## NOTES

### पहचान एवं विशेषताएँ (Identification and Characteristics)

(क) **व्यवहारात्मक विशेषताएँ** – सामाजिक संबंधों में गुणात्मक कमी स्वलीनता का एक प्रमुख लक्षण है। ऐसे बच्चे अपने अभिभावक के साथ संज्ञानात्मक संबंध स्थापित कर पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे बच्चों में सामाजिक मुस्कान (Social Smile) का अभाव पाया जाता है। ऐसे बच्चे प्रायः अंतःक्रिया करते समय आँख से आँख मिलाने में घबराते हैं। ऐसे बच्चे स्कूल जाने की उम्र आने पर दोस्ती बना सकने में अथवा संबंधों को जोड़ने से असमर्थ रहते हैं। इसके साथियों की संख्या नगण्य के बराबर होती है। इसमें परानुभूति के गुणों का अभाव पाया जाता है।

(ख) **भाषा संबंधी विकृति**— ऐसे बच्चों के भाषा में काफी क्षति एवं असामान्यता दृष्टिगोचर है। ऐसे बच्चों में भाषा का विकास भी होता है, तो इन्हें बातचीत को शुरू करने, उसे बनाये रखने तथा उसे अन्त करने में काफी कठिनाई का अनुभव होता है। ऐसे बच्चों में इकोलेनिया का लक्षण भी देखने को मिलता है। ऐसे बच्चों की आवाज एवं उसकी तारतम्यता (Rhythm) से संबंधित कई विषमताएँ पायी जाती हैं।

(ग) **पुनरावृत्ति व्यवहार** – ऐसे बच्चों की व्यवहारिक इच्छा एवं प्रेरक में पुनरावृत्ति के लक्षण अधिक दृष्टिगोचर हैं। ये बच्चे अधिकतर निर्जीव

## NOTES

खिलौनों के साथ खेलना पसन्द करते हैं। इस बच्चों में बहुत से पेशीय पुनरावृत्ति व्यवहार भी देखने को मिलते हैं। ऐसे बच्चे परिवर्तन के विरोध में काफी दृढ़ होते हैं। अतः यदि इनके दैनिक जीवन की गतिविधियों में परिवर्तन लाया जाये, तो इन्हें बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है।

(घ) **संवेगात्मक अस्थिरता** – कुछ स्वलीन बच्चों में संवेगात्मक अस्थिरता के भी लक्षण देखने को मिलते हैं।

(ङ) **अन्य लक्षण** – ऐसे बच्चों में अति चंचलता, आक्रामकता, आत्मघाती एवं निम्न बौद्धिक क्षमता के लक्षण भी पाये जाते हैं।

### **CWID के प्रबंधन हेतु युक्तियाँ, रणनीतियाँ एवं उपचार**

**स्वलीनता के उपचार/उपाय –**

**शीघ्र हस्तक्षेप (Early Intervention)** – समाज में व्याप्त स्वलीनता की विकृति स्वलीनता से ग्रसित बच्चे ही शीघ्र हस्तक्षेप से रोक सकते हैं, जो व्यवहारिक उपचार से प्री-स्कूल तक के वर्षों में स्वलीनता ग्रस्त बच्चों के लिए आवश्यक होता है। शीघ्र हस्तक्षेप स्वलीनताग्रस्त बच्चों के अनुकूल व्यवहार तथा सम्प्रेषण को बनाये रखने में सहायक होता है।

प्रभावशाली शीघ्र हस्तक्षेप सेवा बच्चे को उसके विद्यालय के समावेशन के लिए प्रतिभागी होने में सहायता करती हैं। ऐसे में शिक्षा, समेकित शिक्षा, समावेशित शिक्षा तथा सामाजिक समावेशित के लिए शीघ्र हस्तक्षेप सेवाएँ अत्यन्त आवश्यक होती हैं।

स्वलीनता के उपचार तथा प्रबंधन में कई उपागमों तथा प्रविधियों का एक साथ उपभोग किया जाता है। ऐसे बच्चे, विशेषकर जिनकी बौद्धिक क्षमता में अधिक क्षीणता नहीं होती, व उपचार में मनोवैज्ञानिक जैविक तथा शैक्षणिक हस्तक्षेप के द्वारा काफी सुधार लाया जा सकता है।

- बच्चे के शिक्षण एवं समस्या समाधान की क्षमता को बढ़ाना।
- शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले नकारात्मक व्यवहारों को दूर करना।

- परिवार को इस समस्या से उत्पन्न तनाव एवं प्रतिबल से निपटने में सहायता करना।
- स्वलीनता से सम्बन्धित अन्य विकृतियों के उपचार में सहायता करना आदि।

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिता: प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

## NOTES

इन बच्चों को समुचित प्रबंधन के लिए समूह उपागम की आवश्यकता होती है जिससे नैदानिक, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, विशेष शिक्षक, बाल रोग विशेषज्ञ, वाणी तथा भाषा चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता सामूहिक रूप से योगदान देते हैं। इनके प्रबंधन में मुख्यतः दो प्रकार की प्रविधियों का उपभोग किया जाता है -

- जैविक चिकित्सा (Biological Treatment)
- मनोसामाजिक चिकित्सा (Psychological Treatment)

**जैविक चिकित्सा प्रविधि-** स्वलीन बच्चों में पाये जाने वाले कुछ व्यावहारात्मक विकृतियाँ, जैसे-अति चंचलता, आक्रामकता आदि के उपचार के लिए औषधियों का प्रयोग किया जाता है। औषधि चिकित्सा विधि का उपभोग एक सहायक चिकित्सा प्रविधि के रूप में किया जाता है।

**मनोसामाजिक चिकित्सा प्रविधि -** स्वलीनता के उपचार में कई प्रकार की मनोसामाजिक प्रविधियों का उपभोग किया जाता है।

इन प्रविधियों में प्रमुख प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं -

**शैक्षणिक हस्तक्षेप (Educational Intervention) -** इन बच्चों के शैक्षणिक कार्यक्रम में भाषा विकास तथा सम्प्रेषण पर अधिक बल दिया जाता है। इसमें माता-पिता का सहयोग भी वांछनीय होता है। शिक्षक को चाहिए कि शिक्षण कक्ष तथा विद्यालय में बच्चे के अवांछनीय व्यवहार को दूर करने तक वांछनीय व्यवहार को बढ़ाने के लिए दण्ड एवं पुनर्बलन आदि का उपयोग करें। इनके पाठ्यक्रम और शैक्षणिक वातावरण में ज्यादा परिवर्तन नहीं करना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो परिवर्तन धीरे-धीरे करना चाहिए क्योंकि ये बच्चे परिवर्तन के खिलाफ बहुत दृढ़ होते हैं। इनके शिक्षण में बहुसंवेदी उपागम तथा संवेदी एकीकरण पर बल दिया जाता है। इन बच्चों के लिए ऐसा अधिगम वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें इन्हें सामान्य बच्चों के साथ

## NOTES

अधिक से अधिक अंतःक्रिया करने का अवसर प्राप्त हो। ऐसे बच्चों का शैक्षणिक वातावरण काफी संरचनात्मक रखना चाहिए। शिक्षक को शिक्षण के दौरान सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। पाठ्य विषय को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटकर प्रस्तुत करना चाहिए। इन बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्प्रेषण पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। जैसे संगीत कला, नाट्य आदि। इनके शाब्दिक सम्प्रेषण के साथ-साथ अशाब्दिक सम्प्रेषण के विकास पर भी ध्यान देना चाहिए।

**व्यवहार परिमार्जन (Behaviour Modification)** – स्वलीन बच्चों में भी ये समस्या व्यवहार पाये जाते हैं। इन बच्चों में पाये जाने वाले अवांछनीय व्यवहार को दूर करने के लिए तथा वांछनीय व्यवहार को बढ़ाने के लिए प्रायः व्यवहार परिमार्जन के सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है। नैमिनिक अनुबंध और साधनात्मक अनुबंधन पर आधारित प्रविधियों का उपयोग प्रायः शिक्षक एवं चिकित्सक, स्वलीन बच्चों के समस्या व्यवहार को दूर करने के लिए करते हैं। इन प्रविधियों में पुर्नबलन पर आधारित प्रविधियों का उपयोग वांछनीय व्यवहार को बढ़ाने के लिए, समस्या व्यवहार के स्थान पर वांछनीय व्यवहार को प्रतिस्थापित करने के लिए तथा दण्ड पर आधारित प्रविधियों का उपयोग अवांछनीय व्यवहार को दूर करने के लिए किया जाता है।

**मनोचिकित्सा (Psychotherapy)** – इन बच्चों के प्रबंधन में आवश्यकतानुसार संक्षिप्त वैयक्तिक मनोचिकित्सा का भी प्रयोग किया जाता है। एक स्पष्ट एवं शाब्दिक समस्या होती है जिसमें चिन्ता एवं विषाद के लक्षण देखने को मिलते हैं। विशेष कर उन्हीं बच्चों पर मनोचिकित्सा की प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

**सामाजिक कौशल प्रशिक्षण (Social Skill Training)** – स्वलीन बच्चों में प्रायः सामाजिक कौशलों का अभाव पाया जाता है। इसमें सामाजिक कौशल के दोनों क्षेत्र के सम्प्रेषण तथा सामाजिक अंतःक्रिया के क्षेत्र में मुख्य रूप से प्रभावित होते हैं। इन बच्चों में सामाजिक कौशलों को विकसित करने के लिए सामाजिक कौशल प्रशिक्षण का प्रयोग किया जाता है। यह प्रायः उन बच्चों के लिए बहुत उपयोगी होता है, जिनकी बौद्धिक क्षमता तथा कार्यक्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है।

## NOTES

**परामर्श (Counselling)** – ऐसे बच्चों के अभिभावकों को बच्चों के विषय में सही जानकारी प्रदान कर उसे अनेक प्रकार की परिस्थितियों से सामना करते हुए योग्य बनाने के लिए सहायता की जाती है। चिकित्सक तथा विशेषज्ञ इन बच्चों के अन्दर थोड़ा सा सुधार ला सकते हैं। लेकिन स्वलीन बच्चों को परिवार से अलग नहीं करना चाहिए। अतः ऐसे बच्चों के परिवार को हमेशा प्रोत्साहन तथा सहयोग प्रदान करना चाहिए।

**खानपान संबंधी अन्तराक्षेपण (Dietary Intervention)** – प्रायः स्वलीन बच्चों के माता पिता की यह शिकायत रहती है कि कुछ निश्चित खाद्य पदार्थ हैं जिनके सेवन से मस्तिष्क पर कुप्रभाव पड़ता है, जिससे उनका सामाजिक कौशल और पीछे रह जाता है। इंग्लैण्ड व फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में शोध के द्वारा पाया गया है कि कुछ प्रोटीन युक्त पदार्थ भी स्वलीन बच्चे के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालते हैं। जिससे उनके मस्तिष्क के कार्य प्रभावित होते हैं। अतः वर्तमान समय में इन बच्चों के खान पान में विशेष सुधार पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

**अन्य चिकित्सकीय सेवाएँ**— बच्चे को विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आवश्यकतानुसार उपरोक्त प्रविधियों के साथ बहुत सी चिकित्सा प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। इसमें वाणी, चिकित्सा, व्यावसायिक चिकित्सा, भौतिक चिकित्सा आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कला एवं संगीत पर भी उपयोग कर इन बच्चों में सम्प्रेषण तथा भाषा विकास, विशेषकर अशाब्दिक संचार की क्षमता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

**स्वलीनता के सम्भावित सुधार** – इन बच्चों के प्रबंधन पर आधारित किये गये अनेकों अध्ययनों में पाया गया कि व्यस्क तक पहुँचने के बाद दो तिहाई बच्चे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। केवल 5 से 16 प्रतिशत स्वलीन किसी कार्य को करने योग्य तथा समाज में आत्म निर्भर होकर जीवन यापन करने योग्य बन सकते हैं। स्वलीन बच्चों में सुधार की संभावना मुख्यतः दो तत्वों पर निर्भर करती है – बच्चे की बौद्धिक क्षमता तथा भाषा की विकास की क्षमता। यदि बच्चे के प्रबंधन में ये दोनों अधिक अच्छी होती है तो सुधार की सम्भावना भी अधिक होती है।

रसेल (1960) का मानना है कि 10-20 प्रतिशत ऐसे बच्चों में सुधार 4-6 वर्ष की अवस्था में हो जाता है जो सामान्य विद्यालय में शामिल हो सकते हैं

## NOTES

एवं अपने कार्यों को करने में सक्षम बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त 10-20 प्रतिशत ऐसे बच्चे होते हैं जो अपने दैनिक क्रिया कलाप को नहीं कर पाते तथा उन्हें विशेष विद्यालय एवं विशेष शिक्षक की आवश्यकता होती है।

**निष्कर्ष** – सामान्यतः स्वलीनता का अर्थ है अपने आप में खो जाना लीन हो जाना। इस प्रकार के बच्चों के सामाजिक व्यवहार में कमी के साथ वाणी इत्यादि में भी कमी पायी जाती है। इन बच्चों में स्नायु विकास की जटिल समस्याएँ होती हैं। क्योंकि यह व्यापक विकासात्मक विकृति के अन्तर्गत आने वाली एक विकृति है। इन बच्चों में निम्नलिखित लक्षण दिखाई देते हैं। जैसे-व्यवहारिक विशेषताओं के अन्तर्गत सामाजिक संबंधों में गुणात्मक, कमी, भाषा संबंधी विकृति आदि। ऐसे बच्चों में भाषा में क्षति तथा विषमताएँ दिखाई देती हैं तथा भाषा विकास देर से होता है।

इन बच्चों के शिक्षण तथा पुनर्वास के लिए प्रबंध करने की आवश्यकता होती है, जिससे ये उचित प्रशिक्षण तथा शिक्षा प्राप्त कर सकें। इनके प्रबंधन के लिए जैविक, मनोसामाजिक, मनोचिकित्सा, व्यवहार परिमार्जन, परामर्श एवं सामाजिक प्रशिक्षण विधियों का भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे बच्चों के सामाजिक समायोजन में प्रयुक्त वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः विभिन्न शिक्षण-प्रशिक्षण एवं चिकित्सकीय विधियों के साथ-साथ उचित पर्यावरण प्रदान करना इनके शिक्षण तथा पुनर्वास के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

### **ऑटिस्म के प्रभाव (Effects of autism) :**

आज ऑटिस्म ने विश्वव्यापी गृहण कर लिया है आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2010 तक 7 करोड़ लोग ऑटिस्म से ग्रसित हो चुके थे इससे प्रभावित लोगों की संख्या cancer, diabetes, AIDS के रोगियों से भी अधिक होती जा रही है। दुनियाभर में प्रति दस हजार में से 20 व्यक्ति इस रोग से प्रभावित होते हैं। ऑटिज्म महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक देखने को मिला है, यानि 100 में से 80 फीसदी पुरुष इस बीमारी से ग्रसित है।

भारत में भी यह विकार व्यापक रूप से फैल रहा है आंकड़े दर्शाते हैं कि 2016 तक भारत में 10 करोड़ से अधिक व्यक्ति इस विकार से प्रभावित हैं और disability की पिछले कुछ वर्षों में वृद्धि हुई है। रोग नियंत्रण तथा

रोकथाम (सीडीसी) के मुताबिक, आज प्रत्येक 88 बच्चों में से एक ऑटिस्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (autism spectrum disorder) से पीड़ित है।

ऑटिस्म आजीवन रहने वाली अवस्था है इसका कोई इलाज नहीं है। हम प्रभावित व्यक्ति को उचित थेरेपी तथा उपचारों द्वारा उसके सही विकास में सहायता प्रदान कर सकते हैं। जैसा कि हम जान चुके हैं, ऑटिज्म के लक्षण बच्चों में 18 माह के होने तक दिखाई देने लगते हैं। अगर हम आरम्भ से ही उन बच्चों में ऑटिज्म के उन लक्षणों को पहचान लें और उन बच्चों के बौद्धिक विकास की ओर ध्यान दें तो ऐसे बच्चों के मानसिक विकास को सही दिशा मिल सकती है। उपचार ऐसा होना चाहिए जिससे बच्चा स्कूल आने-जाने, सबसे घुलने-मिलने तथा पढ़ने-लिखने, सिखने और खेलने की अपनी योग्यताओं को समझ सके। बच्चा सामाजिक तौर पर खुल सके, सबसे हँस कर बातचीत कर सके। व्यस्क होने पर स्वतंत्र रूप से जीवन-यापन करने में सक्षम हो सके। ऐसा बनाने में बच्चे के माता पिता के अलावा थेरेपिस्ट की अहम् भूमिका होती है। थेरेपी का प्रभाव भी ऐसा हो कि उनके communication skill सही तरीके से develop हो सकें; उसका व्यवहार सामाजिक तौर पर सामान्य हो जाये तथा उसके अजीब व्यवहार में कमी आ जाये।

मनोचिकित्सक (psychologist) की सलाह लेकर तथा उनकी थेरेपी या निर्देशों के अनुसार पानल कर बच्चे में प्रभावित लक्षणों को पहचानकर उनको सुधारने का प्रयास करें। ऑटिस्टिक बच्चे के माता-पिता को बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वह तनाव महसूस करते हैं। अधिकांश समय वह अपने बच्चों के साथ व्यतीत करते हैं जो कि आवश्यक भी है। उनकी प्रत्येक जिम्मेदारी निभाना इतना आसान नहीं है। खासकर बच्चों की माताओं के लिए यह एक बहुत ही चुनौती पूर्ण कार्य होता है। माताओं को अपनी दिनचर्या तथा बच्चे की स्थिति में संतुलन बना कर चलना पड़ता है। ऑटिस्टिक बच्चे के भाई-बहन को भी समझा दिया जाता है कि आपका विशेष भाई बहन है जिसे आपको प्यार से व्यवहार करना है, उनकी सहायता भी करनी है। हम अगर ऑटिस्टिक बच्चे को सही वातावरण दें उनके विकास संबंधी सही विकल्प मुहैया कराये तो उनके विकास में काफी सहायता मिल सकती है।

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिता: प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

## NOTES



## NOTES

### IT IS VERY IMPORTANT TO AWARE ABOUT AUTISM DISORDER

भारत में आमतौर पर लोगों को अभी भी ऑटिस्म के सम्बन्ध में जानकारी नहीं है। पूरे विश्व में मानसिक विकारों में ऑटिज्म तृतीय स्थान पर है। ऐसे बच्चे अलग होते हैं पर ऐसा नहीं है कि इनमें सुधान नहीं हो सकता। इनका नजरिया तथा समझ अलग होता है, संभवतः प्रत्येक बच्चे के लक्षण भी अलग हो सकते हैं। हमें उनकी social skills को improve करने में सहायता करनी होगी और उन्हें समझना पड़ेगा। अगर शुरूआत में ही ऑटिज्म की पहचान कर ली जाए तो आगे उन बच्चों का जीवन सामान्य बनाया जा सकता है।

पूरे विश्व में 2 अप्रैल ऑटिज्म दिवस (April 2nd as World Autism Awareness Day. It was first observed in 2008). के रूप में मनाया जाता है। लोगों को इस मानसिक विकार के प्रति जागरूक किया जाता है। हम सभी को भी इस मानसिक विकार के प्रति जागरूकतर फैलाने का हर संभव प्रयास करना होगा ताकि नन्हें पुष्प के सामान प्यारे बच्चों का जीवन सुरक्षित रहे। वह सभी अच्छे भविष्य की ओर अग्रसर होकर अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत कर सकें।

**ध्यान देने योग्य बातें :**

- (a) 2 अप्रैल ऑटिज्म दिवस के दिन 2016 में, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों के निदान के लिए अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान (AIIMS एम्स) ने एक autism application आरम्भ किया था इसमें लोग किसी भी smartphone पर Google Play store से आसानी से "Autism Spectrum Disorder – Diagnostic Tool App" डाउनलोड कर सकते हैं। यह App ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के लिए बहुत उपयोगी है जिसके द्वारा autism जैसी मानसिक समस्या को अच्छे से पहचाना जा सकता है।
- (b) ऑटिस्टिक बच्चों के माता-पिता को विद्यालय में प्रवेश, यात्रा, आरक्षण आदि के लिए प्रमाण पत्र जारी किया गया है। इस प्रमाण पत्र ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले बच्चों के लिए प्रमाणन का अनुमोदन भारत सरकार द्वारा किया है।

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर /आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder)

आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार (एएसडी) एक मानसिक तथा विकासात्मक विकार है जिसके लक्षण बचपन में ही दिखाई देने लगते हैं और व्यक्ति के जीवन पर्यन्त रहते हैं। यह इस बात को प्रभावित करता है कि व्यक्ति दूसरों से कैसे मिलता और व्यवहार करता है, कैसे बातचीत करता है, और कैसे सीखता है। यह एस्पर्जर सिंड्रोम के रूप में ज्ञात विकार तथा व्यापक विकासात्मक विकार को सम्मिलित करता है। इसे "स्पेक्ट्रम" विकार इसलिए कहते हैं क्योंकि एएसडी से प्रभावित लोगों में लक्षणों की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाई दे सकती है। एएसडी से ग्रस्त व्यक्ति को आपसे बातचीत करने में समस्या हो सकती है, या जब आप उनसे बात करते हैं तो वे आपकी आँखों में नहीं देख सकते हैं। उनकी सीमित रुचियाँ तथा दोहरावयुक्त व्यवहार हो सकते हैं। वे चीजों को व्यवस्थित करने में बहुत समय लगा सकते हैं, या एक ही वाक्य बार-बार दोहरा सकते हैं। अक्सर वे अपनी ही दुनिया में खोये रहते हैं।

वेल्ड-चाइल्ड परीक्षणों में, चिकित्सक आपके बच्चे के विकास की जांच कर सकते हैं। यदि आपके बच्चे में एएसडी के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं तो उसका व्यापक मूल्यांकन किया जायेगा। इसमें विशेषज्ञों की एक टीम शामिल होती है, जो निदान करने के लिए विभिन्न परीक्षण तथा मूल्यांकन करती है।

शोध बताते हैं कि इसमें जींस और पर्यावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान में, एएसडी का कोई मानक उपचार नहीं है। आपके बच्चे की विकसित होने की और नए कौशल सीखने की क्षमता बढ़ाने के लिए कई तरीके हैं। जल्दी उपचार आरम्भ करने से बेहतर परिणाम मिल सकते हैं। उपचारों में व्यवहार तथा संवाद चिकित्सा, कौशल प्रशिक्षण और लक्षणों को नियंत्रित करने के लिए दवाएं सम्मिलित हो सकती हैं।

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के लक्षण

निम्नलिखित लक्षणों से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार (Autism Spectrum Disorder in Hindi) का संकेत मिलता है।

### NOTES

## NOTES

- असामान्य व्यवहार
- अधिक ध्यान केंद्रित हितों वाले
- कुछ विषयों में एक स्थायी तथा गहन रुचि रखते हैं।
- दिनचर्या में थोड़े परिवर्तन से परेशान होना।
- असंगत या कम आँख से संपर्क करना
- संचार का असामान्य तरीका
- बातचीत का असामान्य तरीका

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के सामान्य कारण

निम्नलिखित ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के सबसे सामान्य कारण है :

- परिवार के इतिहास
- मातृ गर्भावस्था संबंधी मधुमेह
- तंत्रिका-संबंधी असामान्यताएं

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के जोखिम कारक

निम्नलिखित कारकों में ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार की संभावना बढ़ सकती है :

- लेकिन
- ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के साथ एक भाई होने के नाते
- पुराने माता-पिता
- आनुवंशिक स्थितियां

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार से निवारण

नहीं, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार को रोकना संभव नहीं है।

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार

हर साल दुनिया भर में देखे गये ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के मामलों की संख्या निम्नलिखित है :

### सामान्य लिंग

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार सबसे सामान्य निम्नलिखित लिंग में होता है :

- लिंग विशिष्ट नहीं

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के निदान के लिए प्रयोगशाला परीक्षण और प्रक्रियाएं

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार का पता लगाने के लिए निम्न प्रयोगशाला परीक्षण तथा प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है :

- विकास संबंधी जांच : जांचने के लिए कि क्या बच्चे अपनी उम्र के अनुसार बुनियादी कौशल सीख रहे हैं।
- व्यापक मूल्यांकन : बच्चों के विकास और व्यवहार और माता-पिता से साक्षात्कार की जांच के लिए

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के निदान के लिए डॉक्टर :

मरीजों को निम्नलिखित विशेषज्ञों का दौरा करना चाहिए, यदि उन्हें ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर:

- विकास बाल चिकित्सा विशेषज्ञ
- बाल न्यूरोलॉजिस्ट

## NOTES

## NOTES

- बाल मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार की समस्याएं अगर इलाज न हो

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार जटिलताओं का कारण बनता है यदि इसका इलाज नहीं किया जाता है नीचे दी गयी सूची उन जटिलताओं और समस्याओं की है जो ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार को अनुपचारिक छोड़ने से उत्पन्न हो सकती है :

- मोटापा
- मोटापे से संबंधित चयापचय संबंधी विकार

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के उपचार के लिए प्रक्रियाएँ

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के इलाज के लिए निम्नलिखित प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है :

- व्यवहार तथा संचार उपचार : सकारात्मक व्यवहार को सीखें या सीखें और अवांछित या समस्या व्यवहार का इलाज करें।
- शैक्षिक चिकित्सा : सामाजिक कौशल, व्यवहार तथा संचार में सुधार
- पारिवारिक चिकित्सा : बच्चों के साथ खेलने और बातचीत करने का तरीका जानें

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के लिए स्वयं देखभाल

निम्नलिखित स्वयं देखभाल कार्यों या जीवनशैली में परिवर्तन से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/ आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के उपचार या प्रबंधन में मदद मिल सकती है :

- धूम्रपान छोड़ने

- शराब की खपत से बचें
- मछली तथा मछली के तेल की खुराक खाएं : न्यूरोडेवेलैपमेंट और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के लक्षणों के लिए।

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के उपचार के लिए वैकल्पिक चिकित्सा

निम्नलिखित वैकल्पिक चिकित्सा तथा उपचार ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के इलाज या प्रबंधन में सहायक करने के लिए जाने जाते हैं :

- क्रिएटिव चिकित्सा : स्पर्श करने या ध्वनि के लिए किसी बच्चे की संवेदनशीलता कम करें।
- संवेदी-आधारित चिकित्सा : इंद्रियां उत्तेजित तथा संवेदी प्रणाली का आयोजन
- चेलेशन थेरेपी : शरीर से पारा एवं अन्य भारी धातुओं को निकालें।
- एक्वूपंचर : ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार के लक्षणों में सुधार
- विटामिन की खुराक एवं प्रोबायोटिक्स : ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार का इलाज करने में सहायता करता है।

## ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के उपचार के लिए रोग सहायता

निम्नलिखित क्रियाओं से ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के रोगियों की मदद हो सकती है :

- अपने और परिवार के अन्य सदस्यों के लिए समय लें : अपने बच्चों के साथ एक-एक बार एक-एक समय तथा अपने पति या पत्नी के साथ योजना की तारीख तय करें।
- अन्य परिवारों को एक ही शर्त के साथ ढूँढ़ें : समुदायों में सम्मिलित हों या उपयोगी सलाह के लिए एक ही परिस्थितियों वाले परिवारों के संपर्क में रहें।

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिता: प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

## NOTES

## NOTES

### ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के उपचार के लिए समय

नीचे एक विशेषज्ञ पर्यवेक्षण के अंतर्गत ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/आत्मविमोह स्पेक्ट्रम विकार के ठीक से इलाज के लिए विशेष समय अवधि है, जबकि प्रत्येक रोगी के इलाज की समय अवधि अलग हो सकती है :

- रोग का इलाज नहीं किया जा सकता है लेकिन केवल बनाए रखा जाता है या प्रभाव कम होता है।

#### व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training) :

यह पुनर्वसन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। तकनीकी संस्थाओं में व्यावसायिक प्रशिक्षण श्रवण विकलांग बच्चे की आर्थिक आत्मनिर्भरता, उच्च शिक्षा एवं कार्य प्रशिक्षण स्तर के अनुसार प्रदान किया जाता है। विशिष्ट व्यवसाय का चुनाव विकलांगता की प्रकृति, अभिवृत्ति, रुचि, अभिभावकों की इच्छा, प्रशिक्षण सुविधायें, प्रशिक्षित शिक्षक तथा अन्य सम्बन्धित सेवाओं पर निर्भर करता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण के दौरान बच्चे की शिक्षा के लिए होने वाले खर्च की धनराशि पुनर्वसन केन्द्र सहन करता है।

#### स्थापन (Placement)

सलाहकार द्वारा बच्चे की क्षमता तथा अक्षमता के अनुरूप स्थापन की खोज की जाती है। स्थापन अधिकारी द्वारा बच्चे की क्षमता व अक्षमता के अनुसार शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इसलिए समय-समय पर परीक्षा भी ली जाती है। यह प्रयास तब तक चलता रहता है, जब तक विकलांग बच्चे की संतोष जनक प्रगति नहीं हो जाती है।

#### अनुवर्तन (Follow-Up)

यह श्रवण बाधित बच्चे के कार्यक्रम को पूर्ण करने की स्थिति को स्पष्ट करता है। ऐसी संभावना व्यक्त की जाती है कि समुदाय और परिवार आगे की सेवाओं को प्रदान करेगा। एक निश्चित समय के पश्चात् समुदाय या सलाहकारों द्वारा सेवाओं की निरन्तरता व स्वीकृति का अनुवर्तन किया जाता है। प्रत्येक व्यष्टि (Case) हेतु कम से कम एक माह के अन्तर पर अनुवर्तन

किया जाता है। ऐसा अनुवर्तन पुनर्वसन की प्रकृति, बच्चे की विशेष आवश्यकता, उसकी रुचि, व उसके लिए समुदाय, सलाहकर्ता की सेवाओं पर निर्भर करता है। सलाहकर्ता उसके क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त करता है। परामर्शकर्ता भविष्य में होने वाली उन्नति तथा योजना के बारे में समझाता है।

स्वलीनता आत्मकेन्द्रित  
बाधिता: प्रकृति,  
आवश्यकता तथा  
हस्तक्षेप

## NOTES

### सामान्य शिक्ष से पूर्व तैयारी हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण

शिक्षा संस्थाओं में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले बाधित बच्चों को कुछ तैयारी करनी चाहिए। यह तैयारी किसी विशिष्ट शिक्षा संस्था, विशिष्ट बच्चों के शिक्षा केन्द्र (ECEC), बालवाड़ी, आंगनवाड़ी तथा किसी प्राथमिक स्कूल की कक्षाओं के द्वारा से की जा सकती है। इसमें प्रवेश के लिए अध्यापक को बच्चे का सामान्य परीक्षण करना चाहिए, इसके पश्चात् बच्चों की वैयक्तिक परीक्षा, माता-पिता का साक्षात्कार आदि करना चाहिए। इस प्रकार के परीक्षणों द्वारा बाधित बच्चे के बारे में कितना काम कर सकता है और क्या-क्या काम कर सकता है। उसको कितना ज्ञान है। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे को संसाधन युक्त कक्षा-कक्ष में उनकी आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण/शिक्षण प्रदान किया जाता है। मानसिक एवं शारीरिक रूप से बाधित बच्चों को सामान्य समुदायों के साथ समन्वित करने और उन्हें साहस तथा आत्मविश्वास से जीवन का सामना करने के योग्य बनाने का लक्ष्य होना चाहिए।

### संसाधन युक्त अध्यापक की सहायता

प्रत्येक शिक्षा संस्थान के बाधित बच्चों की सहायता के लिए संसाधन युक्त अध्यापक को रखना चाहिए। यह पूर्णकालिक एवं अंशकालिक दोनों प्रवृत्तियों का हो सकता है। ये संसाधन युक्त अध्यापक संसाधनयुक्त सामग्री की सहायता से, संसाधन कक्षों के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकता वाले बाधित बच्चों को अपनी सेवायें प्रदान कर सकता है। ये बाधित बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं की शिक्षण प्रणाली में निपुण होते हैं। संसाधन युक्त शिक्षाविद सामान्य अध्यापकों को इस सम्बन्ध में सलाह भी दे सकते हैं।



## NOTES

### सहायक सामग्री तथा उपकरण

ऐसे विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे जो पुराने अनुदेशन सामग्री, परम्परानुसार साधन, शिक्षण सहायता एवं संसाधन उपकरणों का लाभ प्राप्त नहीं कर पाये हैं। उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधन कक्ष के उपकरण एवं सुविधाएं का लाभ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को मिलना चाहिए। ऐसे बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप जैसे गंभीर रूप से दृष्टि बाधित बच्चों के लिए ब्रेललिपि सामग्री, मोटे छापे की पठन सामग्री अथवा पठन सामग्री तथा श्रवण बाधितों हेतु श्रवणयन्त्र तथा अन्य सहायक सामग्री वाणी में सहायक यन्त्र, मानसिक मन्दित बच्चों के लिए खेल, खिलौने, अधि गम असमर्थियों के लिए उनकी बाधिता के अनुरूप सामग्री विशिष्ट शिक्षा सस्थाओं में उपलब्ध होने चाहिए।

### परीक्षापयोगी प्रश्न

#### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. स्वलीनता से आप क्या समझते हैं? इसके कारणों की व्याख्या कीजिए।
2. स्वलीनता की पहचान एवं विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. स्वलीनता के उपचार के उपाय समझाइये।
4. ऑरूटीस्म के प्रभावों का वर्णन कीजिए।
5. ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर से आप क्या समझते हैं? इसके लक्षणों की व्याख्या कीजिए।

#### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्वलीनता की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. मनोचिकित्सा से आप क्या समझते हैं?
3. व्यवसायिक प्रशिक्षण से आप क्या समझते हैं?
4. सहायक सामग्री एवं उपकरण समझाइये।



## MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY

Raja Bhoj Marg (Kolar Road), Bhopal - 462016,

Phone : 91-755-2424660, Fax : 91-755-2424640

Website : [www.bhojvirtualuniversity.com](http://www.bhojvirtualuniversity.com)